ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



15 अप्रैल, 2003

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 6

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज

नाम महिमा अंक



नाम लेने का मजा जिसकी जुबाँ पर आ गया ।
वो जीवन्मुक्त हो गया चारों पदार्थ पा गया ।।



हरिद्वार मेला



गांधीधाम यात्रा


शिवरात्रि महोत्सव, जयपुर


विदेश यात्रा

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश

संरक्षक : सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज

15 अप्रैल 2003

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 6

नाम महिमा अंक

भाव-वीथिक

सम्पादकीय.......

नाम-महिमा अप्रैल 2003

भगवान् की असीम कृपा है कि हम सभी का जन्म इस कलियुग में हुआ है, क्योंकि सहज साधन–भजन कलियुग में जितना उत्तम तथा प्रभावशाली है, उतना अन्य किसी युग में नहीं रहा है। अन्य युगों में हजारों वर्ष तप, योग तथा यज्ञ की साधना करने पर साध्य की प्राप्ति सम्भव हुई है। इसका प्रमाण वेद–शास्त्रों में पर्याप्त रूप में मिलता है, किन्तु इस कलियुग में सहज साधन के रूप में भगवन्नाम का जप, स्मरण और चिन्तन ही पर्याप्त है। नाम के प्रभाव से दसों दिशाओं में मङ्गल प्राप्त होता है।

श्री शुकदेव जी महाराज परीक्षित को नाम की महिमा बताते हुए कह रहे हैं।

सत्युग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में परिचर्या के द्वारा जो वस्तु प्राप्त होती है, उसकी प्राप्ति कलियुग में केवल हरिनाम-संकीर्तन से हो जाती है-

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः। द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात्।। (श्री मद्भागवत् **12/3/52**)

भगवन्नाम का जप प्रत्येक स्थिति में किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र को पवित्र करने वाला है। ऐसा कोई अमङ्गल नहीं है जो नाम–जप के प्रभाव से टल न सके।

श्री मद्भगवत् गीता में लीलाधारी भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं" **कि यज्ञों में मैं जप यज्ञ हूं अर्थात् शास्त्रों में जितने प्रकार के यज्ञों का विधान हुआ है। उन सबमें जप यज्ञ भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप ही है अर्थात् वह मेरा ही स्वरूप है"** अतएव नाम जप यज्ञ का आश्रय लेकर प्रत्येक मनुष्य को अपना कल्याण सम्पन्न करना चाहिये।

नाम जप में किसी प्रकार का विधि निषेध नहीं है। जैसे भगवान किसी काल और सीमा से बंधे नहीं है, वैसे ही नाम भी काल और सीमा से बंधा हुआ नहीं है। जिस प्रकार गुड़ का स्वभाव मिठास देना है, वह जिसके मुख में जायेगा, उसे मिठास ही देगा। जैसे गुड़ के लिये कोई अपना पराया नहीं है, उसी प्रकार नाम का स्वभाव ही सबकों शुद्ध करके भगवान् का प्रेम प्रदान करना है। भगवत् विद्वेषी भी नाम का उच्चारण करेगा तो नाम उसका भी उद्धार करेगा, क्योंकि स्वभाव नहीं बदलता है वह तो अपना प्रभाव रखेगा ही। जिस प्रकार अग्नि का स्वभाव जलाना है, उसके मार्ग में जो भी आयेगा उसे वह जलायेगी या तपन देगी। ऐसे ही भगवत् नाम भी स्वाभाविक रूप से सबका मङ्गल विधान ही करता है।

कल्याण मासिक पत्र में पढ़ी एक घटना स्मृति में आ रही है, लगभग **18**वीं शताब्दी में इन्दौर क्षेत्र में एक महात्मा जी सदैव नाम–जप में डूबे रहते थे; एक बार जगतगुरु शंकराचार्य का इन्दौर में आगमन हुआ। सारे महापुरूष सन्त जगतगुरू जी की अगवानी के लिये उनके दर्शनार्थ उपस्थिति हुए। कुछ विद्वेषी भक्तों ने जगत्गुरू जी को एक महापुरूष के न आने की बात बतायी, अब सनातन हिन्दू धर्म की प्रमुख आधार पीठ के मालिक कोई साधारण तो होंगे नहीं, पूज्य जगत्गुरु जी ने कहा, हम चलेंगे उन महात्मा जी के पास। वहाँ पहुंचे, महात्मा नाम–जप में निमग्न; किसी भक्त ने उनको बताया कि महाराज जी आये हैं तो महात्मा जी ने सादर दण्डवत् प्रणाम किया, जगत्गुरु महाराज जी ने उनकी पीठ पर हाथ फेरा, अहा..... यह क्या ? विद्युत सी कौंध उठी, महात्मा जी के मस्तक, हाथ इत्यादि शरीर का स्पर्श किया, शरीर के रोम–रोम से हरिनाम की प्रतिध्वनि प्रस्कुटित हो रही थी। यह देख कर स्वयं जगद्गुरू जी ऐसे महान प्रभुभक्त महात्मा के आगे श्रद्धानवत् हुए। ऐसी विलक्षण दिव्य है नाम जप की महिमा।

परम वन्दनीय मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की अपार कृपा व प्रेरणा से वर्तमान प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी द्वारा चैत्र मेला अवसर पर नाम–महिमा अंक प्रकाशित करने की आज्ञा की। प्रेम प्रकाश सन्देश से जुड़े हर प्रेमी के लिये यह परम सौभाग्य का संकेत है जो ऐसे महानतम अद्वितीय विषय के अन्तर्गत हम सबको श्रीहरि के परम मनोहरकारी निर्मल नाम का अमृत सहज ही सेवन करने को मिल रहा है।

युग–युग से जन्म–जन्म से जिस प्राणाराध्य की खोज में मेरी आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में, एक रूप से दूसरे रून में, एक नाम से दूसरे नाम में ढलती आयी है, उस परम प्रियतम नामामृत को पाकर अब छोड़ना क्या?

नैनन की कर कोठरी पुतलिन पलंग बिछाय। पलकनि की चिक डारके मोहन लेउ मनाय।।

आओ उसे सदा के लिये प्राणों में छिपा लें, आँखों की कोठरी में पुतली का पलंग बिछाकर और बाहर से पलकों की चिक डालकर उसके रस को पीते रहें। इस नाम अमृत के आगे अब करना ही क्या शेष रहा।

शंकरलाल सबनानी, श्रीचन्द पंजवानी

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में नाम-महिमा

ब्रह्म-दर्शनी

1. सत् सत् है हरि तेरे नामा, सत् सत् है हरि तेरे कामा।।
2. साधु संग हरि नाम ध्यावे, नीति सहित व्यवहार चलावे।
परहित करे होय निर्माना, टेऊँ सो गृहस्थी परवाना।।
3. श्रद्धा से गुरु प्रसन्न करले, ओम नाम ले ताहिं सुमरले।
ओम नाम से सुरति मिलाओ, परम मोक्ष का काज बनाओ।
ओम नाम की महिमा भारी, टेऊँ सन्त गुरु वेद उचारी।।
4. ओम नाम से प्रान उठाओ, ओम नाम से तिहँ ठहराओ।
ओम नाम से छोड़ो प्राना, ऐसे सुमरे दोष हटाना।।
ओम नाम जप श्वासों श्वासा, मेटो अन्तकाल जम त्रासा।
ओम नाम को मन में रटले, चिद् जड़ग्रन्थी को तुम कटले।
ओम नाम का चिन्तन कीजे, कहे टेऊँ अमृत रस पीजे।
5. पारब्रह्म के नाम अनन्ता, शास्त्र वेद पुरान भनन्ता।
सब नामनि की महिमा भारी, ऋषियों ने बहु भान्ति उचारी।
तां पर जो गुरु नाम सुनावे, गुरूमुख तांसे प्रीति लगावे।
नाम किसी की निन्द न करहैं, रहत दोष दश नाम सुमरहैं।
इस विधि जो गुरु नाम ध्यावे, कहे टेऊँ सो मुक्ती पावे।।
6. सत्नाम साक्षी नाम निराला, जाप जपे सो होत निहाला।
सत्नाम साक्षी नाम रसाला, का जप पीवे अमृत प्याला।
सत्नाम साक्षी नाम विशाला, जाप जपे को भागों वाला।।
7. प्रगट ते अति प्रगट है जोई, ढाप सकत नहिं ताकों कोई।
प्रगट भूमि है पानी पवना, प्रगट अग्नि पुनि रवि शशि गगना।
इन सब ते अति प्रगट योगा, आनन्द मूरति नाम निरोगा।
इन्द्रि[illegible] से निज वस्तु विभासे, सब साधन को नाम प्रकासै।
जो अस प्रसिद्ध नाम उच्चारे, कह टेऊँ तिहँ काल न मारे।।
8 रे मन राम नाम इक साचा, और जगत है सबहीं काचा।
रे मन राम नाम गुण गाओ, गाय गाय तुम राम समाओ।
रे मन राम नाम सुन महिमा जाके समसर और न उपमा।
रे मन राम नाम सत् रूपा, सर्व व्यापक सर्व स्वरूपा।
रे मन राम नाम उर धारे, टेऊँ हो भव सिन्धु से पारे।।
9. बहु लश्कर हो द्रव्य खजाना, राम भजन बिन नरक समाना।
तांते राम नाम को भजले, कह टेऊँ धन झूठा तजले।।
10. पाँच वर्ष आयु भी चंगी, राम नाम रंग में जो रंगी।।
11. राम राम जप राम प्यारा, राम नाम से हो निस्तारा।
राम नाम को चित्त में धारो, राम नाम को नाहिं विसारो।
राम नाम धन सचो मन में, राम नाम गूंजो अधरन में।
राम नाम की गाथा सुनले, राम नाम की महिमा गुनले।
राम नाम की पढ़ले पोथी, कह टेऊँ अन बातें थोथी।।
12. राम नाम जप प्रेम से, पाओ सुख का धाम।
कह टेऊँ बिन राम के, जीवन है बेकाम।।
13. निर्मल है नित हरि का नामा, कल्प वृक्ष के सम सुख धामा।
14. लेवो रामनाम रस लेवो, झूठे विष रस को तज देवो।
राचो राम नाम रंग राचो, झूठे जगत रंगो से बाचो।।
15. राम नाम हो अन्त सहाई, कह टेऊँ जप राम सदाई।।
16. राम नाम इक संगी साचा, कह टेऊँ यह जग है काचा।।
17. ताहिं न सुमरा जिहँ तन दीना, व्यर्थ तेरा खाना पीना।
ताहिं न सुमरा जिहँ सुख दीया, जन्म पाप के क्या तुम कीया।।
ताहिं न सुमरा जिहँ दी माया, धिक् धिक् मानुष जन्म गँवाया।
ताहिं न सुमरा जिहँ मति दीनी, मूर्ख तुमने लाज न कीनी।
आलस तज अब भज हरि नामा, कह टेऊँ पाओ सुख धामा।।
18. गर्भ कुण्ड में जो रखवारा, लाज न आवत ताहिं विसारा।
अन्त काल जो होय सहाई, तांसे मूण्ढ न प्रीति लगाई।
बिन मांगे जो देत अहारा, निमष न तांका नाम उचारा।
प्रान देहि जो तोहि चलावत, तिस हरि का तुम गुन नहिं गावत।
अबलौं मन माया में भ्रमत, कह टेऊँ हरि नाम न सुमरत।।
19. हरि का नाम जपे जो हरिजन, कह टेऊँ है सोई धन धन।।
20. हरि का नाम जपे तुम निशदिन, कह टेऊँ पा हरि का दर्शन।।
21. मन मेरे हरि नाम उचारो, अपना सुन्दर जन्म सुधारो।।
22. मन मेरे सुमरो हरि नामा, पूरन होवे सकले कामा।।
23. रे मन चाहो सुख जो, हरि हृदय में धार।
कह टेऊँ हरि नाम जप, भव से उतरो पार।।
24. दुर्लभ मानुष तन मिला, हरि सुमरो मन मांहि।
कह टेऊँ निज रूप लख, सफल करो तुम तांहि।।
25. निशवासर हरि जप मन मेरा, भजन करन का अवसर तेरा।
इस अवसर को सुर नर चाहत, मूण्ढ विषय में काहिं गँवावत।।
26. गुरु मन्त्र में शक्ति अपारी, जांसे वश होवत बनवारी।।
27. तिहँ गुरु के दर का मैं गोला। जिसने दीना नाम अमोला।।
28. संत बैठ जिहँ ध्यान लगावे। तिस थल की रज ले सुर लावैं।।
29. नैन सफल हरि दरस निहारे। स्वांस सफल गुरु मन्तर धारे।।

।। ॐ सत्नाम साक्षी।।

नाम-महिमा अप्रैल 2003

अद्भुत शक्ति का भण्डार है नाम



(पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज)

नामु प्रताप जानु शिव नीको। कालकूट फल दीन्ह अमी को।।

नाम की महिमा अपार है। अद्भुत शक्ति का भण्डार है नाम। सभी शास्त्र, पुराण, ऋषि-मुनि, सन्त, महापुरूष नाम की महिमा गाते नहीं अघाते। महिमा गाते गाते गोस्वामी जी ने लिखा-

राम न सकहिं नाम गुण गाई

स्वयं ईश्वर भी नाम की महिमा नहीं गा सकते। मन चंचल है। अपार शक्तियाँ लुप्त रूप से मन में अवस्थित हैं, लेकिन मन की चंचलता उन शक्तियों को प्रकट नहीं होने देती। बार-बार महापुरुष कहते हैं कि यह मानव शरीर दुर्लभ है, इस दुर्लभ शरीर के द्वारा दुर्लभ पद की प्राप्ति करनी है। सांसारिक भोग ऐश्वर्य को प्राप्त करना ही मानव जीवन का लक्ष्य नहीं, लेकिन् इस देह के द्वारा हृदय में बैठे अन्तर्यामी ईश्वर तक पहुँचना ही मानव मात्र का कर्त्तव्य है।

नर से नारायण बने कै बन जाने कोय

लेकिन नर से नारायण बनने का माध्यम क्या है- मार्ग क्या है- साधारण मनुष्य किस तरह से उस पदवी तक पहुँच सकता है किस प्रकार अपने अन्तः करण को निर्मल बनाकर उस ईश्वर के दर्शन पा सकता है। अन्तःकरण पर जन्म जन्मान्तरों के जो संस्कार हैं कैसे उन संस्कारों से मुक्ति पा सकते हैं- हृदय के अन्दर जो उथल--पुथल मची रहती है कैसे वो शान्त हो।

नाम लेत भवसिन्धु सुखाहीं। करहुं विचार सुजन मन माहीं।।

उसके लिए भी एक ही साधन बताया गया है नाम--स्मरण। नाम स्मरण से संसार सागर सूख जाता है। अर्थात् मन में व्याप्त मोह माया का नाश होता है। नाम स्मरण से विष अमृत में बदल जाता है। अद्भुत शक्ति है नाम में। लेकिन नाम में मन लगना बहुत ही कठिन है। जब तक संसार के मिथ्यात्व का मन को निश्चय नहीं हो जाता-तब तक संसार की बातें मन पर भारी रहती हैं। नाम स्मरण का पलड़ा हल्का रहता है और संसार को झूठा जानने पर ही मन संसार के फुरने संकल्पों से विरत होकर नाम-स्मरण में लगता है।

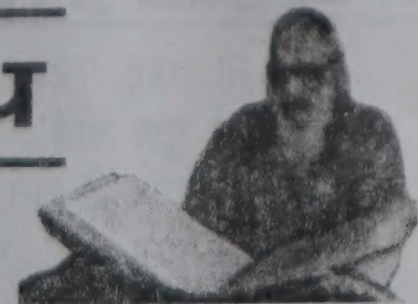
इसलिए महापुरुषों ने संसार के भोग पदार्थ वैभवों से नाम को ऊँचा रखा-

लोकु सजो भलि करे खुवारी, राम जो नालो समुझ्रमि भारी।
नाम सां नीहं निभायां मां, ब़ियो संसो शोकु न भायां मां।।

चैत्र मेले के पावन पर्व पर आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा बताए हुए कल्याणकारी उपदेशों को हृदयंगम करके सत्मार्ग पर चलकर हम भी अपने जीवन का कल्याण करें।

भगत प्रकाश
अमरापुर स्थान, एम.आई. रोड, जयपुर
दिनांक 07--04--2003

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ



राग भैरवी भजन ।।62।। पृष्ठ क्र. 100

है ऊँची नाम बड़ाई, मुख से कही न जाई।
1. बाल्मीक मग पथिकों को था लूट-लूट कर खाता।
तिंह भी उल्टा राम राम रट तीन काल गम पाई।।
2. देव चले जबहीं सब मिलकर, विश्व को फेरा देने।
राम प्रदक्षिणा से रिषी नारद, गणपति पूज कराई।।
3. अर्ध राम के लेने से गज के बंधन छूटे।
अन्त अजामिल राम-नाम जप, जम की रार मिटाई।।
4. कहे टेऊँ हरि नाम प्रतापे नीचे ऊँच भये केते।
नामदेव रविदास कबीरा, सदना सैना नाई।।

नाम-महिमा
अप्रैल 2003

श्री गुरू महाराज जी नाम की महिमा नाम का जो मूल अस्तित्व है नाम अध्यात्मिक मार्ग का शिखर है। उस मन मोहनी नाम रूपी रहस्य की पर्तें खोल रहे हैं। एक–एक पर्त में से जो रस बहेगा। जो सुधा झरेगी वह हमारे खण्ड–खण्ड मन को बहा ले जायेगी और एक नया मन अवतीर्ण होगा। उस मन का स्वरूप निर्मल कोमल अति कोमल फूलों की पंखुड़ियों से भी कोमल, उज्जवल, कैसा उज्जवल दूध से भी ज्यादा उज्जवल, मोहन की मोहनी में फँसा हुआ, प्यारे की प्रीत में लुटा हुआ उस गोविन्द के चरणारविन्द में अटका हुआ होगा।

लेकिन ऐसा होगा कब ? जब हम नाम की महिमा को महत्त्व को, नाम तत्त्व को अपनी नस–नस में घोल देंगे। ओत प्रोत हो जायेंगे। जैस प्रेम साधक की एक भाव दशा है। उस भाव दशा को शब्दों से छू भी नहीं सकते। कितने ही महिमावान शब्द हो निश्चित हो जाते हैं। क्योंकि प्रेम की अभिव्यक्ति मौन और ओज पूर्ण होती है।

जैसे नयी नवेली दुल्हन अति शर्मीली, पिया अपने ही हैं। सात जन्मों का बन्धन है पर रोशनी भी अटकाव लगती है। घूँघट तो बाद की बात है नैन तक नहीं उठा पाती। प्रेम बहुत गहन आन्तिरक घटना है। उसी तरह नाम की महिमा को शब्द छू तक नहीं पाते। हर चीज को तुलनात्मक दृष्टि से पूर्ण किया जाता है उसको उपमा भी मिल जाती है। जैसे कबीर साहब के सामने एक उलझन पूर्ण स्थित आ गई। सामने प्यारे गुरुदेव भी है और साक्षात भगवान श्रीहरि भी है।

अब पहले किसके चरणों में झुके। किसकी चरण वन्दना करें। तो उन्होंने झट से निवारण किया।

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरू आपकी गोविन्द दियो बताय।।

प्यारे गुरुदेव को गोविन्द से बड़ी उपमा दे दी। माता सहजोबाई ने तो और भी कमाल किया। और आगे की उपमा दे दी।

राम तजहूँ पर गुरु न बिसारूँ।
गुरु आगे हरि को न निहारूँ।।

प्रेम की सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त माता कहती है मैं राम को त्याग दूँगी। चुनना तो है ही नहीं। मेरे तो सब कुछ गुरु ही है। गुरु सामने दर्शनीय विराजमान हो तो? राम को निहारूँगी ही नहीं। बिना दो राय गुरू को गोविन्द से बड़ी उपमा दे दी।

अब प्रश्न ये उठता है। गोविन्द से बड़े है ऊँचे हैं पर कितने ऊँचे। कोई जवाब नहीं है। न आज तक कोई दे पाया।

इसी तरह **''राम ते अधिक राम बड़ाई, राम न सकहिं नाम गुण गाई''** नाम की महिमा राम से बड़ी है। यह खुद भगवान श्री राम की घोषणा है। मैं स्वयं श्री राम, नाम की महिमा पूरी नहीं बता सकता हूँ। श्री गुरु महाराज कहते है। कि **'' है ऊँची नाम बड़ाई, मुख से कहीं न जाई''** ऊँची है बहुत ऊँची है। सबसे ऊँची है राम भी इसका जवाब आज तक कोई नहीं दे पाया। दो अक्षर का मंत्र हो या दो लाइनों का मंत्र हो। और इनमें इतना जादू इतना चमत्कार, कि जो चाहो मिले चमत्कार की हद तो देखो पूरा नहीं आधा नाम लो तो भी वो प्यारा आ जाये। अपने नाम की लाज रखने।

गोली पहले चलत है पीछे होत आवाज।
हाँ सुनती थी रूक्मणी थी सुने गजराज।।

गजराज ने 18 दिन मगरमच्छ से पानी के अन्दर युद्ध किया। कभी मगरमच्छ पानी की धारा में खींच के ले जाये, तो कभी गजराज उसे खींच के बाहर ले आये। पर कोई निर्णय नहीं हुआ। हाथी के सभी कुटुम्बी हारकर उसका साथ छोड़कर चले गये। गजराज की हिम्मत जवाब देने लगी। उसकी आँखों में आँसू आ गये। उसने अपनी सूँड़ में कमल का फूल उठाया। और जोर से चिंघाड़ा– रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। म नहीं कह पाया रा शब्द सुनते ही भगवान दौड़े, रूक्मणी ने पूछा ! क्या हुआ तो उन्होंने हा इतनी देर में ही गजराज के सामने थे। थी शब्द गजराज ने सुना। संसार की सबसे तेज चलने वाली बन्दूक भी पहले चलाओ आवाज बाद में निकलती है पर नाम सुमरन पूरण शरणागत भक्त का नाम का भाव प्रगाढ़ होते ही परमात्मा तक पहुँच जाता है। तो आधे नाम में ही आ जाते हैं।

भाव का भूखा हूँ मैं, भाव ही इक सार है
भाव से मुझको भजो तो, भव से बेड़ा पार है,

इस आधे मंत्र में नाम का इतना प्रभाव है तो पूरे नाम की तो बात ही क्या है। श्री गुरु महाराज जी कहते हैं सबने भाव से नाम का प्रभाव जाना और उस प्रभु को पा लिया। बाल्मीक ने उल्टा राम जपकर पा लिया। श्री गणेश जी ने भगवान राम नाम की प्रदक्षिणा देकर ही जीत पा ली। नामदेव, सदना, नाई कबीर सभी ने नाम से ही परमात्मा को पाया है। संत कहते हैं कि–

हरि भजे सो भजिया खाये। नाम जपे तोर नाम हो जाये।
नाम नाम बिन ना रहे सुनो सयाने लोग।
मीरा को ने सुत जन्यो, शिष्य मुड़यो नहीं कोय।

हनुमान नाम के प्रभाव को खूब अच्छी तरह जानते थे। हमने सन्तों से सुनी बड़ी प्यारी कथा है।

एक बार एक राजा से भगवान श्री राम के प्रति कोई घोर अपराध हो गया। भगवान श्रीराम को जब पता चला तो उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली, सूर्योदय से पहले इस राजा का सर हमारे चरणों में होगा। राजा को प्रतिज्ञा का पता चला तो थर–थर काँपने लगा। और जाके माँ अन्जना देवी के आश्रम में घुस गया, पर माँ ने उन्हें देख लिया तो राजा ने अन्जना देवी के श्री चरणों में अपना सर रखा और **''शरण आये को छोड़े नहीं''** वाली उपमा देखकर खुद को मरने से बचाने का संकल्प माँग लिया। माँ ने पूरी बात जाने बिना वचन दे दिया। कहा–राजन् चिन्ता न करो तुम पवन पुत्र हनुमान की माँ की शरण में हो निर्भय हो जाओ। मेरा पुत्र तुम्हारी रक्षा करेगा। वो मेरी आज्ञा कभी नहीं टालता और आज्ञा दी। संसार की कोई ताकत इसे मृत्युदण्ड न दे पाये। मैंने इसे निभय होने का वचन दिया है। जाओ–इसकी विपत्ति सुनो और यथा योग्य पूर्ण सहयोग से इसे विपत्ति मुक्त भय मुक्त करो। यह हमारी शरण में है। शरणागत की रक्षा करना हमारा परम धर्म है। हनुमान जी राजा को ले आये और सारी बात पूछी, सारी परिस्थिति जानकर सोच में पड़ गये कि भगवान श्रीराम की प्रतिज्ञा काटने का सामर्थ्य किसमें होगा। एक तरफ माँ की आज्ञा दूसरी तरफ प्राणों से प्यारे इष्ट मेरे प्राण धन राम क्या करूँ। अपने ही इष्ट से युद्ध करूँ। जीतने का तो सवाल ही नहीं, कहाँ जाऊँ कैसे सुलझाऊँ इस उलझन को फिर उन्होंने वही किया जो हनुमान ही कर सकते थे। नाम का आधार लिया।

एक गोला बनाया पृथ्वी पर मंत्र अभिमंत्रित गोले में राजा सहित विराजमान हो गये। और चित्त को डुबो दिया। राम नाम में चमत्कार हो गया। अनहोनी घटना घट गई। भगवान राम बाण चलाते और बाण राम नाम के घेरे को छू कर लौट आते तोड़ नहीं पाते। जैसे राम नाम की महिमा को प्रणाम कर लौट रहे हों। सूर्य नारायण भी इस युद्ध को देख रहे थे। उन्होंने दृढ़ निश्चय किया भगवान की प्रतिज्ञा पूरी होने तक हम उदय न होंगे। युद्ध चलता रहा कोई निर्णय नहीं निकले। देवता भी घबराने

लगे। इस अनोखे युद्ध का तो अंत ही नहीं दिखाई देता। तब उन्होंने युक्ति से काम लिया। सभी ने मिलकर राजा की भर्त्सना की और रामजी के पास ले गये और कहा– राम जी आपकी यही प्रतिज्ञा है न सूर्योदय से पहले इसका (राजा) सर आपके श्री चरणों में हो तो देखो यह आपके श्री चरणों में ही पड़ा है। आपकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। कृपया युद्ध बन्द करवायें। राम जी देवताओं की चतुराई भरी युक्ति पर प्रसन्न हो गये। और हनुमान जी को गले लगा लिया और राजा को माफ कर दिया।

नाम इतना महिमावान है। सारे दैवीय गुण आप से आप जीवन में उतरने लगते हैं। एक उन्माद भीगापन मन पर छाया रहता है।

एक बार हमने संतों से पूछा– कि हमने हर मन्दिर में देखा है भगवान कृष्ण कहीं भी बैठी मुद्रा में विराजमान नहीं हैं। खड़ी हुयी मुद्रा में ही विराजमान हैं। बाकी जितने देवता भगवान हैं कहीं बैठे हैं कहीं खड़े हैं। तो भगवान श्रीकृष्ण बैठते क्यों नहीं। सदैव खड़े ही क्यों रहते हैं। थक नहीं जाते होंगे। संतों का करुणावान उत्तर सुनकर मन गद्गद् हो गया। उन्होंने कहा–भक्त भगवान को बुलाये तो उठूँ फिर दौडूँ तो भी देर हो जायेगी और भक्त का काम बिगड़ जाये, सो सदैव खड़े में, विराजमान हैं। बस जैसे ही प्यारा कोई बुलाये और मैं भागूँ।

(आहा – वाह रे टेड़े तेरी बातें भी टेड़ीं है। अद्भुत ढंग प्यार निभाने का।)

ऐसे श्री हरि का नाम स्मरण हम नहीं करते तो गुरु नानक जी कहते हैं।

जो मुख नाम न उच्चरे-थिन नावें रस खाय।
कह नानक ऐवे जाड़ियें-तित मुख थुक्कां पाय।।

जो मनुष्य नाम नहीं जपता और अनेक प्रकार के भोजन का रस लेने में मस्त है। श्री गुरुनानक जी कहते हैं कि ऐसा समझना चाहिये उसके साथ ऐसा होगा। उसके इसी मुख पर थूकें पड़ेंगी। गुरु नानक जैसी नम्रता की मूर्ति भी ऐसी लानत भेज रहे हैं तो सोचो नाम नहीं जपेंगे तो हमारा क्या होगा और दूसरी तरफ गोपियाँ कहती हैं। ये जो कृष्ण नाम में कृ के नीचे घुन्डी है वह मछली के काँटे का काम करती हैं। जैसे उस काँटे में आटा फसांकर पानी में डालो तो मछली फंस जाती है। ऐसे ही जो कृष्ण नाम का जाप करता है तो कृ में लगा यह काँटा अपने नाम के रस में हमारे मन को ऐसा फंसा लेता है, पकड़ लेता है कि शरीर की सुध बुध ही भूल जाती है। ऐसा टोना है नाम में ईश्वरीय जादू भरा है नाम में जिन्हें चढ़ जाती है। जिसे इसकी आदत लग जाती है फिर क्या होता है।

तेरे नाम ने इस कदर दीवाना बनाया है हमें, जो आयेगा रूबरू तो जाने हाल क्या होगा। ऐसी मस्ती चढ़ती है। दुनिया उन्हें पागल कहती है और वो दीवाने दुनिया को पागल कहते हैं।

असी मस्त घुमूँ था चरया चरया।
हिन दीन दुनिया खऊं खरया खरया।।
चतुराई चूल्हे पड़ी, चुल्ह पड़यो आचार।
तुलसी हरि के भजन बिन चारो वर्ण चमार।।

संसार की चतुराई से क्या हासिल होगा। तुलसी दास जी कहते हैं ऐसी चतुराई को चूल्हे में झोंक दो और भोले भोले सरल हृदय से हरि का भजन करो जो भजन नहीं करते वो किसी भी वर्णाश्रम में हो। जो सिर्फ देह को पोसते हैं। अपने धाम को पालने में लगे हैं [illegible] सब चमार हैं।

इतना बड़ा धिक्कार दिया संतों ने हम [illegible] नाम की महिमा समझ में आये। काश हमारी समझ [illegible] आये। करुणावान गुरुदेवों का प्रयास सफल हो जाये। हमारी मन रूपी मुरली में नाम की सरगम झँकृत हो जाये।

बस नाम नाम नाम की लगन रहे।
बस नाम नाम नाम की अगन रहे।।
बस नाम नाम नाम मन मगन रहे।
बस नाम नाम नाम से मिलन रहे।।
जब कहे कोई कुछ बोल, तो होठों पे सिर्फ तेरा नाम हो।
जब कहे कोई आँख खोल, तो पलकों में सिर्फ तेरा धाम हो।।
मेरे अंग अंग को व्यसन हो तेरा, फुर्सत न मिले हृदय को।
मेरी बातों में यादों में अपनों में सपनों में सिर्फ सिर्फ तू ही श्याम हो ।।

यह लेख लेख न रह जाये। मेरे मन परिवर्तन का कारण हो जाये। मन मोहन से मिलने को अतुर हो जाये। यह लेख तेरी कृपा बरसने का हेतु बने। मेरी सेवा तुझे स्वीकार हो जाये तो यह मन नाम में लीन लवलीन हो जाये।

नाम-महिमा अप्रैल 2003

महौषधि है नाम

राम नाम के सुमरने, कहो केते गुण होय।
राजा माने जग निवें बुरा ना माने कोये।।

नाम जप से नाम का सुमरन करने से क्या–क्या लाभ और गुण होते हैं। यह वेदों ग्रन्थों शास्त्रों और सन्तों ने भिन्न भिन्न कर के समझाया है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपने श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में नाम जप से किस–किस को लाभ हुआ है। इस भजन के द्वारा बतला रहे हैं।

राग पीला भजन : 30

राम जपो हरवार रे मन राम जपो ।। टेक।।

1. भक्त प्रहलाद ने राम संभारा।
नरसिंह रूप हरी तव धारा।।
दिया दैत्य को मार....................
2. राम नाम को उल्टा गाये।
वालमीक जा ब्रह्म समाये।।
जानत सब संसार.............
3. अजामेल पापी हत्यारा।
अन्त समय हरिनाम उचारा।।
यमदूत गये हार.................
4. शुक गनिका को राम पढ़ाया।
तांको सुमर सुमर सुख पाया।।
गयी देवों के द्वार.............
5. गज ने आधा राम उचारा।
हरि ने आय ग्राह को मारा।।
होई जै जैकार............
6. कहे टेऊँ जिन राम सुमरिया।
भवसिंधु से वे पार उतरिया।।
कहते सन्त पुकार..............

एक चोर राजा का धन चुरा कर के ले जा रहा था जब उसने देखा कि मेरी चोरी का पता राजा को लग गया है वो मुझे पकड़ने के लिये मेरे पीछे राजा वजीर सिपाई सब आ रहे हैं। अब मैं पकड़ा जाऊँगा तो रास्ते में उसे एक महात्मा की कुटिया दिखाई दी महात्मा नाम जप में मग्न थे चोर ने चुपके से महात्मा की कुटिया में जा करके अपने कपड़े उतार दिये और महात्मा के कपड़े पहन कर वो भी नाम जप में बैठ गया। उधर राजा वजी[र] सिपाई। सब चलते–चलते जब महात्मा की कुटिया त[क] पहुँचे तो सब ने उन दोनों महात्माओं को प्रणाम कि[या] उनसे आशीर्वाद लिया पर किसी ने भी जो चोर महात्[मा] बन के बैठा हुआ था उसे चोर नहीं कहा– ये है नाम क[ी] महिमा, नाम एक औषधि (दवा) है जो मन के सारे रोग[ों] को जड़ से मिटा देती है। श्री गुरु ग्रन्थ सहिब में, गुर[ु] नानक देव जी की बाणी है।

नानक दुखिया सब संसार। सुखिया जाके नाम आधार।

सारा संसार दुखी है कोई तन दुखी कोई म[न] दुखी कोई धन दुखी तन का दुख तो डॉक्टर औ[र] अस्पतालों के द्वारा दूर किया जा सकता है। लेकिन म[न] का दुख, मन की पीड़ा, मन की चिन्ता, भ्रम का सन्[ताप] जितनी भी मानसिक पीड़ा या रोग है वो केवल नाम ज[प] से ही दूर होती है।

गुरु नानक देव जी की बाणी है –

स्वांस स्वासं सिमरो गोविन्द।। मन अन्तर की उतरे चिन्द।

सुखी वो है जिसको नाम का आधार है ओट [है] आसरा है।

कलयुग केवल नाम आधारा। सिमर सिमर नर उतरहिं पारा।।

(राग प्रभाती)

रे मन हरि का सुमरण करले, श्रद्धा मन में धारे ।। टेक।।

1. हरि सुमरन बिन औरे साधन जन्म मरन नहिं टारे
हरि सुमरन ही तत्क्षण तुमको भव सागर से तारे।।
2. हरि सुमरन की महिमा भारी, वेद पुरान उचारे
हरि सुमरन निशवासर कर जे सुख चाहों प्यारे।
3. हरि सुमरन से हेत करो तुम, फुरना सर्व निवारे
हरि सुमरन का अमृत पीकर, पावो मोक्ष द्वारे।
4. हरि सुमरन की वेला है यह कहते सन्त पुकारे
कहे टेऊँ हरि सुमरो तांते मानुष देह मंझारे।

– सन्त जयदेव ज[ी]
प्रेम प्रकाश धाम, दिल्[ली]

नाम महिमा

वेदों, शास्त्रों, ग्रंथों में इस कलिकाल के समय में नाम का महातम्य बताया गया है, जिस नाम के सिमरन से इस मानव का कल्याण सरलता से हो सकता है अब नाम कैसा व कैसे स्मरण किया जाय वैसे तो ईश्वर के नाम अनन्त है परन्तु जो गुरूदेव के द्वारा प्राप्त हुआ है। आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज ने अपनी अमृत वाणी ब्रह्मदर्शनी के अन्र्तगत लिखा है।

जग में मन्तर बहुत हैं। गुरु मन्तर सम नाहिं।
कह टेऊँ गुरूदेव से लेकर स्मरो तांहि।।

एक ही नाम जो गुरूदेव से प्राप्त है प्रातःकाल व सांयकाल दोनों समय में तो नाम जपना ही चाहिये। इसके अलावा बाकी जब भी समय मिले जपना चाहिये। प्रातःकाल में स्नान करके परन्तु अन्य समय हाथ पैर मुंह को साफ करके आसन पर बैठकर गुरुदेव ने जो विधि बताई है। (ध्यान का स्वरूप बताया है) करना चाहिये। आसन (पलथी मारकर) एकाग्रता व मन को निश्चय करते हुए जपना चाहिये। नाम जपने में स्थान, शरीर, आसन की पवित्रता व समय का मन के ऊपर प्रभाव पड़ता है।

नाम स्मरण के साथ अर्थ का ध्यान भी होना चाहिये। नाम अर्थ के विचार में जब मन खो जाता है वहाँ सिर्फ एक ही का भास होने लगता है। एकान्त का भी भाव यही है कि जो आत्मा परमात्मा है सो ही मेरा स्वरूप है। ऐसी तदाकार वृति द्वारा जो नाम जप या स्मरण करें उसे ही नाम का सच्चा आनन्द प्राप्त होता है।

लाली देखन मैं चली में भी हो गई लाल चले तो उसको खोजने हेतु परन्तु जब मन ध्यानास्थित हुआ तो देखा कि वह ही मेरे अन्दर स्थिति है वह मैं ही हूँ (अर्थात् परमात्मा का रूप हूँ ऐसा अनुभव नाम स्मरण में वृत्ति लग जाते हो जाती है।)

जब अन्तर में उसकी बूझ पड़ी तब वह बाहर भी अनुभव में दिखने में आता है शरीर में इन्द्रियों से सम्बन्धित मन व उसके आश्रित बुद्धि के अन्तर्गत भी जिसका प्रकाश शक्ति का जिसके जीवन में अनुभव हो गया वास्तव में उसने उस जानने योग्य बात को जान लिया। फिर देह की स्थिति से ऊपर उठा हुआ वह आत्म तत्व तक पहुँच जाता है। ऐसी स्थिति होना बहुत कठिन है।

यह वैराग्य व अभ्यास के द्वारा होना सम्भव है उसके पीछे सन्तों व आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी की अमृत वाणी में बताया गया है–

कबीर मन तो एक है भावें जहाँ लगाय।
भावे हरि की भक्ति कर भावें विषय कमाय।।
मन के हारे हारिये मन के जीते जीत।
पारब्रह्म को पाइये मन ही की प्रतीत।।
निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आत्मराम।
टेऊँ मन निश्चल करे पाओ सुख का धाम।।
विषय भोग खां हटी जदहिं चितु एकाग्र थीदों।
कहें टेऊँ स्मरण मां तदहिं आनन्द तो ईदों।।

नाम के आनन्द में जिस मानव ने अपने आप को खो दिया वह गुर ज्ञान में स्थिति हो नाम जप स्मरण से पार हो गया है। पूर्व इतिहास की और यदि हम नजर डालेंगे तो ध्रुव प्रहलाद मीरा देवी धन्ना सधना नामदेव कबीर रैदास पीपा भक्तों ने ऐसी ही भक्ति स्मरण जप द्वारा उस परमात्मा को जान लिया। गुरु नानकदेव आदि सन्तों का इतिहास पढ़ेंगे या हमारे आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज का इतिहास व जीवन को वाणी द्वारा जानेंगे तो मालूम होगा कि जीवन के प्रति क्षण बीतते समय पर नजर रखते हुए गुरु के बताये मार्ग पर अपने मन को दृष्टिगत रखते हुए साधना (अभ्यास) करते हुए अपनी मंजिल तक पहुँचे हैं।

नाम स्मरण के साथ–साथ संग, विचार, स्वभाव, आचरण व कर्म की ओर साधना में अपना विशेष ध्यान रखें जैसे बीज को अनुकूल भूमि, धूप, जल, हवा (वायु) की अनुकूलता होती है तब ही वह बीज से वृक्ष का रूप बन जाता है। परन्तु ऐसे आकार होते–2 बीच में जो अंकुर उगने लगते हैं। वह उसे पशु पक्षी (अर्थात विकार व विषय रूपी) न खा लेवें या मन के अन्दर अहंभाव जाग्रत न हो जावे ऐसा निरन्तर ध्यान रखते नाम स्मरण भी करना चाहिये।

सन्त हरीओम प्रकाश जी
प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर

नाम महिमा

सन्तों, महापुरुषों, वेदों, शास्त्रों ने सबसे अधिक महत्व नाम जप को दिया है। नाम जप से अनेकों लाभ बताये गये हैं। परन्तु उस नाम का लाभ गुरूवर से लेकर उसका जाप करने में है ना की नाम लिया परन्तु उसका स्मरण नहीं किया। सर्वप्रथम व्यक्ति को सोचना चाहिये कि उसे नाम की आवश्यकता क्यों है। क्या वास्तव में उसे उस ''आध्यात्मिक सुख'' की तलाश है। पहले हमें नाम का महत्व पूरा समझना चाहिए। ना की नासमझी या औरों के कहे ''नाम दीक्षा'' लेनी चाहिए। सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज बताते थे कि नाम एक सर्प है और सर्प को रखने की कला जिसे आती है वह रख सकता है परन्तु जिसे उस कला का ज्ञान नहीं उसको खतरा है। इसलिए सावधान होकर देखे क्या वास्तव में हमें उस ''परम–सुख'' की तलाश है। अगर नहीं तो पहले जिज्ञासा उत्पन्न होना परम् आवश्यक है। अब कहा जाता है ''नाम दीक्षा'' पूर्ण गुरू से लेनी चाहिए। वो पूर्ण गुरू कौन है। हमें तो पता नहीं चल सकता न, अपने मन में अगर पूरी जिज्ञासा है तो परमात्मा उस पूर्ण गुरू से अवश्य मिलाता है। और जीवन में जो हमने गुरू किया, वहाँ से विश्वास का डगमगाना नहीं चाहिए। हमारे लिए जो हमारा गुरू है, वह हमारे लिए परमात्मा है, गुरू का महत्व ही इसलिए है कि उसमें हम परमात्मा को देखने का अभ्यास कर सकें। और गुरू के मन से बढ़कर और जगत में कोई दूसरा नाम नहीं जहाँ पर गुरू या उनके नाम को लेकर मन में संदेह उत्पन्न होता है वहाँ नाम से पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। और जिसका अटल विश्वास उस नाम के साथ है, उसे चाहे परमात्मा का दर्शन हो या नहीं परन्तु एक दिन वह स्वयं परमात्मा का स्वरूप हो जाता है। हमारे ऋषि–मुनियों ने खोज कर बताया कि और सब कर्मों से श्रेष्ठ यह है कि प्रेम भाव से गुरू नाम का जप करना चाहिए। अब नाम जप किस प्रकार परमात्मा तक पहुँचाता है। सर्वप्रथम जब हम नाम जपते हैं तो प्रतीत होता है कि मन चंचल है नाम में मन लगता नहीं। परन्तु अभ्यास से मन के विचारों को रोकने में सफलता प्राप्त होती है, कैसे पहिले नामजप जिव्हा के द्वारा होता है बाद में जिव्हा हमारी बन्द है और मन से जाप किया जाता है। और एक दिन ऐसा आता है कि स्वतः ही नाम जप हृदय में होने लगता है और उस विचार शून्य हृदय में स्वयं परमात्मा प्रकट होता है।

सन्त हरीश प्रेम प्रकाशी
अमरापुर स्थान, जयपुर

समीक्षा

सत्य की खोज

(सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के प्रवचनों की पुस्तक)

महाराज श्री के प्रवचनों को सकंलन कर ''सत्य की खोज'' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। प्रवचनों को बड़े मार्मिक रूप से दर्शाया गया है। आप सभी ध्यान पूर्वक पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

9 प्रवचन इस पुस्तक में संकलित किये गये। इस पुस्तक को बनवाने में ''प्रीतम प्रेम प्रकाशी'' का अथक प्रयास रहा है। सभी के लिये **''सत्य की खोज''** पुस्तक संग्रहणीय है। पुस्तक का मूल्य मात्र 15 रु. रखा गया है।

गुरु वन्दना (स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन पुस्तक)

पूर्व में प्रकाशित सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की महिमा सम्बन्धित 108 भजनों को संकलित कर ''गुरु वन्दना'' नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ था।

भारी मांग के कारण शीघ्र पुस्तक समाप्ति के पश्चात् अब चैत्र मेले में पुनः ''गुरु वन्दना'' नामक पुस्तक को नवीन संस्करण छपकर तैयार है। पुस्तक में प्रार्थना चालीसा 108 महिमा भजन आरतीयाँ आदि सम्मिलित की गई हैं। पुस्तक का मूल्य 15 रु. रखा गया है।

प्राप्ति स्थल : श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

(प्रश्नोत्तर)

नाम-जप और संकीर्तन

नाम-महिमा अप्रैल 2003

प्र0 - सबके लिये सुगम और सर्वोत्तम मार्ग क्या है ?

उ0 - नाम–जप करना सबके लिये सुगम और श्रेष्ठ है।

प्र0 - नाम -जप में रुचि कैसे हो ?

उ0 - रुचि होना ही कठिन है। रुचि हो जाने पर तो भजन छूटता ही नहीं। विषय–सेवन का अभ्यास अनेक जन्मों से पड़ा हुआ है। वह धीरे–धीरे बदलेगा। इसलिये उत्साह पूर्वक नाम–जप करते रहना चाहिये। इससे ऊबने की जरूरत नहीं है।

प्र0 - श्रीकृष्ण-कीर्तन क्यों करना चाहिये ?

उ0- श्रीकृष्ण हमारे प्यारे हैं, इसीलिये उनका कीर्तन करना चाहिये। प्यारे के नाम का जप, कीर्तन और उसका गुणानुवाद किये बिना रहा ही नहीं जाता। यह भक्तों का मानों स्वभाव ही है। इसके लिये भले ही उनकी कोई निन्दा करे। यह एक नियम भी है कि जिस प्रकार बनिये से व्यापार किये बिना नहीं रहा जाता, किसानों से खेती किये बिना नहीं रहा जाता, इसी प्रकार भक्तों से श्रीकृष्ण–कीर्तन किये बिना नहीं रहा जाता।

प्र0 - महाराज जी ! जो लोग लज्जा और संकोच छोड़कर कीर्तन करते हैं, उन्हें बहुत आदमी तो ढोंगी बताते हैं ?

उ0 - बताने दो ढोंगी। भौंरे को तो रस चूसने से काम। जो तमोगुणी होते हैं उन्हें ही भगवन्नाम–कीर्तन में लज्जा आती है।

प्र0 - क्या कीर्तन करने से ध्यान स्थिर रह सकता है ?

उ0 - कीर्तन भी ध्यान ही है। भगवदभक्त को भगवान् का किसी भी प्रकार भजन–चिन्तन करने से आनन्द आ जाता है। भगवान् की याद करना और इस जगत् को भुलाना–यही हमारा लक्ष्य है कीर्तन करो, कीर्तन से थक गये हो तो जप करो, जप से थक जाओ तो स्वाध्याय करो और स्वाध्याय से भी थको तो ध्यान करो तथा ध्यान से भी थक जाओ तो भगवच्चर्चा करो। समय को व्यर्थ बातों में नष्ट न करो। हर समय भगवान् का चिन्तन करते रहो।

प्र0 - कीर्तन में झाँझ पीटने से क्या पुण्य होता होगा ?

उ0 - यदि पुण्य नहीं होता होगा तो पाप भी तो नहीं होता। जब तुम सुल्फा, बीड़ी, तम्बाकू आदि का सेवन करने और ताश खेलने को बुरा नहीं मानते तो इसी को क्यों बुरा मानते हो ? कुछ न करने से तो यह अच्छा ही है।

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।

प्र0 - श्रीकृष्ण-कीर्तन से क्या लाभ है ?

उ0 - श्रीकृष्ण–कीर्तन से साधक को भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन होते हैं और उन सिद्धों को जिन्हें भगवान श्री कृष्ण के दर्शन हो गये हैं, अपने प्यारे के नाम लेने में परम आनन्द आता है।

प्र0 - महाराज जी, संकीर्तनोत्सवों का लक्ष्य क्या होना चाहिये ?

उ0 - मैं तो कहता हूँ कि हरिनाम संकीर्तन हरिनाम में आसक्ति होने के लिये ही होना चाहिये। भगवान् के दर्शन या किसी अन्य हेतु से नहीं।

प्र0 - तो क्या भगवन्नाम में आसक्ति होना भगवद्दर्शन से भी बढ़कर है ?

उ0 - हाँ, अवश्य बढ़कर है। भगवन्नाम में आसक्ति हो जाने के बाद दर्शन हों चाहें न हों, साधक को परवाह नहीं रहती। उसको दर्शन देने के लिये तो भगवान् तैयार ही रहते हैं।

प्र0 - मन तो लगता नहीं, ऐसी अवस्था में क्या केवल जिह्वा से नाम-जाप करते रहने से विशेष लाभ हो सकता है?

उ0 - अवश्य लाभ होता है, क्योंकि सांसारिक काम भी बिना मन लगे करने से पूरा हो ही जाता है। जैसे बही खाते का काम करते समय भी मन भ्रमण करता रहता है, किन्तु इस प्रकार बिना मन लगे भी करते रहने से काम पूरा हो ही जाता है, वैसे ही बिना मन लगे केवल जिह्वा से ही जप करते रहने पर भी सफलता अवश्य मिलेगी।

प्र0 - नाम जप, नामस्मरण और नामकीर्तन में कौन श्रेष्ठ है ? वाणीद्वार होने वाले, उपांशु और मानसिक जपों में कौन-सा जप उत्कृष्ट है ?

उ0 - साधारण जनता के लिये नामसंकीर्तन विशेष लाभप्रद है और जो संयत चित्त वाले हैं, उनके लिये जप अधिक उपयोगी है। प्रारम्भ में उच्चारण करके जप करना चाहिये, फिर उपांशु और उसके बाद मानसिक जप करना अच्छा हैं जैसे–जैसे मन समाहित होगा, वैसे–वैसे ही मानसिक जप अधिक प्रिय लगने लगेगा।

प्र0 - संकीर्तन में जो स्वर-ताल आदि का रस आता है, वह क्या बन्धनकारी है ?

उ0 - वह भक्त के लिये तो बन्धन कारक हो नहीं सकता, क्योंकि उसकी उसमें भगवदीयता की भावना है– वह उसे श्रवण–रस न समझकर भगवद्रस समझता है। अतः भगवत्प्राप्ति का साधन होने के कारण वह उसके बन्धन का कारण नहीं हो सकता। हाँ, जिज्ञासु की अवश्य उसमें उपेक्षा रहती है, क्योंकि उसकी उसमें भगवद् भावना नहीं होती। इसके सिवा भगवत्प्रेम उसका लक्ष्य भी नहीं होता। वह तो भगवत्तत्त्व का जिज्ञासु है। अतः उसे ये स्वर–ताल भी विषय रूप प्रतीत होने के कारण हेय ही प्रतीत होते हैं। परन्तु बोधवान् की उनमें न तो हेय बुद्धि होती है और न उपादेयबुद्धि ही, उसकी दृष्टि में तो सब कुछ ब्रह्मस्वरूप ही है।

प्र0 - कुछ लोग आपके ऊपर आक्षेप करते हैं कि आप लोगों को संध्या-गायत्री का उपदेश न देकर संकीर्तन का ही उपदेश क्यों देते हैं ?

उ0 - भाई ! मैं यह कब कहता हूँ कि संध्या मत करो। मैं तो कहता हूँ कि जो संध्या कर सकें वे अवश्य करें। किन्तु जो अक्षर नहीं जानता, शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकता और न जिसे पढ़ने–लिखने का समय है, वह मेरे कहने से संध्या कैसे याद कर सकता है ? उससे मैं कह देता हूँ कि कीर्तन करो। यदि कीर्तन के लिये भी न कहूँ तो वे कुछ भी नहीं करेंगे।

प्र0 - महाराज जी ! बहुत से पण्डित लोग कहते हैं कि कीर्तन में ओंकार का उच्चारण नहीं करना चाहिये। इसे सब नहीं बोल सकते। शूद्र का इसे उच्चारण करने में अधिकार नहीं है।

उ0 - यदि मना करते हैं तो मत बोलो, शास्त्र के विरुद्ध मत चलो। हमारा 'कृष्ण' नाम तो सब नामों से बड़ा है। देखो, मुझे बंगाली स्वामी से एक श्लोक प्राप्त हुआ है, उसमें श्रीकृष्ण– नाम की कितनी महिमा है–

वज्रं पापमहीभृतां भवगदोद्रेकस्य सिद्धौषधं,
मिथ्याज्ञाननिशाविशालतमसस्तिग्मांशुबिम्बोदयः।
क्रूरक्लेशमहीरुहामुरुतरज्वालाजटालः शिखी,
द्वारं निर्वृतिसद्मनो विजयते कृष्णोति वर्णद्वयम्।।

प्र0 - लोग कहते हैं कि केवल जिह्वा से नाम-जाप करते रहने से कोई लाभ नहीं, किसी ने कहा है-
करमें तो माला फिरै, जीभ फिरे मुख माहिं।
मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं।।

उ0 - ऐसा कहने वालों की बात मत सुनो। उन्हें कहने दे। अपने को तो जैसे बने वैसे भगवन्नाम–स्मरण करते रहना चाहिये। यदि मन भगवान् में लग जायेगा तो फिर तो भजन करने के लिये कहना ही नहीं पड़ेगा, क्योंकि उस व्यक्ति से तो फिर निरन्तर भजन ही होगा। जब तक मन नहीं लगता तभी तक भजन करने के लिये जोर लगाना पड़ता है। केवल जिह्वा से भजन करते–करते भी भजन में मन लगने लगता है। जो काम अधिक समय तक किया जाता है, उसमें मन को लगना ही पड़ता है– यह नियम है।

प्र0 - निरन्तर भगवदाकर वृत्ति कैसे रह सकती है ?

उ0 - तीव्र अभ्यास करने से वृत्ति क्षण–क्षण में भगवान् का चिन्तन करती है। इसी को भगवदाकार वृत्ति कहते हैं। वृत्ति क्षण–क्षण में बदला करती है। इसलिये विशेष प्रयत्न करने पर ही उसे भगवदाकार किया जा सकता है। तथापि भक्त लोग पुरुषार्थ (अपने प्रयत्न) को प्रधान नहीं मानते। वे तो कहते हैं कि जो कुछ होता है भगवत्कृपा से ही होता है।

प्र0 - भगवान् की आज्ञा समझकर पुरुषार्थ करें और उससे जो लाभ हो उसे भगवान् की कृपा से हुआ समझें तो क्या हर्ज है ?

उ0 - यही तो भक्तों का सिद्धान्त हैं ऐसा ही तो मानना

चाहिये। ऐसा मानने वाले को अभिमान नहीं होता है।

प्र0 - क्या निराकारोपासकों के लिये भी कीर्तन उपयोगी है?

उ0 - जप और कीर्तन दो वस्तुएँ नहीं है। जो जप करता है वह कीर्तन भी कर सकता है। निराकारोपासक भगवान् की सेवा तो नहीं कर सकते, किन्तु जप या कीर्तन करने का उन्हें पूर्ण अधिकार है। जप एवं कीर्तन से वृत्ति भगवदाकार होती है। लक्ष्य निर्गुण हो अथवा सगुण, दोनों में ही जप या कीर्तन से वृत्ति तदाकार हो जाती है। इसलिये जप और कीर्तन तो सभी कर सकते हैं। किन्तु जिज्ञासु साकारोपासक एवं निराकारोपासक इन दोनों से ही विलक्षण होता है। उसके लिये श्रवण, मनन और निदिध्यासन ही मुख्य है, कीर्तन उनके लिये गौण है। वह श्रवण, मनन और निदिध्यासन तो करता ही है, किन्तु थोड़ी देर जप या कीर्तन भी करे तो उसके लिये इससे कोई हानि नहीं है। ये तो उसके सहायक ही होंगे। किन्तु उपासकों के लिये ये ही मुख्य साधन है। वर्तमान काल में तो कोई–कोई ऐसे उद्दण्ड जिज्ञासु होते हैं जो प्रणव का जप भी नहीं करते। वे कीर्तन क्या करेंगे। ऐसों के लिये हमें कुछ नहीं कहना है। वे दुनिया की बातें तो कर सकते हैं, परन्तु कीर्तन नहीं कर सकते, जप नहीं कर सकते और न ध्यान ही कर सकते हैं।

प्र0 - एक देवता का उपासक दूसरे देवता का नामकीर्तन और पूजनादि कर सकता है या नहीं?

उ0 - अच्छी तरह कर सकता है। परन्तु कर सकता है। अपने इष्टदेव में अनुराग होने के लिये ही और तभी तक कर सकता है, जब तक अपने इष्टदेव में पूर्ण अनुराग न हो। वैधी और गौणी भक्ति में तो सभी कुछ कर सकता है, परन्तु रागात्मिका भक्ति प्राप्त होने पर सब छूट जाता है।

प्र0 - संकीर्तन ज्ञान-प्राप्ति में कारण हो सकता है या नहीं और हो सकता है तो किस प्रकार?

उ0 - ज्ञानेच्छु साधकों के लिये कर्म और उपासना अन्तःकरण की शुद्धि के लिये होते हैं। कीर्तन भी कर्म और उपासना के ही अन्तर्गत है। अतः उससे उनके अन्तःकरण की शुद्धि होगी और अन्तःकरण शुद्ध होने पर उन्हें ज्ञान की प्राप्ति होगी। किन्तु ज्ञानेच्छुका लक्ष्य भगवत्प्राप्ति नहीं होता वह तो प्रेमियों का लक्ष्य है। अतएव भगवत्प्रेमियों के लिये तो कीर्तन साधक है और साध्य भी तथा ज्ञानमार्गियों के लिये वह केवल अन्तःकरण की शुद्धि का ही साधन है।

प्र0 - कहते है, योग से चित्त शान्त होता है। क्या यह ठीक है?

उ0 - यह भी ठीक है। परन्तु जप के अन्दर अनन्त सामर्थ्य है। इसलिये जप में तत्पर हो जाना चाहिये। उसी से सब कुछ प्राप्त हो जायेगा।

प्र0 - संकीर्तन के समय जिस नाम की ध्वनि उच्चारण करे उसके साथ नामी का ध्यान करना आवश्यक है। किन्तु महामन्त्र के एक चरण में तो 'हरि' और 'राम' है तथा दूसरे में 'हरि' और 'कृष्ण' नाम हैं। सो क्या एक पद बोलने के समय श्रीराम का ध्यान करना उचित है और दूसरा पद बोलने के समय उस ध्यान को बदलकर श्रीकृष्ण का ध्यान करना चाहिये? ऐसी दुविधा होने से तो ध्यान ठीक नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में क्या कर्तव्य है?

उ0 - भक्त को सदैव एकमात्र अपने इष्टदेव का ही ध्यान करना चाहिये। मन्त्र में जो इष्टदेव का नाम है वह तो उसका है ही। उसके अतिरिक्त जो अन्य नाम हैं वे भी अपने इष्टदेव के ही समझने चाहिये। जैसे महामन्त्र का जप या कीर्तन करते समय कृष्ण का ही ध्यान करना चाहिये। जब वह **'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे'** पद का उच्चरण करे तो भी श्रीकृष्ण का ही ध्यान रखें और यह समझें कि 'राम' भी श्रीकृष्ण का ही नाम है; क्योंकि 'राम' उसी को कहते हैं जो सब जगह रमा हुआ है अथवा जिसमें योगीजन रमण करते हैं। श्रीकृष्ण में यह नाम पूर्णतया सार्थक है, क्योंकि वे सब जगह रमे हुए हैं और योगी उनमें रमण करते हैं। इसी प्रकार राम भक्त को जब वह **'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे'** उच्चारण करे तो भी श्रीराम का ही ध्यान करना चाहिये, क्योंकि राम का नाम 'कृष्ण' भी है। 'कृष्ण' का अर्थ 'खीचने वाला' है। जैसे श्रीकृष्ण मन को खींचते हैं उसी प्रकार राम जी भी उसे अपनी ओर खींचते हैं इसी प्रकार यदि

शिव के नाम का कीर्तन करें तो भी राम या कृष्ण के भक्तों को अपने इष्टदेव का ही ध्यान करना चाहिये, क्योंकि उनके इष्टदेव का नाम 'शिव' भी है। शिव का अर्थ है– 'मंगलकारी' सो राम और कृष्ण भी मंगलकारी है ही। अतः उनका नाम शिव भी हो ही सकता है। मैं तो यह कहता हूँ कि अच्छे–बुरे जो कुछ भी नाम हैं वे सब भगवान् के ही हैं। अतः भक्त को उनमें इष्टबुद्धि ही करनी चाहिये।

प्र0 - विद्वान् लोग भगवान् का नाम क्यों नहीं जपते ?

उ0 - भगवत्कृपा के बिना भगवन्नाम नहीं लिया जाता ओर न उसमें प्रीति ही होती है। भगवत्कृपा कब और किस पर होती है–यह हम नहीं कह सकते।

प्र0 - भगवान् का जोर-जोर से नाम लेने से क्या लाभ है ?

उ0 - भक्त लोग अपने प्यारे का नाम जोर–जोर से लेकर आनन्दित होते हैं।

प्र0 - नामकीर्तन में सबकी निष्ठा क्यों नहीं होती ?

उ0 - जिस प्रकार स्कूल में दो सौ लड़के पढ़ते हैं, परन्तु परीक्षा में सभी उत्तीर्ण नहीं होते। हाँ, बार–बार प्रयत्न करें तो और सब भी उत्तीर्ण हो सकते हैं, इसी प्रकार नाम कीर्तन में एका–एक ही सबकी निष्ठा नहीं होती, किन्तु बार–बार कीर्तन करने से सभी की निष्ठा हो सकती है। आसक्ति का नाश होने पर ही तुम्हें भगवन्नाम–निष्ठा की उपलब्धि होगी। नामकीर्तन करने से मनुष्य की तदाकार वृत्ति हो जाती है। जो राम–नाम कीर्तन करते हैं वे राम को प्राप्त होते हैं तथा जो कृष्ण–नाम–कीर्तन करते हैं वे कृष्ण को प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार अपनी–अपनी धारणा के अनुसार हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सब ईश्वर को ही प्राप्त होते हैं।

प्र0 - तत्त्वज्ञान या भगवत्प्राप्ति के लिये क्या साधना करनी चाहिये ?

उ0 - चोरी, हिंसा, व्यभिचार, नशा, जुआ, झूठ, गाली, चुगली, असम्बद्ध प्रलाप, दूसरे का अनिष्ट चिन्तन, परधन लेने का संकल्प ओर देह में आत्मबुद्धि इन सबका त्याग और दैवीसम्पत्ति का ग्रहण– ये भगवत्प्राप्ति के साधारण उपाय हैं। त्याग की भावना और भगवत्स्मरण ये दो असाधारण साधन है। स्मरण का अर्थ है जप। जप के लिये मैंने तीन मन्त्र चुने हैं–

(1) हरे राम हरे राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

(2) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

(3) ॐ नमः शिवाय।

प्र0 - कीर्तन करने की विधि क्या है ?

उ0 - कीर्तन में तीन बातों पर दृष्टि रखनी चाहये– (1) कीर्तन का स्थान (2) कीर्तन करने वाले और (3) दर्शक लोग। स्थान परम सात्त्विक और भगवान् के चित्र तथा ध्वजा, पताका आदि से सुसज्जित होना चाहिये। दर्शकों में भी कोई नास्तिक या बहिर्मुख पुरुष न हो। कीर्तनकारों को सब ओरसे चित्त हटाकर नेत्र मूँदे हुए अनन्य भाव से भगवान् की मधुर मूर्ति का चिन्तन करते हुए कीर्तन करना चाहिये। जब कीर्तन समाप्त हो जाय तभी नेत्र खोलने चाहिये। इस प्रकार कीर्तन करने से बहुत शीघ्र भगवत्कृपा होती है।

जिज्ञासु – श्री महाराज जी ! मैं आपका नाम सुनकर आया हूँ। मुझे क्या करना चाहिये ? मेरा कल्याण किस प्रकार होगा, सो कृपा करके बताइये।

बाबा – तुम कौन–सा मन्त्र जपते हो ?

जिज्ञासु – गायत्री मन्त्र की एक माला जपता हूँ।

बाबा – अरे ! एक माला गायत्री से क्या होगा ? कम से कम ग्यारह माला नित्य जपो तो कुछ चमत्कार हो सकता है।

जिज्ञासु – महाराज ! मैं ब्राह्मण हूँ और एक व्यक्ति के यहाँ रसोई बनाता हूँ। गरीब आदमी हूँ। मुझे इतना समय नहीं मिलता जो ग्यारह माला जप सकूँ।

बाबा – अच्छा, तुम गायत्री की तो एक ही माला जपते रहो। किन्तु इसके सिवा और सब समय काम–काज करते हुए ही 'राधेश्याम–राधेश्याम' जपा करो। इस प्रकार निरन्तर नाम–जप करने से बड़ा लाभ होता है भगवन्नाम में बड़ी अद्भुत शक्ति है। इसका निरन्तर जप करने से भगवान् के दर्शन भी हो सकते हैं।

एक सन्त का उपदेश

नाम-महिमा अप्रैल 2003

नाम-जप और संकीर्तन

1. जब तक किसी चीज का लोभ नहीं होता, तबतक उसे पाने और सुरक्षित रखने की धुन सवार नहीं होती। इसी से जब तक हमारा नाम में लोभ नहीं होता, तब तक नाम–जप में प्रीति होना भी कठिन है। नाम का लोभ होने पर तो स्वतः ही हर समय जप होने लगेगा। फिर तो एक मिनट भी व्यर्थ बात करना बुरा जान पड़ेगा। जिस प्रकार धन के लोभी को पाँच मिनट भी अपने व्यापार को छोड़ना कठिन हो जाता है, उसी प्रकार भगवन्नाम का लोभी पाँच मिनट भी व्यर्थ बात नहीं कर सकता।

2. जप सबसे कठिन चीज है। मैं तो ज्ञान और ध्यान से भी जप को कठिन समझता हूँ। लोग ज्ञान की बातें तो रात–दिन कर सकते हैं, परन्तु उन्हें जप करना कठिन लगता है। सब प्रकार की बातें छोड़कर निरन्तर एक ही मन्त्र को जपते रहना साधारण बात नहीं है। जप में बड़ी विलक्षण शक्ति होती है।

3. नाम मन्त्र से भी बड़ा है, क्योंकि मन्त्र–जप में विधिका बन्धन है, जबकि नाम जप में विधि–विधान की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे कि गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कहते हैं –

नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं।
करहु बिचारु सुजन मन माहीं।।

नाम की यह महिमा कोई कल्पना नहीं, सर्वथा सत्य है।

4. जिसकी राम–नाम में निष्ठा हो गयी, उसके लिये संसार में क्या काम बाकी रहा ?

5. तुम जिस समय कृष्ण–नाम लो, उस समय अपने को गोलोक में समझो।

6. नाम के अभ्यास से नाम मधुर लगने लगेगा। जैसे ध्यान करने वाले को दिव्य गंध एवं दिव्य दर्शनादि चमत्कार होते हैं, वैसे ही नाम जप करने से भी होंगे। भगवान् के दर्शनों की चाह होगी तो वे भी तत्काल दर्शन देंगे। विश्वास होने पर तो केवल नाम–जप से भगवान् के दर्शन हो सकते हैं। जो काम अधिक करता है। वह भजन भी अधिक करेगा। जो काम नहीं करता उससे भजन भी नहीं हो सकता। हाँ, भजन धीरे–धीरे बढ़ाते जाओ तो काम अपने आप कम होता जायेगा। यदि भजन में अत्यन्त प्रेम है तो घर छोड़कर एकान्त में भजन कर सकते हो। पहले अभ्यास करना चाहिये, कुछ समय भजन–कीर्तनादि करना चाहिये और थोड़ी देर गुणानुवाद करना चाहिये। इससे भजन में मन लग जायेगा। यदि पैसे पास हों तो साधु–सेवा भी करो।

7. श्रीकृष्ण के गुणानुवाद में कर्मकाण्ड की तरह आचार–विचार का कोई नियम नहीं है। वहाँ तो गौ दुहते, झाड़ू देते, दही मथते तथा हर एक काम करते हुए ब्रज बालाएँ श्रीकृष्ण का गुणगान किया करती थीं।

8. 'सन्त महापुरुषों' ने ध्यानसहित नाम–जपकी महिमा गाकर संसार का बड़ा उपकार किया है, क्योंकि सब लोग जपके साथ ध्यान नहीं करते। अतः ध्यान के बिना उन्हें विशेष लाभ भी नहीं होता। भजन कैसे करना चाहिये, इस विषय में गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी कहते हैं–

कामिहिं नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।।

लोभी की भाँति नाम अधिकाधिक मात्रा में जपना चाहिये और कामी की भाँति निरन्तर स्वरूप का ध्यान करना चाहिये।

9. इष्टदेव के अनन्त नाम और अनन्त रूप हैं, किन्तु हमारा तो एक नाम और एक रूप में ही अनन्य प्रेम होना चाहिये।

10. भगवान् से भगवन्नाम अलग है, परन्तु भगवन्नाम से भगवान् अलग नहीं है। नाम के अन्दर भगवान् है।

11. गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी की '**नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं।।** इस चौपाई को सब लोग गाते हैं, किन्तु फिर भी भगवन्नाम नहीं

जपते और भगवन्नामकीर्तन भी नहीं करते। भगवान् तो अनन्त सौन्दर्य की खान हैं, फिर भी उनकी ओर मन नहीं जाता। इसका कारण यही है कि श्री भगवान् का कृपाकटाक्ष नहीं है। अपना पुरुषार्थ भी हो और भगवत्कृपा भी हो, तभी काम बनता है।

12. ऋषियों ने यह निश्चय किया है कि भगवच्चिन्तन ही विधि है और जगच्चिन्तन ही निषेध है। जगच्चिन्तन का परिणाम ही यह देह है। भगवच्चिन्तन करने से यह दिव्य हो जायेगा। अतः सर्वदा भगवान् का चिन्तन करना चाहिये। बस, भगवन्नाम की रट लगा दो–

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू।।

13. जो जितना अधिक जप करेगा, उसे उतनी ही अधिक शीघ्र सिद्धि मिलेगी। सोलह नाम के महामन्त्र की कम–से–कम सोलह माला, द्वादशाक्षर–मन्त्र की कम–से–कम बाहर माला और 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र की कम से कम पचास माला जप नित्यप्रति करनी चाहिये। अधिक जितनी कर सके उत्तम है। जिस व्यक्ति को जिस मन्त्र में प्रीति हो, उसे उस एक ही मन्त्र का जप करना चाहिये। त्याग की भावना के लिये परद्रव्य का त्याग करे, पुरुषार्थ से यथावश्यक द्रव्योपार्जन करे, विषयों में आसक्ति का त्याग करें यथालाभ–संतुष्ट रहे तथा ब्याज के ब्याज (सूद–दर–सूद) से बचे। इन नियमों का पालन किये बिना **तत्त्वज्ञान की प्राप्ति का उपाय है सद्गुरु की प्राप्ति। सद्गुरु मिल जाने से उसे शीघ्र ही सिद्धि हो जाती है। सद्गुरु जो नियम बतलावें, उन्हीं का पालन करें।**

14. अधिक जप करने से शरीर के परमाणु मन्त्राकार हो जाते हैं।

15. भगवन्नाम स्मरण करने के लिये शुचि–अशुचि, सुसमय–कुसमय और सुस्थान–कुस्थान विचार नहीं करना चाहिये।

16. भगवान् के अनन्त नाम हैं, अनन्त शक्तियाँ हैं, अनन्त रूप है और अनन्त भाव हैं। किन्हीं–किन्हीं महानुभाव ने अनन्त नाम और अनन्त शक्तियाँ–ये दो ही पक्ष माने हैं। इस प्रकार जब उनके अनन्त नाम हैं तो 'श्रीकृष्ण', 'श्रीराम' और 'श्रीशिव' ये भगवन्नाम क्यों नहीं हो सकते। जो इन्हें भगवन्नाम नहीं मानते, वे उक्त सिद्धान्त से अनभिज्ञ हैं।

17. कीर्तन करने वालों को संध्या अवश्य करनी चाहिये। यह नहीं सोचना चाहिये कि हम कीर्तन करते हैं, हमें संध्या करने की क्या आवश्यकता है।

18. कीर्तन करने वाले भक्तों से मेरा निवेदन है कि वे कीर्तन करते समय बिना भाव की विशेषता के दिखावटी गिर पड़ना, मूर्च्छित हो जाना, रोना–नाचना आदि न करें तो अच्छा हो। यदि अत्यन्त बढ़े हुए भाव के आवेश में कोई सावधान न रह सकता हो तो दूसरी बात है।

19. भाई, मैं यह नहीं कहता कि ध्यान मत करो। किन्तु एक आदमी तो केवल ध्यान ही करता हो और दूसरा ध्यान भी करता हो तथा समय मिलने पर कीर्तन भी– तो थोड़े ही दिनों में देख लोगे कि कौन अधिक उन्नति करता है।

20. कलियुग सब युगों से खराब है, फिर भी देवताओं ने भगवान् से प्रार्थना की कि हम कलियुग में पैदा हों। इसका कारण यही है कि इस युग में केवल श्री भगवन्नाम–जप और कीर्तन से ही मोक्ष मिल जाता है।

21. सब यज्ञों में जपयज्ञ श्रेष्ठ है, क्योंकि और यज्ञों में तो यह देखना होता है कि उसमें काना न हो, कुष्ठी न हो, विधुर न हो, अविवाहित न हो, किन्तु जपयज्ञ में ऐसी कोई बात नहीं देखी जाती। इसमें तो चाहे बालक हो, चाहे बूढ़ा हो, चाहे स्त्री या शूद्र हो, सभी का अधिकार है।

22. मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि आजकल भगवन्नाम–जप और जितेन्द्रियता ही सब कुछ है। तत्त्वज्ञान कलियुगी जीवों की समझ में नहीं आ सकता। तत्त्वज्ञान तो पवित्र हृदय वालों को ही होता है और हृदय तब पवित्र होता है, जब सब प्रकार की पवित्रताओं का पालन किया जाय।

23. सबसे कठिन चीज क्या है ? जप। और बुद्धि को पवित्र करने वाली चीज क्या है ? जप। जप यदि एक आसन से किया जाय तो बहुत अच्छा है।

24. जिस दिन हमारी नाम में आसक्ति हो जायगी, उसी दिन भक्ति महारानी आ जायेगी।

25. भगवन्नाम–कीर्तन से ही उद्धार हो सकता है–

देखो जी ऐसो नाम रसखान।
मूरख याको मरम न जानें पीवें चतुर सुजान।।

26. जिनकी विचार में रुचि नहीं है ओर जो भगवान्‌गुणानुवाद में ही मस्त हैं, वे ही उत्तम हैं। पापकर्मों को ध्वंस करने के लिये भी जप करने की आवश्यकता है। इसी से ज्ञान–वैराग्य युक्त भक्ति की प्राप्ति होगी। इसको भी अनिर्विण्ण–चित्त से करना चाहिये। देहनाशपर्यन्त इसे तत्परता से करते रहना चाहिये। पुनः–पुनः चिन्तन करने को ही अभ्यास कहते हैं और यही पुरुषार्थ है। ईश्वर–चिन्तन में आनन्द आवे अथवा न आवे, उसे तो प्रतिज्ञापूर्वक करते ही रहना चाहिये। मन भागता रहे तो भी कोई चिन्ता नहीं, किन्तु नियमपूर्वक चिन्तन की प्रतिज्ञा करनी ही चाहिये। भगवान् उसी पर दया करते हैं जो उनका चिन्तन करता है। जिस प्रकार से भगवान् में मन लगे वही करना चाहिये। जप में मन कम लगे तो कीर्तन करें या स्तोत्रपाठ आथवा स्तुतिपरक पदों का गान करें।

27. अभ्यास करने से हम निद्रा को जड़–मूल से उखाड़ सकते हैं, किन्तु यह काम चार दिन के अभ्यास से नहीं होगा। इसलिये जल्दबाज नहीं होना चाहिये। यह निश्चय कर लेना चाहिये कि मैं आजन्म भगवन्नाम लेता रहूँगा। नित्य के नाम–जप का हिसाब लिखें। इस प्रकार प्रतिज्ञा करने से भजन होगा। भजन तो हठपूर्वक भी करना चाहिये। भजन करने वालों के लिये अतिआहार और अतिपरिश्रम निषिद्ध हैं। जप करते हुए मन भटके तो भटकने दो। जप में इतनी शक्ति है कि वह अधिक होने से अपने–आप मन को एकाग्र करने में सहायता करेगा। हम एकाग्रताकी अपेक्षा भी प्रतिज्ञापूर्वक नियमित रूप से जप करने में विशेष लाभ समझते हैं। जैसे तीन घण्टे भजन का तथा नित्यप्रति गीता पाठ का नियम कर लिया जाय। नित्यप्रति साधन करने की प्रतिज्ञा कर ली जाय तो इससे बड़ा लाभ होगा। यदि लाभ न भी दीखे तो भी कोई हर्ज नहीं। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में लाभ दिखायी देगा। कभी–न–कभी तो आनन्द आयेगा ही।

28. एक बार एक मुसलमान ने मेरे पास आकर पूछा – कि हमारा उद्धार कैसे हो सकता है। मैंने कहा – 'भैया, 'अल्लाह–अल्लाह' रटा करो। 'अल्लाह–अल्लाह' रटने से तुम्हारा अन्तःकरण शुद्ध हो जायेगा और हिंसा आदि बुरे कर्म छूट जायेंगे, क्योंकि यह भी एक प्रकार का कीर्तन ही है।

29. माला भगवत्स्वरूप है। जिस माला से हम जप करते हैं, उसमें एक प्रकार की शक्ति पैदा हो जाती है। अतः माला को जल्दी–जल्दी नहीं बदलना चाहिये।

30. कीर्तन से एकाग्रता उत्पन्न होती है। शब्द में रूप के समान ही आकर्षणशक्ति है। इसलिये प्रभु श्रीकृष्ण ने वंशी और रूप दोनों से ही सबको वश में किया था। मिलकर कीर्तन करने से तुमुल ध्वनि होती है। दूसरी बात यह है कि कीर्तन करने वालों में से यदि एकका चित्त भी सत्त्वगुणमय होगा तो सभी के चित्तों में सत्त्वगुण का आविर्भाव हो जायेगा। इस प्रकार पहले कीर्तन द्वारा चित्त की एकाग्रता लाभ कर लेने पर प्रभु का ध्यान होगा।

31. भगवान और भगवान के नाम में कोई भेद नहीं है, अतः प्रेम से भगवन्नाम जपना चाहिये–

जोई नाम सेई कृष्ण भज निष्ठाकरि।
नामेर सहित आछे आपनि श्रीहरि।।

32. जब तक पाप रहेगा, तब तक श्रीकृष्ण–नाम में प्रेम नहीं हो सकेगा।

33. जब पास बैठने से ही दूसरे व्यक्ति की जप में प्रवृत्ति होने लगे, तब समझो कि जापक का नाम–जप सिद्ध हुआ।

34. जप किये बिना न रहा जाय, यहाँ तक कि जप पूरा न होने पर खाना–पीना भी अच्छा न लगे, तब समझो कि जप सिद्ध हुआ। इसी को जपनिष्ठा कहते हैं।

35. पाठ आदि अन्य साधनों से तो मनोरंजन भी होता है, ये प्रवृत्ति की ओर ले जाते हैं। किन्तु जप निवृत्ति–मार्ग है और भगवान की ओर ले जाता है। वास्तव में जप ही सबसे मुख्य है, किन्तु उसमें मन कठिनता से लगता है।

36. भगवान के स्वरूप में तो प्रेम हो सकता है परन्तु नाम में प्रेम होना कठिन है। जिसने बहुत समय तक सेवा की हो, उसे ही नाम में प्रेम हो सकता है। भगवान का नाम उसके स्वरूप और सेवा दोनों की अपेक्षा सूक्ष्म है।

37. स्मरण ही प्रेम का स्वरूप है। स्मरण करने से

ही प्रेम होता है। बिना स्मरण किये केवल जप करने से विशेष लाभ नहीं होता। जब इष्ट नाम में प्रेम हो जाता है। तो नाम लेने के साथ ही गद्‌गदता होकर आँसू आ जाते हैं और बेहोशी होने लगती है। जो प्रेम से भगवान का नाम लेता है, भगवान् उस भक्त का स्मरण करते हैं। देखो, एक ओर श्रीराधिकाजी 'कृष्ण–कृष्ण' कहती रहती हैं तो दूसरे ओर श्रीकृष्ण 'राधे–राधे' की रट लगाये रहते हैं। इससे निश्चय होता है कि जप इष्टदेव के स्मरणपूर्वक होना चाहिये। देखा जाता है कि बहुत लोग माला लेकर जप भी करते रहते हैं और भाई से लड़ाई अथवा मुकद्‌मेबाजी की बातें भी। ऐसे जप से भला क्या लाभ होगा ? होगा भी तो अगले जन्म में भले ही हो। तत्काल लाभ तो स्मरणपूर्वक जप करने से ही होगा।

38. जप के समय ये चार काम नहीं करने चाहिये– (1) बोलना, (2) इधर–उधर देखना, (3) सिर या गर्दन हिलाना और (4) हँसना। जैसा कि कहा है–

जपकाले न भाषेत नान्यानि प्रेक्षयेद् बुधः।
न कम्पेत शिरोग्रीवां दन्तान् नैव प्रकाशयेत्।।

39. भगवान् के मंगलमय नाम उच्चारण करने से करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं– ऐसा विद्वानों ने निश्चय किया है।

40. भगवान् उत्तमश्लोक (पवित्रकीर्ति) का नाम जानकर लिया जाय अथवा बिना जाने–वह पापों का नाश करता ही है।

41. ज्ञानी या भक्त से कोई अपराध (पाप) बन जाय तो उसे शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त की आवश्यकता नहीं है। वह केवल जप से ही दूर हो जायेगा। बस, जप ही उसका प्रायश्चित है।

एक सन्त का उपदेश

भगवन्नाम की अद्‌भुत महिमा

(1) भगवन्नाम लेना जब से शुरू किया है, समझना चाहिये कि तभी से जीवन की शुरुआत हुई है।
(2) भगवन्नाम में ऐसी अलौकिक शक्ति है कि वह क्षणमात्र में ही महान् गंदगी से भरे प्राणी को शुद्ध कर देती है।
(3) नाम लेने वाले का भला होने में किंचित् भी संदेह नहीं है।
(4) भगवन्नाम पाप धो देगा, विशुद्ध कर देगा, भगवान से मिलने की आतुरता पैदा कर देगा।
(5) भगवन्नाम जीभपर आते ही ऐसा समझना चाहिये कि भगवान के साथ हमारा स्पर्श हो रहा है।
(6) नाम और नामी दो वस्तु नहीं है।
(7) भगवन्नाम के समान विशुद्ध करने वाली अन्य कोई वस्तु नहीं है।
(8) जहाँ भगवन्नाम का जोर–जोर से कीर्तन होता है, वहाँ का सारा वायुमण्डल पवित्र हो जाता है।
(9) नाम को जितना ही गुप्त रखा जायेगा, उतना ही ज्यादा लाभ होगा।
(10) भगवान का नाम सुबह आँख खुलते ही शुरू कर दे और रात्रि को जब तक जागता रहे तब तक चालू रखें।
(11) भगवन्नाम का उच्चारण करते समय महान रस का अनुभव करें और ऐसी भावना करें कि मेरे शरीर में जो साढ़े तीन करोड़ रोम हैं, उन सबसे भगवन्नाम का उच्चारण हो रहा है।
(12) जीभ से नाम लेते समय कान से उसे ठीक–ठीक सुने तो वह ध्यानसहित नाम–जप हो गया।
(13) इस कलियुग में और साधन भले ही कड़े हों, पर जीभ से नाम लेने में कोई कठिनाई नहीं है।
(14) नाम जपते जाओ और भवसागर से तैरते जाओ–गोस्वामी जी ने लिखा है–

कलिजुग केवल हरि गुन गाहा। गावत नर पावहिं भव थाहा।।

(15) नाम का प्रयोग नाम में ही रुचि बढ़ती चली जाय केवल इसीलिये करें।
(16) भगवन्नाम भगवान के चरणों की भक्ति जगा देगा।
(17) जिसने भगवन्नाम को अपना लिया भगवान उसके अपने से अपने बन गये।

आचार्य सत्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज कृत राम नाम महिमा

भजनामृत

तर्ज : मेरी छोटी सी है नाव.........

टेक : जे चाहो कल्यान, धरो हरी का ध्यान,
सुनो सुनो ऐ सुजान, प्रभु को भुलाना मत भूलके

1. हरी साथ तेरे आदि अन्त का मत नाम भुलाओ भगवन्त का।
जपो जपो भगवान, पावो सूख महान।।
2. क्यों जग के पड़े हो जंजाल में, कुछ चलते न तेरे नाल में।
जानो झूठा है जहान, सच्चा प्रभु पहिचान।।
3. सदा साध संगति में जायके, कहे टेऊँ बैठो चित्त लायके।
तजे मन अभिमान, करो हरी गुण गान।।

भजन

तर्ज : बचपन के दिन भुला न देना................

टेक : नाम हरी का भुला न देना, जीवन अपना रूला न देना

1. मानुष चोला दुर्लभ पाया, राम भजन बिन वृथा जाया।
ऐसा वेला हाथ न आवे, क्यों तुम मूर्ख पाप कमावे।
पाप करे तन गंवा न देना।।
2. राम नाम बिन कोय न तेरा, क्यों कहते हो मेरा मेरा।
प्रेम से प्रभु के गुण गाओ, जन्म मरण में फेर न आओ।
प्रेम लगा कर हटा न देना।।
3. हलत चलत तेरा हरि साथी, झूठे तन धन घोड़े हाथी।
राम नाम का जाप जपीजे, कहे टेऊँ भव सिन्धु तरीजे।
भव में चित्त को डुला न देना।।

भजन

तर्ज : कोई परदेसी आया परदेस से.............

टेक: सत्‌नाम साक्षी सर्व अधार, जो सुमरे सो उतरे पार।

1. सत्‌नाम साक्षी मोहनी मंतर,
तांका सुमरन करो निरन्तर।
सब साधन का जो है सार।
2. सत्‌नाम साक्षी काज संवारे,
तन मन के सब रोग निवारे।
सर्व सुखों का है भण्डार।।
3. सत्‌नाम साक्षी सब घट बोले,
जो सुमरे तिस भाग्य खोले।
देवे परम पदार्थ चार।।
4. सत्‌नाम साक्षी है अनिवासी,
कहे टेऊँ काटे जम फासी।
देता है सो मोक्ष द्वार।।

भजन

टेक : शरण ले राम की भाई, वही भव सिन्धु तारेगा।
सर्व सुख राम के शरणी, राम तुमको उधारेगा।।

1. तजो तुम और की आसा, करो मन राम भरवासा।
शरण पालक बिरद उसका वही दुख दर्द टारेगा।।
2. तजे जो ईश आधारा, भरोसा लेत संसारा।
ईहां ऊँहां दुखी होकर, जोनि चौरासी धारेगा।।
3. हरी की शरण जो पड़ते, रक्षा तिनकी हरी करते।
कहे टेऊँ सो तेरा भी, जन्म फेरा निवारेगा।

भजन

थलु : सन्त करिनि कुल जा कल्यांण राम नाम जो छंडो लगाए।

(1) राम नाम जो छंडो लगाए,
दिनो सतीअ खे सुहाग जीआए।
मुर्दो उथियो दि्ठो जहान,
सभिको संतनि जा गुण गाए।।

(2) राम नाम जो छंडो लगाए,
कोढ़ीअ जो छद्रियो कोढु मिटाए।
कयो कमालु कमाल सुजान,
हरिको संतनि खे साराए।।

(3) राम नाम जो छंडो लगाए,
दादूअ छद्रिया भूत भजाए।
पावनु कयड़ा कुल स्थान,
राम छंडे जो जलु छिणकाए।।

(4) छंड़ो राम जो बरिकत वारो,
जंहि भी लगे तंहिं भरे भण्डारो।
खाइनि पशु पखी इन्सान,
खुटे न कदहिं पियो खाराए।।

(5) छंडो राम जो सन्त लगाए,
सुकल वण भी सब्जु बणाए।
कहे टेऊँ तिनि तां कुरबान,
राम छंडे खे जेको चाहे।।

संकलन
दादी लाजवन्ती
प्रकाश आश्रम, ग्वालियर

"रामायण में राम वन्दना" की चौपाईयाँ

1. महामंत्र जोई जपत महेसू, कासी मुकुति हेतु उपदेसू।
2. जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं, अंत राम कहि आवत नाहीं।
3. कहौं कहाँ लगि नाम बढ़ाई, राम न सकहिं नाम गुन गाई।
4. महिमा जासु जान गनराऊ, प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।
5. जान आदि कबि नाम प्रतापू, भयऊ सिद्ध करि उल्टा जापू।
6. उल्टा नाम जपत जगु जाना, वाल्मीक भए ब्रह्म समाना।
7. सहस नाम सम सुनि सिव बानी, जापि जेई पिय संग भवानी।
8. राम सकल नानन्ह ते अधिका, होऊ नाथ अद्य संग गन बधिका।
9. राम अनंत अनंत गुनानी, जन्म कर्म अनंत न मानी।
10. तुम्ह पुनि राम राम दिन राती, सादर जपऊँ अनंग आराती।
11. नाम प्रभाऊँ जान सिव नीको, कालकूट फलु दीन्ह अमी को।
12. ध्रुव सगलानि जपेऊ हरि नाऊँ, पायउ अचल अनूपम ठाऊँ।
13. भॉय कुभॉय अनरव आलसहूँ, नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।
14. सीय राममय सब जग जानी, करऊँ प्रनाम जोरि जुग पानी।
15. चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ, कलि विसेषि नहिं आन उपाऊ।
16. समुझत सरिस नाम अरू नामी, प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी।
17. सादर सुमिरन जे नर करहीं, भव बारिधि गोपद इव तरहीं।
18. नाम रूप दूइ ईस उपाधी, अकथ अनादि सुसामुझि साधी।
19. देखिअहिं रूप नाम आधीना, रूप ग्यान नहिं नाम विहीना।
20. नाम रूप गति अकथ कहानी, समुझत सुखद न परति बखानी।
21. नाम जीहं जपि जागहिं जोगी, विरति बिरचि प्रपंच वियोगी।
22. जपहिं नाम जन आरत भारी, मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।
23. नाम निरूपन नाम जपन हेते, सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन ते।
24. नाम लेत भव सिन्धु सुखाही, करहुँ विचारू सुजन मन माहीं।
25. नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू, भगत सिरोमनि भे प्रहलादू।
26. ध्रुव सगलानि जपेऊ हरि नाऊँ, पायऊ अचल अनूपम ठाऊँ।
27. अपितु अजामिलु गज गनि काऊ, भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ।
28. वेद पुरान संत मत एहू – सकल सुक्रत फल राम सनेहूँ।
39. कलियुग केवल नाम अधारा-सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा।

संकलित–
सोना वच्छानी, जयपुर



नाम महिमा के दोहे

1. नाम लेने का मजा जिसकी, जुबा पर आ गया।
वो जीवन मुक्त हो गया, चारों पदार्थ पा गया।।
2. हाथ काम मुख राम है, हिरदे सांची प्रीत।
दरिया गृहस्थी साध की, याही उतम रीत।।
3. कबीर क्षुधा है कूकरी, तन सो दई लगाय।
याको टुकड़ा डालकर, पीछे हरि गुण गाय।।
4. जाट भजो गूजर भजो, भावे भजो अहीर।
तुलसी रघुबर नाम में, सब काहू को सीर।।
5. राम नाम मनिदीप धरू, जीव्ह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहर हूँ, जौ चाहसि उजिआर।।
6. जब ही नाम हृदय धरयो भयो पाप को नास।
मानो चिनगी आग की पड़ी पुराने घास।।
7. एक भरोसा एक बल, एक आस विश्वास।
एक राम धनश्याम हित, चातक तुलसीदास।।
8. जब लग गज अपनो बल बरत्यो,
नेक सरयो नहीं काम।
निर्बल है बलराम पुकारयो, आयो आधे नाम।।
9. राम रामेति रामेति, रामे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम ततुल्यं राम नाम वरानने।
10. कबिरा सब जग निर्धना धनवंता नहिं कोय।
धनवंता सोई जानिये जाके राम नाम धन होय।।

संकलन : सदगुरु भजन मंडली
गुरुनानक कॉलोनी, जयपुर

भर भर पीयूँ नाम का प्याला

नाम-महिमा अप्रैल 2003

यह विशेषांक श्री गुरु महाराज जी का विशेष अहैतुकी कृपा का सूचक है। अक्सर साधक चाहता है। जब वह भजन पर बैठे, नाम सुमरन पर बैठे। तो भाव पूर्ण हो प्रार्थना पूर्ण हो ताकि हृदय रसपूर्ण तरीके से भजन कर सके। हमारा अनुभव है। हमने अपने सद्गुरुओं से सीखा। कि नाम सुमरन से पहले 15 मिनिट कोई नाम महिमा की कथा पढ़ ली जाये। नाम महिमा की चर्चा की जाये, तो हृदय शान्त एकाग्र हो जाता है, और मन भीग जाता है। जिससे भजन में रस आता है। भाव पूर्ण नाम सुमरन का असर बहुत अद्भुत होता है। गूँगा गुड़ खाये– कितना मीठा कैसे बताये, कुछ ऐसा हाल हो जाता है। सो यह विशेषांक, नाम की भरी गागर है। नामामृत का प्याला भर–भर के पीया जा सकता है। सो बस देर किस बात की है। सो उठो पाठक प्यारे जमाओ आसन, हर लेख रूपी प्रसाद को पाकर भीगे–भीगे मन से नाम सुमरन शुरू करें। ताकि श्री गुरु महाराज प्रेरित इस विशेषांक का पूरा–पूरा लाभ हो सके। सो गुरु महाराज जी ने तो बिखेर दिये अपने नामामृत कथाओं के अनमोल मोती। अब देखना यह है कौन–कौन भर पाता है अपनी झोली।

हम जब विद्यालय में पढ़ते थे। अध्यापक हमें पर्यायवाची शब्द लिखने को देते थे समानार्थी शब्द लिखवाते थे। जैसे जल = नीर, पानी कोई हमसे कहे कि नाम के समानार्थी शब्द लिखो ! तो मेरा मन कहता है लिखो !

नाम यानि सारे खजानों की चाबी। नाम यानि चमत्कार।
नाम यानि गुरुकृपा। नाम यानि शास्त्रकृपा।
नाम यानि प्रकृति कृपा। नाम यानि अहैतुकी कृपा।

नाम सुमरन = मास्टरकी हर जगह हिट, फिट नाम सुमरन करके कैसे कोई साधारण से असाधारण बनने लगता है। ये हम इस प्यारी सी कथा से समझेंगे।

राधा भाव के अवतार श्री–श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपना सर्वस्व कृष्ण को माना पर अनूठी बात उनकी धर्म पत्नी विष्णु प्रिया अपने पति को ही कृष्ण मानती थी। तब महाप्रभु कहते, प्रिये अपना मन कृष्ण चरणाविन्दो में लगाओ। तो हँसकर कहती – आपसे अन्यथा कोई कृष्ण हो तो उनमें मन लगाऊँ। मेरा मन तो आपके श्री चरणों के पराग कणों में लवलीन है। इतना प्यार करने वाली पत्नी सम्पूर्ण समर्पित भाव फिर भी चैतन्य महाप्रभु को वैराग्य हो गया। संसार की असारता प्रकट हो गई। और उन्होंने सन्यास धारण किया। पत्नी का त्यागकर उनका रोम–रोम कृष्ण नाम में रमण करने लगा। प्रेम के सभी सात्विक भावों से सुसज्जित चैतन्य महाप्रभु उन्माद युक्त दशा में श्री–श्री कृष्ण मय हो गये, और वो अद्भुत चमत्कारिक क्षण भी आ गये। चैतन्य महाप्रभु सशरीर कृष्ण में समा गये। दो ही भक्त हुये संसार में जो नाम रटते–रटते नामी से जा मिले। और सशरीर समा गये। आज तक तो यही सुना था कि वो मोहन मन चुरा लेता है। पर इनका तो शरीर भी चुरा के ले गया। ये प्यारे प्राणों से प्यारे भक्त थे।

मीरा और चैतन्य महाप्रभु ये प्रेम वालों के निराले ढंग ये नाम जपने वालों की निराली मस्ती आहा वाह वाह इसके सिवा कुछ कह पाना मुश्किल है। भक्त भगवान में समा जाये। ये तो फिर भी समझने वाली बात है। पर भक्त–भक्त में समा जाये ऐसी अनोखी भक्ति ऐसी ऊँची भक्ति की मात्र एक मिसाल है।

''विष्णु प्रिया''

पति ने त्याग दिया जीवन भर वापस न मिलेंगे पर कोई शिकायत नहीं। कोई प्रश्न भी नहीं। मन तो चला गया प्रियतम के साथ प्रश्न कौन करे शिकवा कौन करे। प्राण नाथ ने चुना– कृष्ण प्रेम का पथ। और विष्णु प्रिया ने चुना– पति प्रेम का पथ और मन को चस्का लगा दिया। कृष्ण नाम का। स्वांस स्वासं में नाम जप।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

और जब चैतन्य जा समाये कृष्ण में, वो तो जा मिले अपने पिया से, पर विष्णु प्रिया बिछड़ गई अपने पिया से, प्राण देह छोड़ने को व्याकुल होने लगे। तभी स्वप्न में आज्ञा की चैतन्य महाप्रभु ने घर के आंगन में जो आम का वृक्ष है। उससे हमारी प्रतिमा बनवाकर आंगन में स्थापित करवा दो। हम उसमें वास करेंगे। तुम अभी प्राण न त्यागो। इतनी कठिन आज्ञा। कोई प्यार में मिट जाना चाहे तो मिटने भी न दिया जाये।

हमारी एक सखी ने संतों से पूछा कि हमने श्री गुरु महाराज जी का एक दोहा पढ़ा है।

सत्गुरु बिछड़े रोवहीं पूरो प्रेम न जान।
कहे टेऊँ पूरो प्रेम वो, जो बिछड़त त्यागे प्राण।।

जो गुरु के बिछड़ने पर रोते हैं वो भी पूरे प्रेमी नहीं है। पूरे प्रेमी तो वो हैं जो बिछड़े और उनके प्राण छूट जायें। सो इसका मतलब तो ये ही है। हम पूरे प्रेमी नहीं हैं क्योंकि हम तो मरे ही नहीं। अभी तक जिंदा है। भले ही बिछड़ने का हजार गम है, पर जिंदा तो है न, तो संतों ने जवाब दिया। गुरु बाबा की बात अटल सत्य है। पर सोचो ऐसे सभी प्रेमी मर जायें। तो गुरु बाबा की इतनी मेहनत ये मण्डल कैसे चलेंगे। राधा जी से कृष्ण बिछड़े तो, राधा नहीं मरी। मरने जैसी अवस्था में ही थी। पर प्राण नहीं छोड़े क्योंकि मैं प्राण छोड़ दूँगी, तो कृष्ण का दिल दुखेगा। चाहे मरणासन्न जीऊँ– पर कृष्ण का दिल न दुखाऊँगी। ऐसे दीवाने करोड़ों में कोई–कोई होते हैं जो प्रियतम की खुशी के लिये मर–मर कर भी जी जाते हैं। सो विष्णु प्रिया ने आज्ञा स्वीकार की और उन्होंने संकल्प लिया। उतने ही दानों का भोजन पकाऊँगी। जितना नाम स्मरण करूँगी। सुबह चावल लेकर बैठती नाम का जाप प्रारम्भ करती।

एक बार मंत्र उच्चारण करती–

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

और एक चावल अलग रख देती और भोजन के समय तक जितने चावल अभिमंत्रित होते उन्हें पकाती फिर चैतन्य महाप्रभु जी को भोग लगाती फिर उन्हें चार भागों में बाँट देती एक चैतन्य महाप्रभु के शिष्यों में, एक गाय माता, एक उनकी निज दासी एक भाग स्वयं पाती। इतना नाम जप इतनी लगन नाम जप में इतनी श्रद्धा ! छोटे हरिदास जी प्रत्येक दिन दो लाख नाम जप करते थे। इतना शौक ! चैतन्य महाप्रभु स्वयं परम नामी परम भजनीक थे। हर समय उनके होठों पर नाम चलता रहता था। ज्यों मक्खी गुड़ में लिपटी रहती है त्यों उनके अधरों को कृष्ण नाम का गुड़ मिला हुआ था। विष्णु प्रिया भी तो उन्हीं की अर्धांगिनी थी। और कुछ समय बाद उस महामिलन का क्षण आ गया। प्रातः से ही विष्णुप्रिया कुछ उन्मादित प्रफुल्लित थी। मदहोश सी खिल रही थी। उनकी आँखें नाम जप में लीन अपने कक्ष में बैठी थी। उनकी निज सेविका उनके समीप ही विराजमान विमुग्ध हो उन्हें निहार रही थी। अचानक उठी और भागी और मन्दिर के पट खुल गये। दोनों बाँहें फैलायें सुध–बुध भूली सी बावली सी अवस्था में दौड़ पड़ी अपने पिया से महामिलन करने और निज सेविका आश्चर्यचकित विस्फारित नेत्रों से अवाक सम्मोहित सी देखती रह गई। पर देखते देखते विष्णु प्रिया जा समायी अपने पिया की बाँहों में, सशरीर, और पट बन्द हो गये। भक्त भगवान में समाये। ये तो हजम हो भी जाये पर भक्त भक्त में समा जाये। हमारी इस तुच्छ बुद्धि से बात ऊपर ही निकल जाती है।

नाम जप से इतनी अभिन्नता इतनी एकाकारता आ जाती है, कि मन से मन प्राणों से प्राण आत्मा से आत्मा का ही नहीं शरीर भी शरीर में समाये। धिक्कार है मेरे मन फिर भी तू नाम नहीं जपता लानत है मेरे मन फिर भी तू विषय की विष्ठा को चाहता है।

हे नाथ हे करुणा निधान ! कृपा कर इस मन की कठोरता को पिघला दे। इस मन को नाम का चस्का लगा दे। ताकि मन नाम जपते जपते नम से नम होते होते नमन (न+मन) हो जाये ओर मोहन से महामिलन हो जाये। जब साधक नाम जप करने लगता है तो नियम बनाता है कि मैं इतना समय नाम जप करूँगा। अच्छा भी है ऐसा करना भी चाहिये। संतों ने भी कहा है।

नेम जगावे प्रेम को, प्रेम जगावे जीव।
जीव जगावे प्यास को, तो आन मिलावे पीव।।

पर कभी–कभी उल्टा हो जाता है। नाम जप का नियम मात्र दैनिक क्रिया बनकर रह जाता है। न तरंग न उमंग कोई आल्हाद नहीं प्रसन्नता नहीं भावहीन, जैसे आसन पर बैठे रूखे सूखे, उठे तो भी रूखे सूखे, जैसे मजदूर मालिक की नौकरी बजाते हैं। भाव शून्य, फिर भजन का रंग बदल जाता है। फिर कहीं भी बात चलेगी। मेरा नियम नाम जप का भंग हो जाये, सवाल ही नहीं उठता। एक घंटा करना है मतलब करना है। डींगे हाँकना प्रारम्भ में ये पता ही नहीं समय तो चार घंटे था। 3 घण्टे तो टी.वी. के प्रेम में गये। सारी दुनिया भगत माने, आँखे मूंदे बगुला भक्ति कर ली है।

नेम तो बना भजन का नाम का। मन बदला कि नहीं भाव बड़े कि नहीं। हृदय रोमान्चित होता हैं कि नहीं स्वतः प्रार्थना स्फुरित होती है कि नहीं ?

भगवान का भजन गाते समय भाव पर ध्यान होना चाहिये– गायकी पर नहीं। हम कितनी अच्छी तरह गाते हैं। ये मूल्यवान नहीं है। हम कितने प्रार्थनापूर्ण, भावपूर्ण गाते हैं ये मूल्यवान है। अच्छे गाने से परमात्मा मिलते तो आज सारे गायकों को परमात्म प्राप्ति हो चुकी होती हम चूक जाते हैं।

10–50 लोग भजन सुनने वाले हो तो हम भूल जाते हैं। भजन भगवान के लिये गाना है महिमा उसकी मे डूबना है। पर हम कहीं और डूब जाते हैं। एक संत थे। उनका नियम था वे रोज गिनकर एक लाख नाम जप करते। हिसाब किताब के बडे पक्के न कम न ज्यादा। एक बार भगवान श्री

कृष्ण के दर्शनों के लिये वृन्दावन गये सो रास्ते में देखा एक गोपी तीन मटके दही माखन से भरकर बेचने निकली है। और आवाजें दे रही है।

अरे लाला.................. माखन ले लो.......................... ।

दही ले लो........................ ।

पता नहीं संत को क्या हुआ वो गोपी के पीछे पीछे चलने लगे गोपी बड़ी अलबेली थी न किसी को नाप के दे। न किसी से गिनकर पैसे ले। कभी आँखें बंद तो कभी खुली कभी हँसे तो कभी बिल्कुल चुप।

कभी कहे माखन ले लो।

कभी कहे मोहन ले लो।।

संत तो बावला हो गया। गोपी न हुई पहेली हो गई। ये हो क्या रहा है। सुबह से सांझ हो गई पर संत भी चुपचाप गोपी का पीछा कर रहा था। तभी अचानक सामने के वृक्ष के क्षुरमुट में से दमकता हुआ छम–छम करता गोप ग्वालों से किलोल करता नटखट कृष्ण आ निकला। बस गोपी ठगी सी मूर्ति सी उस अनुपम छबि को आनन्द पूर्ण अश्रुओं से अपने नयनों को सुशोभित कर निहारने लगी। और उसके हाथों से मटकियाँ छूट गयी, सर वाली भी कमर वाली भी बचा हुआ सारा माखन दही फैल गया। कृष्ण अपनी टोली के साथ छम–छम करते निकल गये। थोड़ी देर बाद गोपी सचेत हुई और मुस्कराई और वापस जाने लगी। संत ने सारा दृश्य देखा। आश्चर्य विमुग्ध हो गया। आकर गोपी से पूछा – तुम्हारी मटकी टूट गई दही माखन बिखर गया। सारा हिसाब किताब खराब हो गया। गोपी हँसी बोली। संत जी ये माखन ये दही उसके मिलने तक था। हिसाब किताब माखन दही का नहीं है। गलियों में बेचने निकलूँ सारे गाँव में कहीं न कहीं प्यारा मिलेगा कि नहीं। मिल गया। फिर क्या बेचूँ। अच्छा हुआ खुद ही मटकी टूट गई। वर्ना मटकी का क्या हिसाब।

संत पानी पानी हो गया। प्रेम भी कोई गिनके किया जाता है। प्रेम भी कोई हिसाब किताब से किया जाता है। और बदल गया हृदय रागझ में आ गया, राज। सो नाम जपें खूब जपें पर हिसाब किताब से नहीं नेग निभाने के हिसाब से नहीं। उसे पाने के हिसाब से प्रीत बढ़ान, निभाने के हिसाब से नाम में डूब जाने के लिये, नामी से एक तार हो जाने के लिये ना कुछ हो जाने के लिये। एक ही आधार है कलियुग में एक ही सहारा है।

नाम नाम नाम

नाम रस की उत्कण्ठ अभिलाषी

✍ **राधा ठारानी**, ग्वालियर

इन्दौर में पूज्य स्वामी मुरलीधरजी महाराज, स्वामी गंगारामजी महाराज, स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज का वर्सी महोत्सव

25 अप्रैल से 29 अप्रैल 2003 तक

कार्यक्रम :

25 अप्रैल शुक्रवार **2003** :	प्रातः **8** से **10** बजे तक सत्संग, हवन, झण्डा वन्दन और प्रेम प्रकाश ग्रन्थ साहब का आरम्भ होगा एवं शाम **4** बजे से **7** बजे तक सत्संग।
26 अप्रैल शनिवार **2003** :	प्रातः **8** से **10** बजे तक सत्संग एवं सायं **4** बजे से **7** बजे तक सत्संग।
27 अप्रैल रविवार **2003** :	एकादशी प्रातः **5** बजे, प्रभात फेरी प्रातः **8** से **10** बजे तक सत्संग एवं दोपहर **11** बजे तक सन्तों का भजन, सांय **4** बजे से **7** बजे तक सत्संग।
28 अप्रैल सोमवार **2003** :	प्रातः **6** बजे मूर्ति पूजा पोशाक पहरान, प्रातः **8** से **10** बजे तक सत्संग एवं दोपहर **12** बजे पूज्य (भेख मण्डल) सिन्धी साधु समाज का भोजन।
29 अप्रैल मंगलवार **2003** :	प्रातः **8** से **11** बजे तक सत्संग प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहब का भोग एवं आम भण्डारा। सांय **4** से **7** बजे तक सत्संग एवं पल्लव पाकर उत्सव का समापन।

आयोजन स्थल : स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, 4 कॉटजू कॉलोनी, इन्दौर (म.प्र.) फोन : 0731–2468140, 2300140

सेवा में, **शम्भूलाल प्रेम प्रकाशी**

आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा निःसृत नाम महिमा

दोहे

1. कह टेऊँ नित कीजिये राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं जप तप संयम नेम।।
2. राम जपन में जीभ पुन कर पद दूखे नाहिं।
टेऊँ दाम न लगत कछु, क्यों नहिं जपते ताहिं।।
3. राम नाम उलटा जपे बालमीक भये पार।
कह टेऊँ तुम ना तरहिं सुलटा राम उच्चार।।
4. अर्ध राम का जाप जप गज का भया उधार।
कह टेऊँ तुम ना तरहिं पूरन राम पुकार।।
5. राम नाम सत्य बचन पुन मधुर न बोलत जोय।
टेऊँ दूजे जन्म में सो, नर गूंगा होय।।
6. कर माला मन ध्यान धर रसना से रट राम।
कह टेऊँ इस जाप से पाओ हरि का धाम।।
7. कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तिंह सुमर के पाओ मोक्ष द्वार।।
8. गंगा हरती पाप को शशि हरता है ताप।
पाप ताप दोनों हरे टेऊँ हरि का जाप।।
9. मोती बिन शोभत नहीं ज्यों सीपी जग मांहि।
टेऊँ त्यों हरिनाम बिन जिह्वा शोभत नांहि।।
10. दीपक बिन शोभत नहीं जैसे सुन्दर धाम।
तैसे मुख शोभत नहीं टेऊँ बिन हरि नाम।।
11. काया गढ़ को जीत कर मारो वैरी पांच।
कह टेऊँ हरि भजन कर मेटो जम की आंच।।
12. काम करो हरि भजन का मीत करो भगवान।
संत वचन संगी करो टेऊँ हो कल्यान।।
13. कह टेऊँ हरि नाम जब, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक।।
14. हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निद्रा माहिं।
कह टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नाहिं।।
15. राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग।।
16. गुरु मंत्र बिन मनुष्य का, पितर पिण्ड नहिं लेत।
कहे टेऊँ गुरु मन्त्र बिन, देव न आदर देत।।
17. लेन मन्त्र को जात जब, पित्र नर्क छुट जात।
गुरु मंत्र ले जपत जब, पित्र स्वर्ग तब पात।।
18. गुरुमंत्र अभ्यास बिन, करत किया जो और।
कहे टेऊँ तिस जीव का मन नहिं पावत ठौर।।
19. गुरुमंत्र जो जपत नहिं, करत गुरु का त्याग।
कहे टेऊँ सो नर्क में, रहत सदा मन्द भाग।।
20. टेऊँ नौका नाम की, करूणाधार गुरु होय।
बिना श्रम भव सिन्धु से, पार जात सब कोय।।
21. गुरु बिन जुगति न मिलत है, गुरू बिन नहिं प्रकाश।
कहे टेऊँ गुरु नाम बिन, वृथा है सब श्वास।।
22. जो जन गुरू की शरन ले, सुमरे हरि का नाम।
तांको माया ना लगे, कहता टेऊँराम।।
23. करण धार गुरु है वही, नाम नाव जिस पास।
टेऊँ भव से पार कर, जो आवे कर आस।।
24. जप नाम गुरुदेव का, धर गुरु चरने ध्यान।
अर्थ विचारे शब्द का, पाओ ब्रह्म विज्ञान।।
25. कहे टेऊँ गुरू मंत्र को, जपले बारम्बार।
जगत भाव को भूल कर, पाओ मोक्ष द्वार।
26. टेऊँ सोऽहम् जाप जप, गाफिल कबहुं न होय।
इक-इक श्वास अमोल है, ताहिं न वृथा खोय।।
27. सत्गुरु के निज नाम का, हृदय कर विचार।
कहे टेऊँ अविधा मिटे, पाओ मोक्ष द्वार।
28. सत्गुरु के निज नाम को, जानो सत्गुरु रूप।
कहे टेऊँ तिंह सुमर के, पाओ शुद्ध स्वरूप।।
29. सत्गुरु के निज नाम को, सुमरो श्वासों श्वास।
कहे टेऊँ जिस सुमरते, टूटे जम की फास।।
30. सत्गुरु के निज नाम को, जानो अपना मीत।
कहे टेऊँ तिन लोक में, संग रहत जो नीत।।

अलौकिक निधि नाम

नाम-महिमा अप्रैल 2003

> रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें।।
> *(रामचरित मानस 1121/5)*

एक भोला-भाला जिज्ञासु किसी संतजीं से बार-बार आग्रह किया करता था कि मुझे भी दीक्षा-शिक्षा दीजिये, जिसका अनुसरण करके मेरा भी परम कल्याण हो सके। संतजी समयाभाव अथवा उसकी पात्रता में कसर जानकर विलम्ब कर रहे थे। कहते कि आते-जाते रहो, कथा-कीर्तन-सत्संग का लाभ करते रहो, कभी समय-सुविधा देखकर मंत्र दे दूँगा। जिससे तुम्हारा परम कल्याण हो जायेगा।

बहुत दिनों तक आते-जाते उस जिज्ञासु की व्याकुलता बहुत बढ़ी तो एक दिन रोकर बोला कि गुरुजी ! मुझे गरीब और अनपढ़ जानकर क्यों ठुकरा रहे हैं ? कृपा कर दीजिये। संत जी ने उसकी दीनता देखकर, सीधा-सरल हरिनाम का उपदेश कर दिया क्योंकि वह साक्षर अथवा सुशिक्षित नहीं था, जो मंत्र का विधि-विधानसहित जप-अनुष्ठान आदि कर सके, उन्होंने उससे कहा कि यह परम कल्याण कारक दिव्य परम धन है। जतन से सतत जप और ध्यान करते रहोगे तो तुम्हारा परम कल्याण हो जायेगा। उस शिष्य को इससे विशेष प्रसन्नता नहीं हुई। सोचा करता कि यह 'राम-कृष्ण' एवं 'हरि' आदि नाम तो प्रायः सभी लोग जानते हैं और उच्चारण करते रहते हैं, इसमें कौन बड़ी विशेषता है, जो इतनी बड़ाई किया करते थे। इन्होंने तो मुझे इतने दिनों तक व्यर्थ में ही दौड़ाया और साधारण 'राम-नाम' सुनाकर टरका दिया। इसमें कौन-सी विशेषता है ? इससे क्या होने वाला है ? इस प्रकार सोचते-विचारते उसे कुछ समय बीत गया। एक बार अपने इस भावको रोक नहीं सका और गुरुदेव से बोला कि गुरुजी ! इतने दिनों तक मुझे दौड़ाते रहे, आश्वासन देते रहे और अब मात्र 'राम-नाम' ऐसा कहकर टरका दिया। इस 'राम-नाम' में कौन-सी ऐसी विशेषता अथवा महत्त्व है, जिसकी आप इतने दिन से बड़ाई कर-करके सर्वोपरि कल्याणकारक तत्त्व बताया करते थे। यह 'राम-नाम' तो गली-गली के लोग जानते हैं और बात-बात में प्रयोग किया करते हैं। गुरुदेव ने उसके हृदय की यह ग्लानि मिटाने और 'राम-नाम' का महत्त्व व्यक्त करने के लिये अपनी झोली में से एक रत्न निकालकर दिया और कहा कि इसे लेकर बाजार में जाओ तथा जहाँ-तहाँ कुछ खास-खास लोगों से इसकी कीमत पूछकर आओ। बेचना नहीं, केवल कीमत पूछ-पूछकर आ जाना।

शिष्य उस पत्थर को लेकर चला। सोच रहा था कि इस साधारण से पत्थर की कीमत क्या हो सकती है? मेरी समझ से तो एक पैसे की भी कीमत का नहीं। फिर भी गुरु जी कह रहे हैं तो चलो, दो-चार जगह पूछने में अपना क्या लगता है ? सर्वप्रथम एक साग-सब्जी बेचने वाली से पूछा कि इस पत्थर की कीमत तुम क्या दे सकती हो ? उसने कहा कि चवन्नी। इसने सोचा कि मैं जिसे एक कौड़ी के लायक भी नहीं समझता था, चलो, कम से कम एक चवन्नी के लायक तो माना गया। ऐसा सोचते हुए आगे बढ़कर एक परचूनी बनिया से उस पत्थर की कीमत पूछी तो उसने एक रुपया कहा। यह चकित होकर सोचने लगा कि इसमें कुछ विशेषता होगी, तभी तो यह बनिया एक रुपया देने को कह रहा है। उससे भी आगे बढ़कर एक सोनार से उस पत्थर की कीमत पूछी तो उसने एक सौ रुपये देने को कहा। जैसे-जैसे कीमत बढ़ रही है, वैसे-वैसे उसका आश्चर्य बढ़ रहा है। गनीमत थी कि गुरुजी ने उसे बेचने की मनाही कर दी थी, नहीं तो एक सौ रुपये की कीमत पर लोभ में आकर बेच देता। वहाँ से भी आगे बढ़कर एक जौहरी से पूछा कि इस पत्थर की कीमत आप क्या दे सकते हैं ? जौहरी बोला कि एक हजार रुपये। उसने कहा कि बेचना नहीं है। आगे जाकर नगर के सबसे बड़े

पारखी जौहरी से पूछा तो उस जौहरी ने कहा कि मैं इस नगर का सबसे बड़ा धनाढय जौहरी हूँ, फिर भी मेरी सारी सम्पत्ति इसकी कीमत का दशांश भी नहीं होगी। ऐसा रत्न आप कहाँ से लाये हैं ? यह तो अलौकिक निधि है। इसे बेचियेगा नहीं, नहीं तो आप धोखा खाकर घाटे में पड़ जाइयेगा। वह जिज्ञासु उस बड़े जौहरी को धन्यवाद देते हुए रत्न लेकर आश्रम पर लौटा तो गुरु जी ने विवरण पूछा। उसने चकित होते हुए सारा ब्यौरा बताकर कहा कि गुरुदेव ! मैं जिसे एक कौड़ी के लायक भी नहीं समझता था, उसकी तो इतनी कीमत सिद्ध हुई कि शहर का सबसे बड़ा जौहरी भी इसकी न्यौछावर चुकाने में अपने को असमर्थ बता रहा है। अब गुरुजी ने समझाया कि वत्स ! जो इस रत्न की महिमा को नहीं जानते उन्होंने चवन्नी, रुपया, सौ रुपये, हजार रुपये तक अनुमान किया। तुमने तो एक कौड़ी के लायक भी नहीं समझा था, किन्तु इसे पहचानने वाला पारखी जौहरी मिला, तब इसका सही मूल्यांकन हुआ। इसी प्रकार 'राम–कृष्ण' एवं 'हरि' इत्यादि जो प्रभु के प्यारे नाम हैं, इनकी महिमा नहीं जानने के कारण साधारण लोग इसे कौड़ी के बराबर भी नहीं समझते हैं, किन्तु भगवान् शंकरजी, श्री शुकदेवजी, श्री हनुमानजी श्री सनक आदि सरीखे बड़े–बड़े पारखी जौहरी लोग जो भगवन्नाम की महिमा को जानने वाले हैं, उनका कहना है, इसके सिवा कुछ भी नहीं है। जिसने विश्वास करके तर्क रहित होकर भगवन्नाम का आश्रय लिया, वे बड़े भाग्यशाली, प्रभु के कृपा पात्र और प्यारे हो गये। तुम भी तर्क–वितर्क छोड़कर निष्ठापूर्वक 'राम–नाम' का आश्रय लो। अर्थानुसन्धानपूर्वक निरन्तर जप करते रहो तो तुम्हारा कल्याण अवश्य हो जायेगा।

कीर्तनीयः सदा हरिः

सबमें भगवान् को देखने वाला तथा सदा भगवान् के नाम–गुण का कीर्तन करने वाला भक्त कितना और कैसा विनम्र तथा सहिष्णु होता है, उसका स्वरूप श्री चैतन्य महाप्रभु ने बतलाया है–

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना। अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।

तिनका सदा सबके पैरों के नीचे पड़ा रहता है, वह कभी किसी के सिर पर चढ़ने की आकांक्षा नहीं करता। हवा जिधर उड़ा ले जाय, उधर ही चला जाता है, पर भक्त तो अपने को उस नगण्य तृण से भी बहुत नीचा मानता है, वह जीव मात्र को भगवान् समझ कर उनकी चरणधूलि लेता है, उन्हें दण्डवत्–प्रणाम करता है और उनकी सेवा में उनके इच्छानुसार लगा रहता है।

वृक्ष कड़ी धूप सहता है, आँधी और घनघोर वर्षा का आघात सहता है, काटने–जलाने वाले को भी छाया देता है, स्वयं कटकर लोगों के घरों की चौखट, किवाड़, शहतीर, खंभे बनकर उनको आश्रय और रक्षा देता है, जलकर भोजन बनाता है, यज्ञ सम्पन्न करता है, मरे हुये को भी जलाकर उसके अन्त्येष्टि संस्कार में अपने को होम कर देता है। सभी को अपने पुष्पों की सुगन्धि देता है, पत्थर मारकर चोट पहुँचाने वालों को पके फल देता है। इसी प्रकार भक्त संत भी अपना अपकार करने वाले को अपना सर्वस्व देकर लाभ पहुँचाता है।

मान मीठा विष है, इसे बड़े चाव से प्रायः सभी पीते हैं। संसार के पद–परिवार और धन–सम्पत्ति का परित्याग करने वाले भी मान के भूखे रहा करते हैं; परन्तु भक्त स्वयं अमानी रहकर जिनको कोई मान नहीं देता, उनको भी मान देता है।

सदा कीर्तन करने योग्य कुछ है तो वह भगवान् का नाम गुण ही है, भक्त सदा कीर्तन करता है। और उस कीर्तन के प्रभाव से उसमें उपर्युक्त दैन्य आ जाता है अथवा उपर्युक्त दैन्य के प्रभाव से ही वह सदा कीर्तन करने योग्य होता है।

"कलयुग केवल नाम आधारा"

नाम-महिमा अप्रैल 2003

मेरे हिसाब से कलयुग में नाम तत्व को जिसने समझ लिया, वह धन्य हो जायेगा। नाम जपने वाले व्यक्ति में वो नशा वो खुमारी दिखाई देती है, जो किसी आम व्यक्ति की आँखों में आ नहीं सकती। हर साधक को नाम जप की चाहत जबरदस्त होनी चाहिये। उसी से भगवत् प्राप्ति सम्भव है। जो भगवान का अखण्ड नाम जपते हैं फिर प्रेम में ऐसी लीला हो जाती है, कि भगवान उस भक्त का नाम जपते हैं।

चित्रकूट जैसे रमणीक तीर्थ में प्यारे संत अशोक प्रकाश जी ने बड़ी अद्भुत राम चरित्र की घटना सुनायी। कि अहीरावण जब रामजी और लक्ष्मण को कैद करके ले गया, तो उसने अपने सैनिक से कहा रामजी से पूछो ,वो अपने अंतिम समय में किसे याद करना पसंद करेंगे। तो उनका जवाब था– भरत जी को। एक दिन पूछा था किसी ने– सब आपका नाम जपते हैं आपका भजन करते हैं। रामजी आप किसका नाम जपते हो। किसका सुमरन करते हो तब भगवान श्रीराम जी ने गद्गद् कण्ठ से कहा था– भरत जी का सुमरण करता हूँ। कितना धन्य भागी है। जिसके नाम का सुमरन उनके इष्ट करें।

धन्य भागी कहना भी कम है। हर भाग्य उनके भाग्य को नमन करता होगा। हम इस धरती पर जो भी क्रिया करते हैं। सारे वायुमण्डल में उस क्रिया के परमाणु फैल जाते हैं और बहते रहते हैं। इसलिये जिन गुफाओं में सिद्ध महापुरुष नाम स्मरण करते थे। फिर उनमें मिट्टी भरकर बन्द कर देते थे और जब कोई अधिकारी शिष्य देखते उसे उस गुफा में भजन करने की आज्ञा देते। शबरी के गुरु ने शबरी को अपनी झोपड़ी आसन और माला दी थी। और स्वयं कहीं और चले गये थे वरदान देकर, तुम यहीं भगवान राम का नाम, भजन करो। प्रतीक्षा करो। एक दिन भगवान राम स्वयं चलकर तुम्हारे पास आयेंगे। ऐसा मेरा आशीर्वाद है। तो जो प्रेम भरत ने किया राम से, जो प्रेम गोपियों ने किया कृष्ण से वो परमाणु वो वायब्रेशनस आज भी इस धरा पर बह रहा है। काश वो परमाणु हमें लग जायें। काश वो वायब्रेशन इस निष्ठुर मन की निष्ठुरता को भंग करें। तो हम भी ऐसी प्रीत ऐसा नेह कर पायें, कि हमारे प्यारे सद्गुरु देव जब हमारा नाम अपनी जुबां से ले तो उनका हृदय गद्गद् हो जाये। उनकी नूरानी आँखें खुशी से चमक जायें। काश काश ऐसा हो जाये। तो जीवन धन्य हो जाये।

तू दूर सही, मजबूर सही, पर याद हमारी तो आती है। सच कहता हूँ, तुम नाम वहाँ पर लेते हो आवाज यहाँ पर आती है। अब हमारे इश्क का कुछ और ही अंदाज हो हमको उन पर नाज हो, उनको हम पर नाज हो।

नाम जप के सिवा इतना गहरा प्रेम होना संभव नहीं। प्रेम तर्क वितर्क नहीं जानता प्रेम दिमाग की बात नहीं हृदय की बात है। वो हृदय जब नाम के साथ नामी के तादात्म्य में धड़कता है, तो एकाकार होता जाता है। और ऐसे भक्तों के भगवान खुद काम करते हैं। एक भोला भाला भक्त (वृतांऊ) उनकी नाम निष्ठा बड़ी दृढ़ थी। नाम के अलावा कुछ सूझता ही नहीं था। एक दिन माँ ने एक रूपया दिया बाजार से चादर खरीद लाओ, साथ में एक बुजुर्ग भी भेज दिया। राह में एक गरीब सर्दी से सिकुड़ रहा था। बस उसे भोजन खिला, चादर पहिनाकर वहीं से जंगल भाग गये। और तन्मय होकर नाम स्मरण करने लगे। चित्त की वृतियों को तदाकार रूप में निराकार से जोड़ दिया।

उस बुजुर्ग ने आकर माँ को सारी बात बताई। माँ परेशान होने लगी। भगवान से प्रार्थना करे। जंगल में न जाने कितने खतरनाक जानवर रात होने को आई प्रार्थना

शुरू हो गई। बैकुण्ठ में खलबली मच गई भगवान स्वयं राजा का भेष बना उसकी माँ के पास ढेर सारा सीधा सामान ले आये और आश्वासन दिया। ये सामान वृतांऊ ने भिजवाया है, वो सकुशल है और जल्दी घर आ जायेंगे। माँ हैरान हो गई। एक रुपये में इतना सामान वो भी इतना अच्छा, ऐसे भगवान रक्षा करते हैं स्वयं अनके कार्य पूरे करते हैं।

बस चिन्ता, दुख छोड़कर एक बार पूरी तरह से उनकी शरण मिल जाये। हम टी.वी. के नाटकों को नाटक समझते हैं। पर जिंदगी के नाटक को सच्चा समझते हैं।

नाटक = ना + टिक

जो ना टिके पर हम अटक जाते हैं। नाटक

ना + अटक

जिंदगी के नाटक में ना अटक पर हम तो फाँसी के फन्दे जैसे फँसा के बैठे हैं। नाम सुमरण के बिना सच्चा जागरण नहीं होगा। सो हे मन जाग सत्संग कर सारे शुभ कर्मों से कुछ–कुछ फायदा होगा। पर नाम सुमरन से पूरा लाभ हासिल होगा।

हरि सुमरन से हेत करो तुम फुरना सर्व निवारे।
हरि सुमरन का अमृत पीकर पाओ मोक्ष द्वारे।।

''सत् चित आनन्द ब्रह्म व्यापक नाम रूप आधार है'' विचार करना चित्त की सभी वृतियों को सिवाय नाम के थिर नहीं किया जा सकता है। सबका आधार नाम ही है। **5** मिनिट से शुरू करें। फिर बढ़ाते जायें। फिर एक समय ऐसा आयेगा सिमरन करना नहीं पड़ेगा। जाप करना नहीं पड़ेगा जाप होगा। अपने आप होगा। जिसे अजपा जाप कहते हैं। फिर जहाँ भी है लेटे हैं बैठे हैं सो रहे, खा रहे हैं। जग रहे हैं। वो गुनगुन अन्दर चलती रहेगी। बस हमारा प्रयास पूरा हो। जो नाम नहीं जपता वह व्यक्ति योग्य कहे जाने के काबिल नहीं है। कितना होशयार हो बेकार है।

कोई हमारा छोटा सा काम करता है, हम धन्यवाद देते हैं। ऐसे ही नाम सुमरन बहुत अहो भाव धन्यवाद भाव से करना चाहिये। जो नाम सुमरन को अपना आधार बनाता है, वो ही परमात्मा रूपी लक्ष्य तक पहुँच पाता है।

पूजा, ग्वालियर

नाम-माहात्म्य

राम–नाम के प्रताप से पत्थर तैरने लगे, राम–नाम के बल से वानर–सेना ने रावण के छक्के छुड़ा दिये, राम–नाम के सहारे हनुमान् ने पर्वत उठा लिया और राक्षसों के घर अनेक वर्ष रहने पर भी सीता अपने सतीत्व को बचा सकी। भरत ने चौदह साल तक प्राण धारण कर रखा; क्योंकि उनके कण्ठ से राम–नाम के सिवा दूसरा कोई शब्द न निकलता था। इसलिये तुलसीदास ने कहा कि कलिकाल का मल धो डालने के लिये राम–नाम जपो।

इस तरह प्राकृत और संस्कृत दोनों प्रकार के मनुष्य राम–नाम लेकर पवित्र होते हैं, परन्तु पावन होने के लिये राम–नाम हृदय से लेना चाहिये। मैं अपना अनुभव सुनाता हूँ। मैं संसार में यदि व्यभिचारी होने से बचा हूँ तो राम–नाम के बदौलत। मैंने दावे तो बड़े–बड़े किये हैं, परन्तु यदि मेरे पास राम–नाम न होता तो तीन स्त्रियों को बहन कहने के लायक न रहा होता। जब–जब मुझ पर विकट प्रसंग आये हैं, मैंने राम–नाम लिया है और मैं बच गया हूँ। अनेक संकटों से राम–नाम ने मेरी रक्षा की है। अपने इक्कीस दिन के उपवास में राम–नाम ने ही मुझे शान्ति प्रदान की है और मुझे जिलाया है। इस तरह राम–नाम के गीत गाने के लिये यदि कोई मुझसे कहे तो मैं सारी रात गाया करूँ। सो यदि आप अपने को दुःखी और पतित मानते हों और हम सब पतित हैं तो सुबह, शाम और सोते समय राम–नाम का रटन करो और पवित्र होओ।

–**महात्मा गाँधी जी**

संत श्रीनामदेव जी की रामनाम भक्ति

'राम'–नाम की महिमा इतनी बड़ी, इतनी श्रेष्ठ है कि जिसके सामने संसार की प्रत्येक नाशवान् वस्तु तुच्छ है। नामदेव 'राम'–नाम की महिमा गद्‌गद होकर मुक्तकण्ठ से गाते हैं।

संतशिरोमणि नामदेव जी महाराज के जीवनकाल में एक ऐसी चमत्कारिक घटना भी घटी जिसने यह सिद्ध कर दिया कि 'राम' नाम के साथ संसार की कोई वस्तु तौली नहीं जा सकती। यह घटना इस प्रकार है–

पंढरपुर में एक साहूकार अपने शरीर के वजन के बराबर द्रव्य तौलकर ब्राह्मणों तथा दूसरे याचकों को देता था। एक बार उसके मन में विचार आया कि नामदेव भगवदभक्त होकर गरीब और कुटुम्बवत्सल है तो उसे भी कुछ द्रव्य दे देना चाहिये। साहूकार ने मन में यह विचार कर श्रीनामदेवजी को बुलवाया और अपना हेतु प्रकट किया। श्रीनामदेव जी ने कहा कि 'मैं भिक्षुक नहीं हूँ इसलिये तुलादान का हिस्सा लेने की मेरी इच्छा नहीं है तथा मैं समझता हूँ कि श्रीविट्ठल (राम) की कृपा से मेरे पास ऐसा कुछ अलौकिक धन है कि उसके सामने आपकी यह सम्पत्ति कुछ भी नहीं है। यह सुनकर साहूकार ने कहा– 'ऐसा कैसे हो सकता है ? तब नामदेव जी ने कहा कि 'तुम्हारी और हमारी सम्पत्ति की तुलना करने से इस बात का निर्णय हो जायेगा।' ऐसा निश्चय होने पर साहूकार ने अपनी कुछ सम्पत्ति तराजू के एक पलड़े पर रख दी और नामदेव जी ने एक तुलसी पत्र पर 'राम'–नाम का पहला अक्षर 'रा' लिखकर दूसरे पलड़े पर रख दिया। उस समय तुलसीपत्र का पलड़ा नीचे बैठ गया और सम्पत्ति का पलड़ा ऊपर उठ गया। फिर साहूकार ने और जो कुछ धन उसके पास था वह सब उस पलड़े पर लाकर रख दिया, परन्तु तुलसीदल का पलड़ा किंचित् भी ऊपर नहीं उठा। तब साहूकार ने अपना दान, धर्म, तीर्थयात्रा इत्यादि का पुण्य उस पलड़े पर चढ़ाया तो भी उसकी तुलना नहीं हुई। यह देखकर वह साहूकार अत्यन्त चकित तथा गर्वरहित होकर श्रीनामदेव जी की शरण आया और उनकी कृपा तथा समागम से कृतार्थ होकर अन्त में सद्‌गति को प्राप्त हुआ।

अतः स्पष्ट है कि 'राम'–नाम की बराबरी धन, तप, तीर्थ, दान भी नहीं कर सकते। 'राम'–नाम की महिमा सभी सन्तों ने सहर्ष स्वीकार की है। परमार्थ के अध्यात्मपथ में सभी सिद्धों, साधकों और संतों के समान अनुभव होते हैं। संतों का धन केवल 'राम'–नाम ही है।

रामनाम मेरा पूँजी धनाँ। जो पूँजी मेरौ लागौ मना।।
यह पूँजी है आगम अपार। ऐसा कोई न साहूकार।।
साहकी पूँजी आवै जाई। कबहूँ आवे मूल गँवाई।।
जालौ जलै न कोई खाई। राजा दण्डे न चोर लै जाई।।
अलख निंरजन दीनदयाल। नामदेव का धन ही गोपाल।।

श्रीनामदेव जी तो यहाँ तक कहते हैं कि 'राम'–नाम के स्मरण से सभी कलंक धुल जाते हैं तथा स्मरण करने वाला पावन–पवित्र होकर मुक्ति प्राप्त करता है–

कौन कै कलंक रहो राम नाम लेत ही।
पतितपावन भये राम कहत ही।।
राम संग नामदेव यह प्रतीति पाई।
एकादशी व्रत करै काहे कूँ तीर्थ जाई।।
भणत नामदेव समुरत सकरत पाई।
राम कह जन को कौन न मुकति पाई।।

–संकलित

सब साधनों का सार है हरिनाम

(6 अप्रैल 2003, दोपहर 1:15 बजे हरिद्वार पूज्य मोरारी बापू के Live सत्संग से)

राम रामेति यद्वाणी मधुरं गायति क्षणम्।
स ब्रह्मा सुरापो वा मुच्यते सर्वपातकैः।।
(रामचरितमानस किष्क. का. **01/84**)

जिसकी वाणी एक क्षण भी राम–राम ऐसा सुमरन गान करती है वह ब्रह्मघाती अथवा यद्यपि भी क्यों न हो, समस्त पापों से छूट जाता है।

नाम की महिमा से जड़ वस्तुयें भी लगें झूमने

नाम-महिमा अप्रैल 2003

चौ. करहु कहा लग नाम बढ़ाई, राम न सकही नाम गुण गाई

रामायण की यह चौपाई है कि जब रावण सीता माता का हरण करके लंका में ले गये ! तब प्रभु श्री राम माता सीता की खोज में निकले इस दौरान जब बीच में समुद्र था ! तो समुद्र को पार करके श्रीराम को लंका जाना था तो उन्होंने समुद्र के ऊपर पुल बनवाने का कार्य आरम्भ किया। तब पहला पत्थर उनके परम भक्त हनुमान ने प्रभु श्री राम का नाम लिखकर उस अथाह समुद्र में डाला और पत्थर समुद्र में तैरने लगा। तत्पश्चात् पुल बनने लगा, सबने बाद में ऐसा ही किया। जो उनके साथ सेना थी, तो सब प्रभु का नाम लेकर पत्थर समुद्र में छोड़ने लगे ! तब प्रभु श्रीराम ने सोचा क्यों न मैं भी समुद्र में पत्थर छोड़ दूँ। और प्रभु ने जब पत्थर डाला तो वो पत्थर डूब गया। श्रीराम जी मुस्कराये और हनुमान जी से पूछा ?

भाई हमने जिस पत्थर को छोड़ा वो क्यों डूब गया ! तुम्हारे पत्थर राम नाम से तैरने लगे। और स्वयं राम डालें तो डूब जाये ऐसा क्यों हुआ ?

हनुमान जी बड़े विवेकशील, उन्होंने कहा जिसे राम छोड़ दें। उसे तो डूबना ही है। बचेगा तो वही जिसे राम पकड़े या राम नाम पकड़े। श्रीराम जी उनके इस उत्तर से बड़े प्रसन्न हुये। तभी कहा–

''राम से बड़ा राम का नाम''

मेरे दिल में वो भाव ही नहीं हैं, मेरी जुबाँ में इतनी समर्थता ही नहीं है कि मैं नाम की महिमा कर पाऊँ। किसी भगवान के प्यारे के उत्साह दिलाने पर स्वयं को नाम से जोड़ने की कोशिश में कामयाब हो जाऊँ शायद इस बहाने नाम महाराज की हम दीनों पर कृपा ही हो जाये। इस लालच में ही लिख रही हूँ। हिम्मत कर पा रही हूँ। जीवन सार्थक हो जाये। नाम में इतनी शक्ति है कि सन्तों ने यहाँ तक छूट दे दी।

भाव कुभाव अनख आलसहु। नाम जपत मंगल दिस दसहु।।

कि भाव से कुभाव से आलस से नाम चाहे कैसे भी जपो वो हर तरीके से जीव का कल्याण करने वाला हर जगह मंगल करने वाला है कहते हैं।

उल्टा नाम जपत जग जाना।
वाल्मीक भये ब्रह्म समाना।।

वाल्मीक एक डाकू था। उसने जब नाम की महिमा सुनी तो उल्टा नाम जपने लगा। वो ब्रह्म स्वरूप हो गया। परमात्मा स्वरूप हो गया। इस नाम में इतनी शक्ति है वो इस जीव को पशु से ब्रह्म स्वरूप बना सकता है। हरि नाम इस जीव को परमात्मा बना सकता है।

सन्त राम में भेद नहीं सन्त राम स्वरूप।
कहे टेऊँ रट राम को भये राम के रूप।।

मेरे प्यारे गुरुदेव सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की अमृत वाणी का यह दोहा है ! कि सन्त महापुरुषों ने इस नाम की महिमा को जानकर अपने आप को उस परमात्मा के नाम के साथ जोड़ दिया। जोड़ दी अपने तन –मन की सभी तारें। उस परमात्मा के नाम के साथ और खुद परमात्मा के ही स्वरूप हो गये। तभी तो हम जब उनके नजदीक जाते हैं। तो हमसे खुद ही सब कुछ भूलने लगता है हम अपने आप में एक नया सा कुछ महसूस करते हैं।

आज से **9–10** साल पहले की बात है। मुरैना वाले (संत प्रताप जी) भैया सब तो उन्हें भैया कह कर ही पुकारते हैं। पर मैं उन्हें पापा ही कहती हूँ। क्योंकि मेरे मन की भावना उन्हें पिता के रूप में देखती है।

आज से **9–10** साल पहले मैं इतनी अज्ञानी, न जाने कितने दोषों और द्वेष से भरी हुई मैं अहंकार की सीमाओं से ऊपर उछलती हुयी। एक जिन्दगी जी रही थी। अन्दर हीन भावनाओं को और ऊपर से अहंकार और झूठे घमंड में चूर–चूर............न जाने ऐसे में पापा को क्या सूझी मुझमें कोई लायकी न देखते हुये मेरा हाथ पकड़ कर कहा कि गुरुदेव (सद्गुरु शांति प्रकाश जी महाराज) से नाम ले लो, तो मैने जवाब में कहा कि फिर सुबह नहाना पड़ेगा। क्योंकि मुझे सुबह बिना काम किये घर की सफाई किये बगैर नहाना बिल्कुल नहीं सुहाता था। अब बताओ कहाँ थी मैं ऊपर से इस शरीर को चमकाना बस................ कभी सोचा ही नहीं कि ये मनुष्य शरीर क्यों मिला। फिर समझाकर उन्होंने अपनी करूणा बरसाते हुये मुझे गुरूदेव से नाम दिलवाया और अचानक उसी रात को जब उन्होने वहाँ सत्संग किया तो वहाँ पर नाम की महिमा गाई।

मुंहिजो सतुगुरु दीनदयाल आ कन्दो नाम देई त निहाल आ

जब उन्होंने ये सत्संग किया तब मेरा मन ठहर

गया। तब की दो बूंदें थी जो मुझे यहाँ तक खींच लाई। पहले हमेशा बस समय व्यर्थ गंवाया। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की इस प्रार्थना में आया है।

नाम तुम्हारा साबुन कर सां, धोसा पापा सभेई राम

कभी मन को धोने की बात सोची ही नहीं बस शरीर को ही सब कुछ समझा करती। महाराज श्री की वाणी है कि नाम एक साबुन के सदृश है हमारे पिछले जन्मों के पाप हमारे अनजाने में किये हुये पाप होते हैं। नाम साबुन में सारे पापों को धोने की समर्थता है। एक कथा जो मुझे याद आ रही है।

अभी भगवान की एक बहुत प्यारी भक्त हुई है जनाबाई। भगवान से बहुत स्नेह प्रेम करने वाली भगवान के उस नाम को जपने वाली सुना है। ऐसा सन्तों से कि उसके घर पर गॅऊयें थीं तो वो (उपले) कन्डे बनाती थी। वो उपले भी बनाती। भगवान का भजन भी करती। गुनगुनाती रहती। उसके रोम–रोम में भगवत् नाम बसा करता था। एक दिन की बात जब रात कोई चोर उसके उपले उठाने आया। जैसे ही उसने हाथ से उठाया उपलों को, उन में से मधुर भगवत् नाम की ध्वनि निकलने लगी वो चोर आश्चर्य चकित रह गया। पर वो फिर भी नहीं माना वो उपले उठाकर ले गया और उसने वो कन्डे अपने कन्डों में मिला दिये। अब जब गांव वालों को हकीकत का पता चला। तो उन्होंने उस चोर की जो चोरी करके आया था। उसके घर में तलाशी करने गये तब वो उपले उठाये तो साफ पहचान में आ रहा था कि जना बाई के उपले कौन से है, और उस चोर के उपले कौन से। एक जड़ वस्तु में भी भगवत नाम की गुन्जार.....। इतना प्रभाव कि कोई मनुष्य नाम जप करे तो जड़ वस्तुयें भी बोलने लगे झूमने लगे। अब मैंने जाना कि मनुष्य शरीर क्या है। इस मनुष्य शरीर में नाम की महिमा क्या है। पहले जब मुझे नाम मिला गुरुदेव से 5 मिनिट जपा फिर 10 मिनिट फिर आधा घन्टा तब जाने अनजाने ही नाम जपते समय मन में कभी किसी से मिलने का विचार आया वो इच्छा उसी क्षण पूरी हुई या छोटी–छोटी जो इच्छायें आती वो पूरी हो जाया करती, तब मन को कहीं चोट पहुँची कि मेरे मन तू अब भी नहीं समझा नाम की शक्ति को तब अन्दर से एक आवाज आयी कि जो नाम सुमरन करने पर ये इच्छायें पूरी हो सकती है तो क्या भगवान के इस नाम से कण–कण में समाया परमात्मा नहीं मिल सकता बस तब से चल पड़ी हूँ मंजिल को ढूँढती हुई पर..............................। नाम की शक्ति ने मीरा के जहर को अमृत बना दिया था। नाम के प्रभाव से गज को बचाया था। ग्राह भगवान का नाम जपता था। सुदामा कृष्ण भगवान के इतने करीब था। सुदामा की इतनी भक्ती देखकर कहाँ पहुँचाया भगवान ने उन्हें और आश्चर्य की बात वाल्मीक ने उल्टा नाम जपा मरा–मरा कहते–कहते उसने अपनी मंजिल को पाया ऐसे और कितने ही भक्त हुये है भगवान के। ऐसे ही मुझे याद आ रहा है वो दृश्य एक बार जब सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज एक बार बात करते–करते अपनी ही मौज में कह बैठे कि सब कुछ जाना जा सकता है। नाम जप के द्वारा जो कुछ भी हमारी दृष्टि से परे वचनों से सुनने से परे है वो सब नाम जप से जाना जा सकता है पर शायद मैं ही इतनी मूर्ख हूँ जो नाम की महिमा लिखने चली हूँ अपना इतना खास अनुभव भी नहीं नाम के बारे में....... ....।

जब देखूँ करनी अपनी आता है मुझको रोना।
जब देखूँ तेरी कृपा तो भीगे दिल का कोना।।
बस देखी खाली गागर सागर बहा दिया है।
हमको तो सत्गुरु ने चमन बना दिया है।।

जब देखा ही नहीं हमारी ओर कि हम कितने पाप के मैल से भरे हुये है बस बरसा दी अपनी कॅरूणा........।

स्वासों की सरगम मध्यम हुई थी,
जीने की आशा भी धूमिल हुई थी।
तेरे नाम का जो सहारा न मिलता,
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता।।
इतनी कहाँ ताकत है श्याम सुन्दर जू,
जो ध्रुव के समा न एक पैर पे खड़ा रहूँ।
इतनी आत्म दृढ़ता तो है कदापि नहीं,
जो भीष्म के समान एक प्रतिज्ञा पे अड़ा रहूँ।
चैतन्य की सी चेतन्यता तो है ही नहीं,
जो प्रेम के सागर में नित्य उमड़ा रहूँ।
इसलिये तो इक सुगम उपाय अपनाया मैंने,
प्यारे तेरे नाम के आधार पे अड़ा रहूँ।

बस यही चाहती हूँ। अपने गुरुदेव भगवान से कि मुझे नाम में प्रीति दे। संसार के इस भवसागर से नाव रूपी नाम का सहारा दे। बाकी क्या लिखूँ क्योंकि जितना लिखूँ खत्म नहीं होगा क्यों ये चीज खत्म होती नहीं, तभी तो मीरा ने कहा ये ऐसी चीज है जो बस बढ़ती ही जाती है। ''लाख जन्मों में भी मैं चुका ना सकूँ इतना अहसान गुरुदेव तुमने किया..........।

डॉली गेहानी, ग्वालियर

काश नाम खुमारी हमें भी चढ़ जाती

नाम-महिमा अप्रैल 2003

नाम की महिमा के ऊपर मुझे लिखने के लिये प्रेरित किया गया। मेरी लेखनी में इतनी ताकत नहीं है कि नाम की महिमा के बारे में कुछ भी लिख सके क्योंकि नाम की महिमा तो अपरम्पार है। नाम की महिमा जितनी की जाए उतनी कम है। लेकिन आज तक संतों, महापुरुषों के वचनों से जो भी श्रवण किया है, उसे ही अपनी टूटी–फूटी भाषा में लिख रही हूँ।

कहा जाता है कि भगवान से ज्यादा भगवान के नाम की महिमा बड़ी है। जो गुंरु हमें मन्त्र देते हैं उस नाम का जप करने से इतने बड़े भगवान भक्तों के वश में हो जाते हैं। लेकिन फिर भी हमारे जैसे पापी और संसारी लोग नाम नहीं जपते व्यर्थ की बकवास में समय बर्बाद करते हैं। गुरु मन्त्र को लेके तिजोरी में बन्द करके रख देते हैं। ये परिवार ये संसार केवल सुख में साथ देता है, दुख में नही। दुख में केवल भगवान का नाम ही साथ देता है।

जब द्रोपदी का चीरहरण हो रहा था तब द्रोपदी ने पहले अपने परिवार को अपने साथियों कुटुम्बियों को पुकारा पर वे जब उनका साथ नहीं दे पाये तो उस समय उसे भगवान की याद आई और तब उसने पुकारा। इतने में ही भगवान चले आए। दौड़कर चले आए फिर भी हमारी प्रीति नाम में नहीं होती। ऐसे ही जब भक्त प्रहलाद पर कोई भी परिस्थिति आती तो वे केवल विष्णु भगवान का स्मरण करते थे, और नाम का जाप करने से उन्हें तलवार काट न सकी, पानी डुबो न सका जहर मार न सका। जब पहाड़ से गिरा तो भगवान की गोद मिली ये सब किसका प्रताप है नाम का, महापुरूषों ने कहा है।

नाम राम को अंक है, सब साधन है सून।
अंक गए कुछ हाथ नहिं, अंक रहे दस गून।।

जिस तरह गिनती में एक का महत्त्व है उसी तरह भक्ति में नाम का महत्त्व है कीर्तन सत्संग सेवा दान, तप, व्रत नेम ये सब शून्य हैं ये नाम के बिना अधूरे हैं अगर गिनती में से एक को हटा दिया जाए तो शून्य का कोई महत्त्व नहीं रहेगा, उसी तरह आध्यात्मिक रास्ते में नाम का ही बड़ा महत्त्व है क्योंकि नाम ही एक ऐसी चाबी है जो सब ताले खोलती है। ये एक कुंजी कमाल करती है, प्रेम बढ़ता है तो नाम से सेवा में, रस आता है तो नाम से सत्संग में भी मन नाम से ही लगता है। नाम से ही जन्म जन्मातर के संचित पाप नष्ट हो जाते हैं। जल जाते हैं। बिना भाव के जपने से भी पाप जल जाते हैं। नाम से सारे खजाने मिलते हैं। नाम से ही जो मस्ती–खुमारी प्रेम का नशा चढ़ता है और नाम से ही जीव का कल्याण हो जाता है।

कलियुग में अगर कोई मुक्ति दिलाने वाला है तो वो है नाम। अपने आत्मकल्याण का एकमात्र साधन नाम है। चैतन्य महाप्रभु आदि भक्तों तथा नारदादि ऋषियों ने भी नाम संकीर्तन की महिमा का बखान करते हुए इसे सर्वाधिक प्रभावकारी साधनं माना है। कलियुग में कल्याण के लिए हरिनाम के अतिरिक्त और कोई दूसरा साधन नहीं है।

सतयुग में भगवान का ध्यान करने से त्रेता में बड़े–बड़े यज्ञों के द्वारा उनकी आराधना करने से और द्वापर में विधिपूर्वक उनकी पूजा सेवा से जो फल मिलता था वह कलियुग में भगवान नाम कीर्तन करने से ही प्राप्त हो जाता है।

नाम हरि का मधुर अति, जैसे अमृत घोल।
अमृत पीकर अमृत बन, मन हरि-हरि बोल।।

अर्थात् :– हरि का नाम इतना मधुर है जिस तरह कोई अमृत होता है इस अमृत को पीकर हम भी झूमें और हरि–हरि बोलें।

लेकिन इतना अमृत जैसा होने पर भी हम नाम का सुमरन नहीं करते ऐसे बहुत से महान संत हुए हैं जो नाम पर बैठते हैं, यदि उन्हें मन परेशान करता है तो वे

अपने मन को यातनायें देते थे। ऐसे ही एक महान सन्त हुए हैं। वे एक बार नाम सुमरन कर रहे थे तो उन्हें उस दिन मन ने बहुत परेशान किया। वह कढ़ी खाने को लालायित होने लगा। लेकिन वे फिर भी बैठे रहे पर जब मन नहीं माना। तो दूसरे दिन एक भक्त महिला जब भोजन के आमंत्रण के लिये पूछने आई तो उन्होंने कहा माई आज कुछ नहीं बस केवल पतीला भरकर कढ़ी ले आना। और शाम को उन्होंने कटोरे भर–भरकर कढ़ी खाई। पेट भरने पर भी वे खाते रहे आखिर परेशान होकर मन कहने लगा बस--बस फिर उन्होंने अपना मुँह ही उस पतीले में डाल दिया और कहने लगे खा मन खा तुझे कढ़ी चाहिये थी ना अब खा तुझे नाम से ज्यादा कढ़ी में रस है तो वे खाते गये। उल्टियाँ हो गई। फिर भी नहीं माने। पेट खराब हो गया, वहीं मल बह गया फिर भी नहीं माने। इतनी सजा दी मन को फिर कभी मन ने कढ़ी नहीं माँगी।

महापुरुष इस तरह की यातनाएँ देकर अपने मन को नाम सुमरन में लगाते थे। कहा जाता है कि अच्छे भाव से या बुरे भाव से क्रोध से या आलस्य से अर्थात् किसी भी तरह नाम जपने से कल्याण होता है। कलियुग में न कर्म है न भक्ति और न ही ज्ञान है। नाम का जप ही मनुष्य के कल्याण का एकमात्र साधन है। इसलिये नाम से प्रेम करो नाम को अपने हृदय में धरो। भगवान ने हमें मनुष्य चोला दिया है। उसको व्यर्थ नहीं जाने दें। अपनी स्वासों को व्यर्थ के कामों में न जाने दें। भगवान के नाम से प्रीत बढ़ायें क्योंकि एक–एक स्वांस अमोलक है कहते हैं तीन लोक देने पर भी एक स्वाँस का मूल्य नहीं चुकाया जा सकता।

देखो कितनी नाम की महिमा है हमें भी अगर परलोक सुधारना है तो नाम का सुमरन करें। जिन भगवान के नाम का संकीर्तन सभी पापों को सर्वथा नष्ट कर देता है। उसका सुमरन करें। कहा है कि नाम जप से जीव के मुक्त होनें में क्षणभर भी देर नहीं होती है। इसलिए इस नाम रूपी अमृत का हम भी पान करें। मेरा लेख तभी सार्थक होगा। जब ये मेरे जीवन में उतरे जब नाम का रंग मेरे मन को लगे जब नाम की मस्ती में मेरी आँखें भी मीरा जैसी हो जाएं। वो ही खुमारी, वो ही मस्ती, वो ही नशा चढ़ जाये। संसार की तरफ से हमारे कान, आँख, सिर जब कट जायें और मन केवल परमात्मा की तरफ लगा रहे। अब गुरु महाराज के चरणों में एक ही प्रार्थना है वो समर्थ हैं मेरी प्रार्थना में वो प्यास नहीं पर फिर भी प्रार्थना है जिससे मैं अपने जीवन को बदल सकूँ आपकी कृपा से ही मेरे जीवन में नये फूल खिलेंगे। अपने शरीर की सुध–बुध भूलकर अपने आपको भूलकर आपका रोम–रोम से सुमरन करूँ।

काश मेरे बस में होता, तो बांध के घुंघरूँ मीरा की तरह नाच-नाच तुझे रिझाती।
काश मेरे बस में होता, तो गा-गा कर नानक की तरह आँखों में खुमारी भर लाती।
काश मेरे बस में होता तो कर-कर के भजन कबीर की तरह नित नाम के सागर में डुबकी लगाती।
काश मेरे बस में होता प्रेम का उन्माद लेकर चैतन्य की तरह अंत सशरीर तुम्हीं में समा जाती।
पर क्या तेरी कृपा बिना किसी की बात बन पाती काश तूं रीझ जाये गुरूवर तो मेरी जन्मों से बिगड़ी किस्मत सवंर जाती।

कु. नीतू राजानी, ग्वालियर

भरोसौ नाम कौ भारी

भरोसौ नाम कौ भारी।
प्रेम सौं जिन नाम लीन्हौ, भए अधिकारी।।
ग्राह जब गजराज घेरयौ, बल गयौ हारी।
हारि कै जब टेरि दीन्ही, पहुँचे गिरिधारी।।
सुदामा–दारिद्र भंजे, कूबरी तारी।
द्रौपदी कौ चीर बढ़यौ, दुसासन गारी।।
बिभीषन कौं लंक दीनी, रावनहि मारी।
दास ध्रुव कौं अटल पद दियौ, राम–दरबारी।।
सत्य भक्तहि तारिबे कौ लीला बिस्तारी।
बेर मेरि क्यौं ढील कीन्ही, सूर बलिहारी।।

सूर–विनय–पत्रिका)

संकलन :
सद्गुरु टेऊँराम बालिका भजन मण्डली, जयपुर

नाम-महिमा अप्रैल 2003

मुझे मिला प्यारा नाम अनमोल

प्यारे सद्गुरु देव हमें नाम देते हैं। इस नाम में इतनी पावनता, इतनी शक्ति है कि हैवान से इन्सान बना देती है। नाम लेते ही इतनी आनन्द की शांति की अनुभूति होती है। तो सोचें जो नाम के आधार पर ही जीते हैं। उनके आनन्द की क्या सीमा होगी। नाम के बिना मनुष्य अधूरा है, नाम जपने से गुरु के प्रति प्रेम, प्यास जाग्रत होती है। गुरु के वचनों में दृढ़ता बढ़ती है नाम जपने से एकाग्रता विवेकशक्ति बढ़ती हैं। नाम जपने वालों पर गुरूदेव की विशेष कृपा होती है।

नाम तो खूब सारा जपना चाहिये। फिर भी लगे कि कम ही हुआ है। चाहत बढ़ती जाये। जो नाम सुमरन ज्यादा करते हैं उन पर ही तो प्यारे गुरुदेव रीझ जाते हैं। नाम की सीढ़ी मोक्ष की मंजिल तक ले जाती है। फिर तो आनन्द ही आनन्द है।

पर हमारे अन्दर संसार इतना ज्यादा हावी है, कि नाम जपने का मन ही नहीं होता है। इतने पापी हैं हम, नाम तो सद्गुरु देव से ले लिया पर गुरु नाम की कदर नहीं कर पाये। नाम जपते नहीं। मेरी एक सखी (सहपाठी) बताती थी, कि जिस दिन भी वो नाम स्मरण करती है, उसकी किसी से भी लड़ाई नहीं होती, मन शांत रहता है। सारा दिन अच्छा जाता है, पर जिस दिन नाम सुमरन न हो उस दिन इससे झगड़ा उससे झगड़ा सारा दिन व्यर्थ हो जाता इतना मन बदल जाता है।

हमारे सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने भी तो नाम सुमरन को अपना अभिन्न अंग बना लिया था। प्रभात को चौथे प्रहर में जाकर गुरु मंत्र का जाप करते थे। तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे। अधिकांशतः ऋषिकेश की गहन झाड़ियों में रहते थे। टण्डा आदम दरबार पर भी अपना सेवा कार्य पूर्ण करके शेष समय स्मरण में लगाते। एक कथा है प्यारी सी।

भगवान श्री विष्णु जी ने स्वयं ही एक महात्मा को अपना दर्शन दिया और कहा कि आपको क्या चाहिये। आप जैसा चाहें वैसा वर माँगें। महात्मा ने भगवान से कहा प्रभु आप भले ही माता लक्ष्मी जी के साथ वैकुण्ठ में रहें और शेषनाग की सेजा पर सोए रहें। परन्तु आप मुझ पर अपनी कृपा बनाएं रखें कि मैं हर पल आप के नाम का सिमरन करूँ मुझे आप की भी आवश्यकता नहीं है। मैं केवल आप के नाम की इच्छा करता हूँ। मुझे केवल आप का नाम चाहिए। भगवान "श्री विष्णु जी " ने महात्मा को उत्तर दिया ऐसा कैसे होगा। महात्मा ने भगवान को उत्तर दिया कि प्रभु यह निश्चय है कि नाम में इतनी शक्ति है और वह ऐसी लोहे की डोर है जो आपके मन को वश में करती है, जहाँ पर भी आप के नाम का सिमरण करूँगा आप स्वयं ही वहाँ आकर प्रकट होंगे। जैसे किसी व्यक्ति को उसका नाम लेकर बुलायेंगे तो वह एकदम ही हमारी आवाज सुनेगा वैसे ही हम भगवान का नाम सिमरन करेंगे और सच्ची श्रद्धा से उन्हें पुकारेंगे तो वे जहाँ कहीं भी होंगे। निर्गुण सगुण होकर बैकुण्ठ से भी दौड़ते हुए शीघ्र ही हमारे पास आ पहुँचेंगे। गुरु महाराज का नाम इतना पवित्र इतना निर्मल है कि नाम जप से हमारे कई जन्मों से किए गए पापों से मुक्ति मिलती हैं नाम जपने से हमारी बुद्धि रूपी कपड़े पर जो मैल है वह धुल जाती है। जिससे हमारी बुद्धि निर्मल होकर प्रभु परमात्मा के पावन श्री चरणों में स्थिर होती है। इसलिए हम सभी को भी गुरू महाराज सन्त महात्माओं और ईश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हे गुरु महाराज हमें और किसी चीज की इच्छा नहीं हो और रोम-रोम से सिमरण हो ऐसी कृपा करना।

हमारे गुरु महाराज जी कहते हैं कि जीवन में रोज का काम, खाना, पीना, सोना, नहाना आदि। इस

तरह अपने जीवन में नाम जपने का एक नियम बना लो मन लगे न लगे जपना। नाम से प्रीत कर लो ऐसी प्रीति हो जाए कि खाना, पीना, सोना भूल जाएं ये भूल जाएं सोना, खााना, पीना होता क्या है। ऐसी प्रीत नाम से हो जाए तो जिन्दगी आनन्दमय हो जाएगी। जिन्दगी का लक्ष्यं मिल जाएगा।

एक संत थे। इतना नाम जपते थे पर वह हुक्का भी पीते थे। संत को देखकर एक प्रेमी को शंका हुई। वह सोच रहा था कि इतने बड़े सन्त हैं पर हुक्के का व्यसन करते हैं ये कैसे महापुरुष हैं। शंका हो गई ? शंका का निवारण कैसे हो। मैं संत से कैसे पूछूँ। संत तो अन्तरयामी होते हैं। सो प्रेमी के मन की शंका जान गये। संत ने हुक्के का पाइप उस प्रेमी को धोने के लिए दिया तो धोने के बाद वह देख रहा था कि साफ धुला है कि नहीं तो उसने देखा उसमें से राम–राम की ध्वनि सुनाई दे रही थी। उसने इधर–उधर देखा तो कोई दिखाई नहीं दिया। उसने पाइप को कान में लगाया तो आश्चर्य चकित हो गया कि संत इतना भजन करते थे कि उनके पाइप में से भी राम, राम की धुन सुनाई दे रही है। उसी समय ही उनकी शंका का समाधान हो गया और संत के चरणों में गिर पड़े। नाम जपने वालों के साथ जड़ भी चैतन्य होकर नाम जपने लगती है। नाम में इतना चमत्कार है।

नाम जपता कुष्ठी भला, चुंहि-चुंहि पड़े जो चाम।
वह कंचन देह किस काम की, जो मुख निकसे नहीं राम।।

अर्थ :– भले हैं वो भक्त जो कोढ़ी होते हुए भी अपने गुरु के नाम का जाप करते हैं लानत है उस मनुष्य पर जिसकी देह कंचन के समान है ऐसी देह होते हुये भी किस काम की उसके जीवन में गुरु नाम का जाप नहीं।

तांहि न सुमरा जिंह तन दीना व्यर्थ तेरा खाना-पीना।
तांहि न सुमरा जिंह सुख दीया, जन्म पाय के क्या तुम कीया।
तांहि न सुमरा जिंह दी माया, धिक, धिक मानुष जन्म गंवाया।
तांहि न सुमरा जिंह मति दीनी, मूर्ख तुमने लाज न कीनी।
आलस तज अब भज हरिनामा, कह टेऊँ पाओ सुख धामा।

जिसने नाम सुमरण नहीं किया उस का तन बेकार है, और खाना, पीना, बेकार है। जिसने नाम सुमरन नहीं किया उसका जीवन दुखों से भरा हुआ है।

मनुष्य जन्म पाकर क्या किया एक दिन तो यह बाहरी शरीर जलकर राख हो जाएगा। ऐसे मानुष तन को धिक्कार है। जिसके जीवन में नाम नहीं है। यह बाहरी धन पाकर क्या मजा जब तक नाम धन ना मिला हो। जिसने गुरु के नाम को नहीं पहचाना ऐसे मनुष्य को धिक्कार है। अब आलस दूर कर हरि नाम जप कर कहते गुरूवर पाए सुख धामा। तभी सुख धाम परम शान्ति को प्राप्त होगा।

पूजा, सपना ठारानी
ग्वालियर

अतुलनीय नाम–जप

यद्यपि पाप कर्मों के प्रक्षालनार्थ शास्त्रों में अनेक प्रकार के शुभ कार्यों का विधान है, परन्तु भगवत् नाम के जप स्मरण तथा चिन्तन के फल की कहीं समानता नहीं है–

गोकोटिदानं ग्रहणे खगस्य, प्रयागगंगोदककल्पवासः।
यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं, गोविन्दकीर्तनं समं शतांशे।।

(श्री हरि भक्ति विलास **11/186**)

अर्थात् पाप कर्मों के प्रक्षालन के लिये सूर्यग्रहण के समय एक लाख गायों का दान करने से, प्रयाग में जाकर गंगाजल में कल्पवास करने से, अयुत यज्ञ करने से, तथा सुमेरु पर्वत के तुल्य स्वर्ण का दान करने से जो फल प्राप्त होता है वह गोविन्द नाम जप के फल के शतांश के भी तुल्य नहीं है, अर्थात् भगवत् नाम की तुलना किसी भी सत्कर्म से नहीं की जा सकती, क्योंकि गोविन्द नाम जीव को शुद्ध करके कृष्ण प्रेम प्रदान करता है, जो अन्य किसी भी शुभ कर्म से संभव नहीं हैं। अतएव सभी को निष्ठापूर्वक हरिनाम का संकीर्तन जप तथा स्मरण करना चाहिये।

नाम-महिमा अप्रैल 2003

लत् लगी तेरे नाम की

हमारे ग्वालियर के वयोवृद्ध तपस्वी सन्त बाबा गणेशानन्द जी महाराज अपने श्री मुख से बताते थे कि जो श्री गुरुदेव से नाम ले तो लेते हैं पर नाम का जाप नहीं करते उसे हजार जन्म श्वान (कुत्ते) के मिलते हैं। बताओ कितना बड़ा बोझ है। जो साधक सरल हृदय होते हैं वे जल्दी ही नाम स्मरण द्वारा गहराई में चले जाते हैं। पर जो बहुत चतुर होते हैं उन्हें तो Time लगता है। ज्यादा होशियार व्यक्ति कई तरह की चिन्तायें उलझनें दिमाग में लेकर घूमता है। इसलिये सरलता बड़ी फायदेमंद होती है। सरल व्यक्ति भावपूर्ण होते हैं। प्यास पैदा हो जाती है। नाम जपते जपते उस प्रियतम से मिलने की छटपटी शुरू हो जाती है। कब मिलूँगी। वह कौन–सी सुहानी घड़ी होगी जब मैं प्यारे को देखूँगी। अपनी आँखों में छवि को बसा लूँगी।

जिन संतों महापुरूषों ने भगवान को पाया है उन्हें ही नाम स्मरण का महत्त्व पता है। नाम में कितनी मिठास है ! दुनिया की सारी मिठाईयाँ एक तरफ़ परमात्मा की रस मिठास एक तरफ। नाम स्मरण करते समय इतने सुन्दर भाव आते हैं। झलकें मिलती हैं। शरीर में आनन्द की लहरें उठती हैं। कुछ ऐसे अद्भुत राज खुलते हैं। हृदय विभोर हो जाता है। दीवानगी सी चढ़ जाती है। मन भीगा भीगा रहने लगता है। सहज शांति, बनावटी शांति नहीं ! वह केवल इन्सान नहीं उससे कुछ ऊपर उठ जाता है। देवीय हो जाता है। आकर्षण बढ जाता है। नामी साधक में गजब का आकर्षण होता है। वाणी में मोहनी होती है। नाम का रस उसकी हर क्रिया से बहने लगता है। कितने अद्भुत क्षण होते होंगे संत महापुरुषों के जीवन के, कि नाम जपते जपते याद ही नहीं रहे भोजन खाया कि नहीं खाया। भूल ही जायें। पूरी रात बस तेरा नाम पूरा दिन तेरा चिन्तन।

किसे फुरसत है तेरे नाम तेरी बंदगी से, मेरी आँखों में बसे तुम।
अब खोलने की जहमत भी गंवारा नहीं हमको।।

नाम स्मरण से प्रेम बढता है। और प्रेम से नाम स्मरण बढता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। हृदय इतना परिवर्तित हो जाता है।

सुख के माथे सिल पड़े जो नाम हृदय से जाय।
बलिहारी तां दुःख पे जो पल-पल नाम जपाय ।।

नाम की महिमा सुनते रहना चाहिये। एक न एक दिन तो समझ में आयेगा प्यार हो जायेगा। पर महिमा हजार गाई जायें, पर आनन्द और लाभ करने से होगा। जैसे भूखे व्यक्ति के पास हजार भोजन की महिमा कहें चाहे भोजन की भरी थाली के फोटो दिखाओ पेट भरेगा! नहीं न, उसके लिये भोजन खाना पड़ेगा। सो नाम तो जपना पड़ेगा। नाम स्मरण का महत्त्व भी नाम जप से ही आयेगा, जितना अधिक जपेंगे, विशेष लाभ होने लगेगा।

जैसे–जैसे गहराई बढ़ेगी प्यास बढ़ेगी। त्यों–त्यों परिस्थितिवश जिस दिन नाम स्मरण न कर पायेंगे बड़ा अभाव महसूस करेंगे। बैचेनी होगी। प्रेम और भजन का नाम का महत्त्व समझ में आने लगेगा। गोपियाँ भगवान का नाम सुनकर ही भाव समाधी में डूब जाती थीं। निमग्न, शरीर की सुध–बुध भूल जाती थी। एक ऐसी अवस्था साधक की आ जाती है। जैसे शरीर में ठण्डा–ठण्डा झरना बह रहा हो रोम कूप खड़े हो जाते हैं। जैसे कोई व्यक्ति आँखों के बिना अधूरा लगता है। त्यों ही साधक नाम स्मरण के बिना अधूरा है। एक बार मन खिंच जाये, चस्का लग जाये। फिर बात बन जाती है। आपे आप स्मरण होता है।

खिन उतरे खिन चड़े ये तो सिमरन नाहिं।

फिर कोई क्या करे बस बैठा अन्दर बजते नाद का आनन्द ले। वो प्रेम छुपाये नहीं छुपता। बंगाल में चैतन्य महाप्रभु भगवत् के नाम के बड़े प्रेमी हुये हैं। उनके यहाँ कोई एक भक्त था वह हरे कृष्ण हरे कृष्ण........................निरन्तर जप करता रहता था। किसी ने चैतन्य महाप्रभु से आकर कह दिया– महाराज ये तो जंगल शौच के समय भी नाम जपता रहता है, जब उससे पूछा गया तो उसने कहा ऐसा होता तो है फिर चैतन्य महाप्रभु ने उसे बुलाकर उससे कहा, कि आप शौच के समय ख्याल रखा करो बोला मत करो। अब वह दया करता। जब जंगल शौच के लिये जाता तो जीभ को पकड़ लेता फिर लोगों ने उसकी शिकायत महाप्रभु से की, कि महाप्रभु यह अब शौच के समय जीभ को पकड़ लेता है। तो फिर महाप्रभु ने बुलाकर उससे कहा, कि यह तुम क्या करते हो, तो उसने कहा कि महाप्रभु मैं क्या करूँ मेरी जीभ को आदत पड़ गई है। यह मानती ही नहीं इसे चस्का जो लग गया है। पर आपने कह दिया था तो मैं आपकी आज्ञावश अपनी जीभ पकड़ लेता हूँ। तब महाप्रभु ने कहा कि तेरे लिये किसी अवस्था में नाम जपने में कोई दोष नहीं है, पर जीभ

मत पकड़ना। इसी प्रकार जिस को भगवत नाम में रस आता है वही जानता है कि नाम में कितनी विलक्षणता है। क्या अलौकिकता है। लोगों की शिकायत होती है कि नाम में मन नहीं लगता जप में मन नहीं लगता। पर सच्चे प्रेमी हरदम ही नाम जपते हैं। चाहे रात हो या दिन हो हरदम हर पल उनसे जप ही होता रहता है।

भजन करे पाताल में, प्रकट होय आकाश।
दाबी दूबी दबे नहीं, कस्तूरी की बाँस।।

जिस प्रकार गुलाब का फूल सुगन्ध नहीं छोड़ता। उसमें से सुगन्ध आज भी आती है और कल भी आयेगी, उसी प्रकार कोई चुपचाप भी भजन करे और किसी को पता भी न लगने दे तो भी वहाँ प्रगट हो जाती है। उसकी विलक्षणता अलौकिकता दिखने लगती है। लोगों पर असर पड़ने लगता है क्योंकि भगवान का नाम है ही ऐसा विलक्षण। इसीलिये लोक परलोक दोनों में लाभ होता है। साधारण बालक साधु होकर भजन में तत्परता से लग जाता है तो वह संत महात्मा कहलाने लगता है। बड़ा चमत्कार उसके साथ हो जाता है। जिसको पहले कोई पूछता ही नहीं था क्या बात है आखिर यह भगवत्न्नाम की ही तो महिमा है।

।। लोक लाहु परलोक निबाहु।।

राम नाम इस लोक और परलोक सब जगह काम देता है। इसके आगे नाम स्मरण की महिमा क्या कही जाये। नाम स्मरण करने से मानव जीवन का उद्धार सम्भव है। चाहे कोई इस तथ्य को माने या न माने। हाँ ये हो सकता है उसकी अपनी श्रद्धा ही न हो। उसके मन में अनेक प्रकार के ख्याल आते हों तो उसका पार उतरना असम्भव है। नाम से प्रेम हो तो नामी खिंचा चला आता है। कौन कहता है प्यारे तू आता नहीं भजके तेरा नाम तुझे कोई बुलाता ही नहीं।

कु. सुनीता, ग्वालियर

श्री प्रेम प्रकाश धाम दिल्ली का वार्षिक महोत्सव

2 मई से 7 मई 2003 तक

कार्यक्रम

शनिवार, दिनांक 3 मई 2003 (चन्द्र दर्शन)

प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक	:	सत्संग, हवन, ध्वजवन्दना के साथ ध्वजारोहण
सांय 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक	:	श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद् भगवत् गीता के पाठ प्रारम्भ एवं सत्संग प्रवचन

रविवार 4 मई से मंगलवार 6 मई तक

प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक	:	सत्संग, प्रवचन व भक्तों द्वारा स्तुतिगान
सांय 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक		

बुधवार, 7 मई (चौथ)

प्रातः 6 बजे	:	स्थापित प्रतिमाओं का अभिषेक
प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक	:	सत्संग प्रवचन
सांय 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक	:	श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद् भगवत् गीता के पाठों का भोग, सत्संग प्रवचन व सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के शुभाशीर्वाद वचनों पल्लव द्वारा महोत्सव का समापन।

निवेदक :

सन्त जयदेव प्रेम प्रकाशी **स्वामी जय प्रकाश सेवा समिति**

प्रेम प्रकाश धाम, C-2/37-38, मलकागंज, दिल्ली-110007
फोन : 011-23969774, 23942123 ई-मेल : jaidevpremprakashi@yahoo.com

रोम-रोम बसे तेरा नाम

नाम-महिमा अप्रैल 2003

नाम की महिमा करना ही अति आनन्ददायी और माधुर्य पूर्ण है। नाम से ही सही मार्ग मिलता है। नाम से ही ज्ञान प्राप्त होता हैं। नाम से ही गुरु कृपा प्राप्त होती है। नाम से ही मानसिक क्लेश मिटते हैं। नाम से ही मन को सच्ची शांति मिलती है। नाम से ही घर में शांति होती है। जैसे स्वासों के बिना कोई जीवन नहीं जी सकता ऐसे ही आध्यात्मिक मार्ग में नाम सुमरन के बिना कुछ लाभ हासिल नहीं हो सकता। नाम के बिना हर साधन अधूरा है। साधक अधूरा है। नाम की जितनी महिमा की जाये कम है। सच पूछो तो नाम स्मरण के बाद ही, गुरू से सच्चा प्रेम और उस प्रेम की गहराई बढ़ती है। नाम में गहरी डुबकी लगने के बाद ही सच्चे मोती हाथ लगते हैं नाम जपने वालों के मन ही नहीं सपने भी सुन्दर हो जाते हैं। नित्य गुरू के भगवान के दर्शन होते हैं। गुरु कृपा गुरू शरण से ही बड़ भागी जीव अपने हृदय में स्वासों में नाम जप सकता है। ऐसी ही प्रार्थना सदैव होती रहे। हम सारा जीवन नाम के सहारे बितायें। हृदय में सदा तेरा चिन्तन हो। हर स्वांस में तेरा नाम रहे।

बस आरजू ये कर दूँ जीवन नाम तेरे।
बस रोम-रोम में तू श्याम रहे।।
बस आरजू हो तेरे मिलने की।
तेरे मिलने में भीगी हर शाम रहे।।
तेरी करुणा भरी नजर रहे मुझ पर।
तेरी लगन लगी आठो याम रहे।।
जमाना चाहे दे सजा।
कुछ भी जमाने से न मेरा काम रहे।।
तेरा ही गुणगान करूँ हरदम।
तेरे चरणों में मेरा ध्यान रहे।।
जीवन दिया ये तूने मुझको।
पर मैं कुछ भी नहीं दे सकता हूँ।।
मुझको ये जमाना जाने बस तेरे नाम से।
मेरा अपना न कोई नाम रहे।।
सेवा सुमरण सादगी सहनशील सत्संग।
कहे टेऊँ इनके किये चढ़े राम का रंग।।

मेरी भी यही प्रार्थना है। मेरी भी नाम में प्रीत हो। नाम में लगन हो जाये। कुछ और सोचूँ ही ना। सूझे ही ना, भाये ही ना। तू ही भाये, तेरे नाम का रस भाये, तेरे प्यारों से प्यार रहे। तेरा ही आधार हो जाये।

वर्षा नागदेव, ग्वालियर

अति आवश्यक सूचना

प्रेम प्रकाश सन्देश के समस्त सम्माननीय सदस्यों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता की शुल्क देय अवधि जो कि प्रत्येक मास की पत्रिका के कवर पर आपके पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक–रसीद क्रमांक के पश्चात् अंकित रहती है। उसे ठीक तरह से जाँच कर, सदस्यता शुल्क देय अवधि समाप्त होने के पूर्व अपना सदस्यता शुल्क हमें सीधे मनीऑर्डर द्वारा अथवा विभिन्न नगरों में हमारे सहयोगियों (प्रतिनिधियों) के पास या पूज्य गुरू महाराज जी के साथ यात्रा में चल रहे प्रेम प्रकाशी सन्त विद्यार्थियों के पास आवश्यक रूप से जमा करवाने की कृपा करें। देय शुल्क अवधि बीत जाने के एक मास के पश्चात् आपको पत्रिका भेजना बन्द कर दिया जायेगा। अतः पत्रिका की नियमित उपलब्धि के लिये आप अपना शुल्क देय अवधि से पूर्व आवश्यक रूप से जमा करवायें।

व्यवस्थापक : प्रेम प्रकाश सन्देश ग्वालियर

नाम-महिमा
अप्रैल 2003

मेरे मन भज हरि नाम

नाम सुमरन की महिमा बहुत ज्यादा है। नाम जपने से इंसान को शान्ति मिलती है। नाम का दान हमें गुरू देता है। मुझे अभी तक मेरे गुरु जी ने दीक्षा नहीं दी। फिर भी मैं नाम सुमरन करती हूँ। पहले मेरा मन नाम सुनरन में नहीं लगता था पर जब से मैंने यह कथा सुनी है तब से मेरा मन सुमरन करने में लगता हैं मन को सजा देने वाली कथा :– कढ़ी की कथा मेरी सखी ने इसी सन्देश में दी है।

हमारे सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज कहते थे कि नाम सुमरन करके यमराज के बन्धन टूट जाते हैं। नाम सुमरन के द्वारा हमें यह ज्ञान होता है। कि हम शरीर नहीं आत्मा है फिर हम जन्म–मरण के झंझट से छूट जाते हैं जो इंसान जिसका सिमरण करता है वह उसी लोक में जाता है। हम परमात्मा के अतिरिक्त अगर किसी और का सुमरनं करते हैं तो हम जन्म–मरण के दुख में फंस जायेंगे। इसलिए परमात्मा मिलते हैं और हम भगवान से जुड़ते हैं।

हमारे गुरु महाराज जी कहते थे कि अमृत वेले नाम सुमरन करने से नाम में मन लगता है।

पढ़ो मन ओम् नामा सिद्धम्

ओकांर सबही को सिरजै, शब्द रूपी अंग।
वह तो पुरूष सबहीं ते न्यारा, कर बाही का संग।।
नाम निरञ्जन नैनन मध्ये, नाना रूप धरन्त।
निराकार निर्गुण अविनाशी, निरखै एकै अंग।।
माया मोह मगन होय नाचे, उपजै अंग तरंग।
माटी के तन थिर न रहत है, मोह ममता के संग।।
शील सन्तोष दया के दरपन, सदा सरूपी अंग।
साधु वचन सत्य करि मानो, सिरजनहारा संग।।
ध्याता ध्यान धरो उर अन्दर, नाम तत्व गहन्त।
कहहि कबीर सुनो भाई साधो, आदि अन्त पर्यन्त।।

कबीर जी कहते हैं कि हे मन तू ओम का जाप कर ओम का अर्थ ओकांर से है। ओकांर सब को सिजता है। ओकांर शब्द रूपी अंग है। जो पुरुष ओकांर का जाप करता है वह पुरुष सब से न्यारा होता है तू उसी का संग कर नाम निरञ्जन नैनन के मध्य है। वह अनेक रूपों से होता है। निराकार रूप से, निर्गुण रूप से, अविनाशी रूप से माया मोह से दूर होकर वह नाचता है। उसके अंग–अंग से तरंगे निकलती हैं। ये हमारा शरीर माटी का बना है यह इक दिन मिट्टी में मिल जाएगा। मोह और माया के संग। और हम कुछ नहीं कर पायेंगे इसलिए नाम स्मरण सत्संग, करने से इंसान का इस माटी के शरीर से कोई मतलब नहीं रहता है। जो मनुष्य शीतल, सन्तोष धारी, दया करने वाले दरपन हैं। उनके अंग सदा स्वरूप जैसे होते हैं साधु के वचनों को सत्य करके मानों सिरजनहारो (जो मनुष्य नाम जपते हैं, जो सत्संग करते हैं।) का संग करना चाहिए। जो ध्यान ध्याता है उसके अन्दर इतना आनन्द होता है। वह नाम के तत्व को ग्रहण करता है। कबीर जी कहते हैं सुनो भाई साधुओं नाम स्मरण आदि अन्त और पर्यन्त तक रहेगा।

कथा :– एक औरत थी वह भजन कीर्तन में जाती थी। उसका एक बेटा था। वह औरत यह चाहती थी कि उसका पुत्र नाम स्मरण करे तथा बहुत आगे बढ़े और उसका पुत्र भी ऐसा ही था वह नाम स्मरण इतने ध्यान से करता था। इतना मग्न होकर करता था कि एक दिन जब नाम स्मरण कर रहा था तो उसकी माँ भोजन लेकर आयी और उसके पास रख दिया और भोजन खा लो कह कर चली गई फिर थोड़ी देर बाद आयी तो उसने देखा कि अभी तक उसने भोजन नहीं किया है। वह फिर यही कहकर चली गई कि पुत्र भोजन खा लो। ऐसा तीन चार बार हुआ। आखिर उसने अपने पुत्र से पूछा कि तुम भोजन क्यों नही कर रहे हो ? तो उसने उत्तर दिया कि

हे माता मैं खाना खाने में अपना वक्त व्यर्थ क्यूं गवाऊँ। मैं रोटी तोड़ूँगा फिर खाऊँगा उसमें वक्त व्यंर्थ जाएगा उसका यह जवाब था।

जब वह लड़का नाम स्मरण में इतना खो गया कि उसे यह लगने लगा कि भोजन करनें में मेरा वक्त व्यर्थ होगा तो वह भोजन नहीं करता तो फिर हम क्यों थोड़ी देर भी नाम स्मरण नहीं कर सकते ? कर सकते हैं। अगर हम चाहें। नाम स्मरण करने से मन शांत रहता है।

कई लोग कहते हैं कि सत्संग और नाम स्मरण में क्या रखा है लेकिन मैं कहती हूँ। इसमें बहुत कुछ है बहुत कुछ क्या इसमें सब कुछ है इससे हमारा जीवन सफल होता है। जिस परमात्मा ने हमें इतना सुन्दर मनुष्य रूप दिया है। तो हम उसका उपयोग उसके ही भजन में करें। जिससे हमारा उद्धार हो। लोग कहते हैं जब हम बूढ़े होंगे तब हम मन्दिर जाया करेंगे अभी क्या हमारे मन्दिर जाने के दिन हैं, मन्दिर तो बूढ़े लोग जाते हैं। लेकिन वह यह नहीं सोचते कि जब हमें ही कोई बासी चीज अच्छी नहीं लगती तो वो परमात्मा हैं वह कैसे स्वीकार करे जिस तरह हमें फूल ताजा पसन्द आता है। मुर्झाया हुआ फूल फैंक देते हैं। उसी तरह अगर हम परमात्मा के चरणों में बूढ़े होकर जायेंगे तो ये भगवान का अपमान होगा जेसे हम भगवान के चरणों में मुर्झाया फूल नहीं चढ़ाते तो हम अपने को बूढ़े होकर क्यों चढ़ायें?

इसके लिए मैं अपने गुरु की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे गह सब बातें बताई जिन्होंने हमें यह बताया कि संसार में संसार की बातों में क्या रखा है यह सब व्यर्थ है इसमें कुछ नहीं रखा है अपना मन परमात्मा में लगाओ, अपना मन प्रार्थना में लगाओ, अपना मन नाम स्मरण में लगाओ, अपना मन भजन कीर्तन में लगाओ । वह कहते हैं अगर तुम परमात्मा को पाना चाहते हो तो नाम स्मरण में इतना मन लगाओ कि तुम्हें परमात्मा मिल जाए।

कु. बबीता
ग्वालियर

नाम का महत्त्व

नाम का महत्त्व यथार्थ तत्व है। बड़े–बड़े ऋषियों और संत महात्माओं ने नाम की महिमा का स्वयं अनुभव करके ही उसके गुण गाये है। अभी भी ऐसे लोग मिल सकते हैं। जिन्हें 'नाम' की शक्ति का अनुभव अनेक बार हो चुका है। जिनको नाम शब्द की चाहना हो जाती है। उन्हें भूलकर भी किसी और वस्तु की चाहना नहीं रहती है। 'नाम' के रस में मस्त हो जाते हैं। और उनके लिए कोई अपना पराया नहीं रह जाता है। जो 'नाम' के उच्चारण को समझते हैं। वह स्वयं और इस जगत को पूर्ण रूप से पावन कर देते हैं। नाम लेने वाले संसार में पूजे जाते हैं। और उनके पापों का नाश भी 'नाम' के द्वारा होता है। 'नाम' का महत्त्व समझ कर 'गुरु द्वारा दिये गये 'नाम' का निरन्तर जाप करने से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं और मनुष्य परमात्मा को पा सकता है। 'नाम' के बिना भगवान की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पहचान 'नाम' से ही शुरु होती है। चाहे वो रूप हो तो वह 'नाम' के अधीन देखा जाता है। किसी के पास 'हीरा' है परन्तु जब तक उसे उसका मूल्य नहीं पता तब तक वह 'हीरे' को पहचान नहीं पाता इस प्रकार मनुष्य जब तक 'नाम' का महत्व नहीं समझ पाता वह उसे पहचान नहीं सकता। जब उसे 'नाम' या 'हीरे' का महत्त्व समझ आ जाता है और 'नाम' का स्मरण करता है तो उसका अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है। और वह प्रबल सुख की प्राप्ती का अनुभव करता है। जिसे 'नाम' की 'मणी' मिल जाये उसे संसार के विषयों की आवश्यकता नहीं रहती। यदि अंतकाल में मनुष्य 'नाम' का स्मरण करे तो मोक्ष की प्राप्ति में संदेह नहीं रहता है। इसलिये 'नाम' की महिमा का महत्त्व समझकर एक क्षण भी नाम बिना व्यर्थ नहीं जाने दें।

–प्रिया तनवानी, जयपुर

नाम महिमा

दोहा : कोटि तीर्थ व्रत दान तप कोटि योग जप ध्यान।
कोटि ज्ञान विज्ञान मख तुलैं न नाम समान।।

भावार्थ : करोड़ तीर्थ की यात्रा अनेक प्रकार के दान एवं तप कई प्रकार के जोग ध्यान कई प्रकार के ज्ञान विज्ञान मख (यज्ञ) भी नाम की महिमा से कम ही होते हैं।

छन्द : अन्न अशनतजि वनफल खाना, गज, रथ, वाजि दंड गौ दाना।
गौदेइ कोटिन दान गिरि चढ़ि झाँप ले तन जारहिं।
सब करहिं तीरथ अटन ज्ञान पुराण वेद बिचारहीं।।
मख कोटि सुर तैतीस राधै योग अस्टाँगहु करै।
इक राम नाम जहाज बिनु संसार–सागर ना तरै।।

भावार्थ : चाहे कोई अन्न का भोजन त्याग कर जीवन भर फलाहार करता रहे हाथी, घोड़े, रथ तथा करोड़ों गोओं का दान करता रहे, पर्वत पर चढ़कर भाप लेते हुये तन को जलाता रहे। सम्पूर्ण तीर्थों में भ्रमण करता रहे, वेद पुराणों का सम्यक ज्ञान करता रहे, अनेको यज्ञ करता रहे। तैतीस करोड़ देवताओं की साधना करता रहे, योग के आठों अंगों को भी करता रहे किन्तु नाम रूपी जहाज बिना कोई भी संसार रूपी सागर से पार नहीं हो सकता है। चाहे चन्द्रमा में से आग बरसने लगे। आकाश में फल लगने लगे। अंधकार सूर्य को नष्ट कर दें। यह सब असम्भव भी सम्भव हो जाये। किन्तु **नाम भजन बिना कोई अक्षय सुख नहीं पा सकता है। यह पत्थर की लीक है। सप्त कोटि जगमंत्र है।** संसार भर में सात करोड़ मंत्र हैं। सभी मंत्र यथायोग्य फल देते हैं। कुछ नाम निर्गुण होते हैं। कुछ नाम सगुण है। पर इनमें अन्तर नहीं है। **सगुनहिं अगुनहिं नहीं कछु भेदा** जैसे आग काठ में भी है और बाहर भी पर दोनों एक ही है। नाम चाहे निर्गुण हो या सगुण एक ही है। इस प्रकार **समुझत सरिस नाम अरू नामी** नामों में राम–नाम और गुरू शब्द को प्रमुखता से माना जाता है। जैसे देवताओं में इन्द्र मनुष्यों में राजा समस्त नदियों में गंगा पर्वतों में सुमेर धर्मों में अहिंसा भक्ति में प्रेम। भक्ति ज्ञानों में ब्रह्मज्ञान और सब नामों में राम नाम, और गुरु शब्द ही प्रमुख है। **महामंत्र तेहि जपत महेशू, काशी मुक्ति हेतू उपदेशू** इसे शंकर भगवान जपते हैं। और इसी का उपदेश काशी में मुक्ति का कारण है। राम नाम की महिमा को नाम जप कर लाभ प्राप्त करते हैं। **जपहिं नाम जन आरत भारी मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी** उनके बड़े से बड़े दुख मिट जाते हैं। और वह सुखी हो जाते हैं। प्रमाण तो अनेक है। जैसे गज, प्रहलाद, द्रोपदी आदि हैं। संसार में नाम जप से अर्थ है मनन करना।

(1) **मानस जप :-** मन ही मन मंत्र का अर्थ मनन करके उसे धीरे–धीरे इस प्रकार उच्चारण करे कि रसना और होठ में गति न हो।

(2) **वाचिक मंत्र जप :-** वर्णों (अक्षरों) का स्पष्ट उच्चारण करना इसमें मंत्र की संख्या का ध्यान रखना पड़ता है।

(3) **उपांशु जप :-** रसना और होठ हिलाकर मंत्र के अर्थ (स्वरूप) का विचार करते हुये इस प्रकार उच्चारण करना कि कुछ सुनाई न पड़े।

नोट :- वाचिक जाप से दशगुना फल उंपाशु में सौ गुना फल रसना में और हजार गुना फल मानस जप में होता है यह सब विधि सकाम वालों के लिये है। और जो (मोक्ष कैवल्य निर्वाण) के लिये जप में कोई प्रक्रिया नहीं होती वह तो लय (लगन) लगाकर करनी होती है। इस प्रकार यह लोक में और परलोक में आप हम सब नाम जप से ही सुखी हो सकते हैं। और जो **चहहिं गूढ़ गति जेऊ नाम जींह जपि जानहिं तेऊ** यहाँ पर गूढ़ गति का अर्थ है। आत्मा परमात्मा की गति, तत्व का ज्ञान, माया और गुणों की गति शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, बुद्धि अहंकार और माया ये आठ आवरण पर्दा है ये गूढ़ गति ही है। साधक इसे जप करके जान लेते हैं। **साधक नाम जपहिं लय लाएँ होहिं सिध अनिमादिक पाएँ** अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा प्राप्ति, प्राकाट्य, ईशित्व, वशित्व आँठो सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं। आज हम अपने पंथ को ही देखें जो सिन्ध देश के छोटे गाँव से सारे संसार में फैलकर प्रकाश कर रहा है। यह नाम की शक्ति ही है। गुरु–शब्द राम नाम, की महिमा असीम और अमोघ है (जो कभी व्यर्थ नहीं जाती) जो जन्म मरण रूपी संसार दुःख से मुक्त करने वाली है।

सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज
की अन्तः प्रेरणा से निरसृत

सरेश (सांवल) प्रेम प्रकाशी
प्रेम प्रकाश आश्रम मुरैना

स्वाँस स्वाँस में नाम सुमरन

नाम-महिमा

अप्रैल 2003

सर्वप्रथम मैं परमात्मा को इस बात का बहुत-बहुत धन्यवाद दूँगी। जो उन्होंने मुझे इतने अद्भुत शीर्षक का वर्णन करने के लिए प्रेरणा दी। और मेरे अन्दर बैठे परमात्मा ने मुझे एक बार फिर से नाम जपने के लिये प्रेरित किया। अब उस परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि वे मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें जो मैं भी नाम सुमरन की हदें पार करके उसे पा सकूँ।

आज तक हमनें जितने भी महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़े या सुने होंगे। जिन्होंने परमात्मा को पाया। उन सभी के जीवन में हमने एक ही बात के महत्त्व को जाना है। कि उन्होंने परमात्मा को पाने से पहले उसे पुकारा और परमात्मा को स्वाँसों के द्वारा पुकारने का दूसरा नाम ही नाम सुमरण है। हमारे प्राणों के आधार हमारे स्वाँस ही हैं। तथा हमारे प्राणों में वहीं परमात्मा बसता है। तो जब उन्हीं स्वासों से हम उसे पुकारते हैं तो उन प्राणों में बसे परमात्मा को उभरना ही पड़ता है। और जब वह उभरता है। जब वह आता है तो हम मिट जाते हैं। वैसे तो हमारे में व परमात्मा में कोई भेद नहीं हैं परन्तु अज्ञान वश हम अपने आप को शरीर मान बैठे हैं। और मोह-ममता में फँसकर उस अविनाशी चैतन्य को भुला बैठे हैं। जो सदैव हमारे साथ हैं। जिसके कारण हम जीवित हैं।

हम अपने निज स्वरूप को कैसे पहचानें जिसे हम कई जन्मों से भुला बैठे हैं। अपने निजस्वरूप की पहचान सिर्फ मानुष जनम में ही हो सकती है। वैसे तो इस सृष्टि में चौरासी लाख योनियाँ है। परन्तु एक मनुष्य योनी को छोड़कर बाकी किसी भी योनी में परमात्मा को नहीं पाया जा सकता। और यदि किसी और योनि में परमात्मा को पाने का प्रयत्न किया भी जाए, तो वह निष्फल ही है।

हमें अपना यह मानुष चोला सफल करना है। और इसी जन्म में उसे पाना है, उसी बात को सदियों से संत, महात्मा हमें समझाते आ रहे हैं। परन्तु हम अपना इतना अमोलक जीवन सिर्फ खाने-पीने, सोने व संसारी कर्तव्यों को निभाते हुए ही समाप्त कर देते हैं।

बरसों से हमें बड़े-बड़े महापुरुष, योगीराज, संत लोग यही बता रहे हैं कि हम अपने स्वरूप को कैसे पहचानें, इसके लिए हमें आवश्यकता है एक पूर्ण ज्ञानी सच्चे सद्गुरु की। जो हमें ज्ञान की नाव में बिठाकर इस भव सागर से पार लगाये।

क्योंकि एक सद्गुरु ही हमारे अंदर के सारे अज्ञान के ताले तोड़कर हमें ज्ञान की उस गहराई का स्पर्श करा सकता है। जहाँ इस बात का उद्घोष होता है। कि "अहं ब्रह्मस्मि"।

परन्तु उन सारे अज्ञान के तालों को तोड़ने की कुंजी भी तो सद्गुरु के पास ही होती है। और उस कुंजी का नाम है "गुरुमंत्र"। जिस प्रकार हमारे गुरु पूर्ण होते हैं उसी प्रकार उनका मंत्र भी पूर्ण होता है। और पूर्ण गुरू के पूर्ण मंत्र को पाने के बाद हमारा काम होता है कि हम भी पूरी लगन और पूरी प्यास के साथ उस मंत्र का सुमरन करें। और जब वह मंत्र धीरे-धीरे स्वासों के द्वारा हमारे रोम-रोम को पवित्र करता है। तो उसी पवित्रता में हमें उस परमात्मा का आभास होता है। और यदि हम नाम सुमरन नहीं करते तो हममें वह पवित्रता भी नहीं आ सकती। तथा अपवित्रता में परमात्मा का मिलन होना तो असंभव है। पर हमने तो अपने मन में यही बात ठान ली है कि हमने गुरु तो किये हैं अब हमें कुछ करने की जरूरत नहीं है। अब तो घर बैठे ही हमें वे पार लगायेंगे।

एक बार मैंने श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ में एक बात पढ़ी

कि जिसके ऊपर गुरु की पूर्ण कृपा है। उसके मन में कभी–भी कोई शंका पैदा नहीं हो सकती। तो मैंने गुरुदेव से पूछा कि कभी–भी मन में कोई शंका न व्यापे यह बहुत बड़ी बात है। और जिन्होंने अपने गुरु की ऐसी कृपा प्राप्त की होगी। वे तो बड़े ही भागों वाले होते होंगे, तो अपने गुरु की ऐसी कृपा हमें कैसे प्राप्त हो ?

तो उन्होंने कहा – कि गुरु की कृपा तो निरन्तर हमारे ऊपर बरस रही है। परन्तु उनकी कृपा को हम उतना ही पा सकते हैं, जितनी हमारे अन्दर ग्रहण करने की योग्यता है। तो मैंने पूछा कि फिर हमारी योग्यता कैसे बढ़े ? जो हम इस काबिल बन सकें। कि हमारे गुरूवर हम पर जितने बरसें तो हममें भी उनकी पूर्ण कृपा को पाने की उतनी ही योग्यता हो।

तो उन्होंने कहा कि नाम सुमरण से ही हमारे अन्दर ऐसी योग्यता आ सकती है। परन्तु हमने तो नाम लेकर उसे तिजोरी में बंद करके रख दिया है। जिस प्रकार यदि हम बीमार हो और डॉक्टर से दवाई लाकर के रख दें और उस दवाई को खायें न ! और कहें कि दवाई तो लेकर आये हैं। पर आराम नहीं है। तो सभी हमें मूर्ख ही कहेगें। चिकित्सक तो हमें दवाई दे सकता है। परन्तु अपना दर्द मिटाने के लिए उसका उपयोग तो हमें ही करना पड़ेगा।

उसी प्रकार हमारे गुरु भी हमें रास्ता दिखा सकते हैं हमारे साथ चल सकते हैं पर कदम तो हमें स्वयं ही उठाने पड़ेंगे। और इस मार्ग की शुरूआत से लेकर अंत तक नाम सुमरन ही हमारा साथी है।

अंत में मैं अपनी लेखनी को विराम देते हुए गुरु महाराज से यही प्रार्थना करूँगी कि वे भी मुझे ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें कि मैं भी नाम जपकर अपने इस मानुष जनम को सफल करके अपने निज स्वरूप में समाकर अपने गुरूवर को प्रसन्न कर सकूँ।

कु. समता पमनानी, ग्वालियर

सद्गुरु नाम महिमा

इस दासी की जुबान व कलम में इतनी शक्ति नहीं है जो गुरू नाम की महिमा का वर्णन कर सके। जैसे समुद्र को पार करने के लिए जहाज की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार संसार के भवसागर को पार करने के लिए गुरू का नाम ही जहाज (आधार सीढ़ी) है। हमें अपने गुरु के नाम में प्रेम श्रद्धा, विश्वास लगन होनी चाहिये। नाम ही गुरू का रूप है। प्रभु के जिन–जिन भक्तों ने उस परम पद को पाया है वो अपने गुरू के द्वारा बताये गये नाम सुमरन से ही पाया है। भक्त ध्रुव व प्रहलाद ने 7–8 साल की उम्र में भगवान विष्णु का नाम सुमरन कर उस परम पद को पाया। रतनाकर महा भयानक डाकू था जिसने सन्तों के द्वारा दिये गये राम–नाम का सुमरन कर उस परम पद को पाया और वाल्मीक के नाम से प्रसिद्ध हुए जिन्होंने श्री रामायण ग्रन्थ की रचना की। प्रभु भक्तिनी मीरा श्री कृष्णचन्द आनन्दकन्द जी का नाम सुमरन कर जहर पी गयी और वह जहर नाम के प्रताप से अमृत हो गया। गुरु नाम की महान् शक्ति है। हमारे श्री प्रेमप्रकाश सम्प्रदायाचार्य श्रीमान् 1008 सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज ने भी अपने गुरु दादा आसूराम जी के द्वारा दिये गये नाम का प्रेम श्रद्धा लगन विश्वास से सुमरन करके उस परम पद को पाया जिनकी दिव्य अपार महान शक्ति हम सब प्रत्यक्ष देखकर रहे हैं। शेषनाग सहस्त्र मुखों से भी प्रभु नाम की महिमा का बखान नहीं कर सकते प्रभु नाम की महिमा। बेअन्त ! बेअन्त ! बेअन्त !

माला टिलवानी, प्रेम प्रकाशी, जयपुर

संस्कार चैनल

प्रत्येक रविवार दोपहर 3 से 3.30 बजे तक करें अमृतपान
सद्गुरू महाराज के दर्शन सत्संग का
20 अप्रैल 2003 रविवार
स्वामी गणेशानन्द जयंती, ग्वालियर
27 अप्रैल 2003 रविवार,
जाम नगर (सौराष्ट्र) यात्रा का प्रसारण होगा।

नाम-महिमा अप्रैल 2003

नाम किसे कहते हैं ?

प्यारे सद्गुरु देव जो शिष्यों को मंत्र देते हैं। जिसे नाम दीक्षा कहा जाता है। उस मंत्र के जाप करने को ही नाम जप कहते हैं। दो बचपन की सहेलियाँ थी एक की शादी माली से हुई दूसरी की शादी मछुआरे से। दोनों एक ही गाँव में थीं। माली की पत्नी बगीचे में फूलों के बीच रहती थी। और मछुआरे की पत्नी मछलियों को जाल में निकालती फिर सुबह बाजार में बेचने जाती। डलियों में भरकर मछलियों के माँस को बेचती इसी तरह तीन चार साल गुजर गये। एक दिन अचानक बाजार में दोनों सहेलियों का मिलना हुआ। माली की पत्नी ने कहा–सखी मेरा घर पास ही है आज तुम मेरे घर चलो साथ रहेंगे कल मेरे पतिदेव तुम्हें घर छोड़ आयेंगे। मछुआरिन ने अपने पति से आज्ञा ली और डलिया लेकर मालिन के घर आ गई चारों तरफ फूलों की महक भवरों की गुन्जार रंग बिरंगी तितलियों के झुरमुट फिर उसने अपनी डलिया की तरफ देखा। सड़न बदबू और चारों तरफ माँस के टुकड़ों पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। अब उसको बेचेनी होने लगी। बगीचे की सुगन्ध से, उसे अपनी दुर्गन्ध का एहसास होने लगा। मन में साचेने लगी मैं तो इस दुर्गन्ध को ही जीवन समझती थी। राजी ही हो गई थी। पर अब समझ में आया सुगन्ध भी जीवन है।

इसी तरह मैंने भी सुनी थी– नाम की महिमा पर अब जाना जीवन क्या है। सद्गुरु के मिलन से पहले आध्यात्मिक मार्ग से पहले हम किस नरक में जी रहे थे! न शौक था न लगाव, नाम लिया। जीवन ही बदल गया। सत्संग भाने लगा। सत्संगियों से प्रेम बढ़ने लगा। शुभ गुण आकर्षित करने लगे।

मैंने सुना है कि लोग मरने के बाद स्वर्ग जाते हैं! पर मैं मानती हूँ जो नाम जप करते हैं, वे यहीं इस धरा पर अपना जीवन स्वर्ग बना लेते हैं। नाम जपने से मन में ज्ञान की ज्योति जल जाती है, जिससे सारे पथ भ्रम भाग जाते हैं। यह मनुष्य जन्म बड़े भाग्य से मिलता है। अमूल्य जन्म में अनमोल नाम गुरुदेव के दिये नाम को जरूर जपना चाहिये। जिस मनुष्य को अपने कल्याण की कामना है उसे अंतकाल तक नाम स्मरण करते रहना चाहिये। सोते, जागते, उठते, बैठते, खाते, पीते सदैव कभी होठों से कभी हृदय में नाम सुमरण करना चाहिये। इस संसार की बातों विचारों की उपेक्षा कर अपना मन परमात्मा के ध्यान में जप में लगाना चाहिये मेरी प्रार्थना स्वीकार करो !

हे मेरे सर्मथ बाबा परम पिता परमात्मा
अन्तकाल में तेरा नाम जपूँ तन से,
मन से तेरा नाम जपूँ सदैव आपके चरणों में रहूँ।
सच जो आप न होते, सच जो तेरा नाम न होता।
पता नहीं हम कहाँ होते, पता नहीं हमारा क्या होता।
मेरी जिंदगी में क्या था तेरी कृपा से पहले।
मैं बुझा हुआ दिया था तेरी कृपा से पहले।।

राखी, ग्वालियर

जपियो सत्‌नाम साक्षी

तर्ज : छोटी–छोटी गैया, छोटे–छोटे गुवाल।
थल : गुरनि अुचारियो सत्‌नाम साखी
जपियो जपायो सत्‌नाम साखी.........

1. जेको जपीदों सत्‌नाम साखी–2, तहिं जो थीदों गुरु राखी....2।
लगे सभिनि खे मिठो माखी, जपियो जपायो सतनाम साखी...।।
2. जेको जपींदो सत्‌नाम साखी–2, तहिं जी कटिबी जम फासी....2।
गुरनि दिनो नाम विशवासी–2, जपियो जपायो सतनाम साखी...।।
3. जेको जपींदो सत्‌नाम साखी–2, कंदो सिमरन प्रभात् जागी...2।
दुखिड़ा कटीदों आहे सुखरासी–2, जपियो जपायो सत्‌नाम साखी...।।
4. औखीअ वेले सतनाम साखी–2, श्रीचन्द ईहो आहे सचो साथी...2।
गुरनि बुधायो शब्द अविनाशी–2, जपियो जपायो सत्‌नाम साखी...।।

श्रीचन्द कटारिया प्रेमप्रकाशी
कारंजा (वाशिम) महाराष्ट्र

नाम जप से मन की शुद्धि

गुरु नाम की महिमा एक ऐसी महिमा है जिसे शब्दों में बता पाना कठिन है जिस तरह सागर की गहराई, पर्वत की ऊँचाई को माप पाना कठिन है उसी तरह नाम की महिमा को भी बता पाना कठिन है। नाम वह निधि है जो आत्मा को परमात्मा से मिलाता है जो भवसागर से तार देता है जो आत्मा को उसका बोध करवाता है नाम मुक्ति का द्वार है गुरूनाम की महिमा गुरूमुख ही जान सकता है क्योंकि जब उसे नामदान मिलता है तो वह अपने आप बदलाव महसूस करता है। दुख उसे उतना दुखी नहीं करता जितना वह पहले होता था। नाम वह कश्ती है जिससे वह हर संकट से तर जाता है। गुरू हर पल उनके साथ होता है निरन्तर नाम जप से मन को शान्ति का अनुभव होता है। गुरूमुख का सांसारिक पदार्थों से मोह हटकर गुरू ज्ञान से प्रेम हो जाता है वह संसार में रहता जरूर है। सांसारिक पदार्थों को भोगता है। मगर वह कर्म बन्धन में नहीं बंधता, उसे फल की इच्छा नहीं रहती है। वह नश्वर को छोड़ शाश्वत परमात्मा की ओर अग्रसर हो जाता है। हम संसार के पदार्थों में चाहे कितना ही मोह क्यों न करें, चाहे कितना ही इसे सम्भाल के रखे लेकिन इन्हें तो हमें छोड़ जाना है ये शरीर जिस पर हम अभिमान करते हैं ये तक हमारे साथ नहीं चलता। साथ केवल चलता है तो सिर्फ एक गुरू का नाम अन्तकाल में भी हम गुरू का नाम ही लेते हैं। नाम मोक्ष का द्वार है गुरूमुख के साथ गुरू हर पल रहते हैं। हर संकट से उसकी रक्षा करते हैं। जिस तरह एक बच्चा अपने माँ की आँचल में शान्ति पाता है। उसे किसी का भय नहीं रहता है उसी तरह गुरूमुख गुरू की शरण में आ जाता है। वह गुरू का हो जाता है। उसे जन्म-मरण का डर नहीं रहता। उसे अपने आप में सच्चे आनन्द की प्राप्ति होती है। नाम वह कड़ी है जो गुरू व गुरूमुख को जोड़ता है। नाम जाप से मन की शुद्धि होती है। आत्मा में पवित्रता आती है। गुरूनाम से गुरूज्ञान से प्राणी को मनुष्य जन्म के सच्चे उद्देश्य की प्राप्ति होती है। क्योंकि हमारा जन्म इसलिये नहीं हुआ है कि खाये-पिये, रोये-हँसे और मर जाये। मनुष्य जन्म का उद्देश्य तो उस सचिदानन्द की प्राप्ति के लिये है। यह गहन ज्ञान हमें गुरूज्ञान से ही प्राप्त होता है नाम उस गहन ज्ञान को प्राप्त करने की सीढ़ी है।

कलियुग में हरि नाम है, सब साधन का सार।
कहे टेऊँ तिंह सुमरके, पाओ मोक्ष द्वार।।
हिक-हिक दम जो मुल लख-लख थई।
नाम बिना मुल तहिंजो कख थई।।
मानुष जन्म मिला तुझे, फकत खाने के ना लिये।
ये तो मिला हरि भजन, उस प्रभु पाने के लिये।।

भारती, माया लालचन्दानी
सद्गुरु टेऊँराम "बालिका भजन मण्डली", जयपुर

नाम-सुधा-धारा

जपो रे जपो रे नाम और भी ले मन।
देह अभिमानसे हो, तुम अचेतन।।
देहत्राय नहीं, तुम चिदानन्दमय।
नाम जपो, अहंकार हो जायेगा क्षय।
मिलन चाहते भक्त, चाहे नहीं मिश्रण।
मिलन में परमानन्द कहते भक्त-जन।।
क्या है प्रयोजन ? उसकी सोची नहीं बात।
अविराम जपो नाम, तुम दिन-रात।।
नितान्त शरणागत हूँ तेरा, नहीं कोई ठौर।
इस मन्त्र-सम कुछ, नहीं यहाँ और।।
चरण-शरण में तेरे, आया है उदार।
वाचा मनसे कहो तुम बार-बार।।
देंगे अभयदाता, निश्चय ही अभय।
साधन-संग्राम में तुम्हें, मिलेगी विजय।।
जपो नाम, गाओ नाम, नाम करो ठौर।
दास सीताराम तेरी गति नहीं और।।

– श्री सीताराम दासजी

पावन प्रसंग

नाम-महिमा अप्रैल 2003

प्रभु का स्मरण ही सबसे उत्तम

नैमिषारण्य क्षेत्र में अटठासी हजार महात्मा बैठे हुए थे। वहाँ बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी थे। सूतजी मुख्य वक्ता तथा शौनकजी प्रमुख श्रोता थे। घूमते-घूमते महर्षि वेदव्यास जी भी वहाँ जा पहुँचे। उनके स्वागत में समस्त ऋषियों ने एक ज्ञानगोष्ठी का आयोजन किया। उस गोष्ठी में एक प्रश्न रखा गया कि दुनिया में सबसे निन्दनीय कौन है ? जघन्य कौन है ? नीच कौन है ? अधमाधम कौन है ?

एक ऋषि उठे और बोले-इस प्रश्न का उत्तर मैं दे सकता हूँ। सभी ने कहा – ठीक है, आप बताईये ? ये ऋषि बोले – **केचिद्वदन्ति धनहीनजनो जघन्यः।**

वे लोग निन्दनीय है, जिनके पास धन नहीं है। धनी आदमी की हर जगह पूछ है-मान, प्रतिष्ठा बढ़ाई लेकिन जिसके पास पैसा नहीं है, उसे कोई नहीं पूछता, इतने में एक दूसरे ऋषि उठे और बोले-भाईयों ! ज्यादा बहस न करो, तुम सब लोग गलत हो, मैं बताता हूँ कि निन्दनीय कौन है ? सब ऋषि चुप होकर वेदव्यास जी की ओर देखने लगे। महर्षि ने गम्भीर होकर अपना फैसला सुनाया :-

व्यासो वदत्यखिलशास्त्रपुराणवेत्ता। नारायण-स्मरणहीनजनों जघन्यः।।

अर्थात् हे ऋषियों ! दुनिया में सबसे अध-माधम वही पुरुष है जो इस देघदुर्लभ दिव्य मानव शरीर को प्राप्त करके प्रभु का स्मरण, भजन, चिन्तन, पूजा-पाठ नहीं करता है। इसका भाव यह है कि हमें ऋषियों की दृष्टि में निन्दनीय नहीं बनना चाहिये। प्रभु का भजन-चिन्तन सदैव करते रहना चाहिये।

भगवान शिव को राम नाम प्रिय

भगवान शंकर का 'राम' नाम पर इतना स्नेह है कि वे मुर्दे की भस्म अपने शरीर पर लगाते हैं। कोई एक आदमी मर गया, लोग उसे शमशान ले जा रहे थे और 'राम-नाम सत् है' ऐसा उच्चारण कर रहे थे। शंकर ने देखा कि यह कोई भक्त, है जो इसके प्रभाव से ले जाने वाले 'राम' नाम बोल रहे हैं। बड़ी अच्छी बात है, वे उनके साथ में हो गये। 'राम' नाम की ध्वनिं सुने तो 'नाम' नाम के प्रेमी साथ हो ही जायँ। जैसे-पैसों की बात सुनकर पैसों के लोभी उधर खिंच जाते हैं, सोने की बात सुनते ही सोने के लोभी के मन में आती है कि हमें भी सोना मिले और गहना बनवायें, इसी प्रकार भगवान शंकर का मन भी 'राम' नाम सुनकर उन लोगों की तरफ खिंच गया।

अब लोगों ने मुर्दे को शमशान में ले जाकर जला दिया और पीछे जब अपने-अपने घर लौटने लगे तो भगवान शंकर ने सोचा- 'क्या बात है ? ये आदमी तो वे-के-वे ही हैं, परन्तु नाम कोई लेता ही नहीं।' उनके मन में आया कि उस मुर्दे में ही करामात थी, उस कारण ही ये सब लोग 'राम नाम' ले रहे थे। वह मुर्दा कितना पवित्र होगा। भगवान् शंकर ने शमशान में जाकर देखा, मुर्दा तो जलकर राख हो गया। इसलिये उन्होंने उस मुर्दे की भस्म अपने शरीर में लगा ली और वहाँ ही रहने लगे। अतः राख में 'रा' और मुर्दे में 'म' इस तरह 'राम' हो गया। 'राम' नाम उन्हें बहुत प्यारा लगता है। 'राम' नाम सुनकर वे खुश हो जाते हैं, प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिये मुर्दे की राख अपने अंगों में लगाते हैं।

गुरु कृपा, अमरापुर स्थान, जयपुर

पावन प्रसंग

भगवत् प्रेमी अहमदशाह

एक मुसलमान भक्त थे। उनका नाम अहमदशाह था। उन्हें प्रायः भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन होते रहते थे। अहमदशाह से वे विनोद भी किया करते थे। एक दिन अहमदशाह एक बड़ी लम्बी टोपी पहनकर बैठे हुए थे। भगवान को हंसी सूझी। वे उनके पास प्रकट होकर बोले–'अहमद' ! मेरे हाथ अपनी टोपी बेचोगे क्या ? अहमद श्रीकृष्ण की बात सुनकर प्रेम से भर गये। पर उन्हें भी विनोद सूझा। वे बोले–'चलो हटो, दाम देने के लिये तो कुछ है नहीं और आये हैं टोपी खरीदने।'

भगवान्–'नहीं जी ! मेरे पास बहुत कुछ है।' अहमद–'बहुत कुछ क्या है, लोक–परलोक की समस्त सम्पत्ति ही तो तुम्हारे पास है। पर वह लेकर मैं क्या करूँगा ?

भगवान्–'देखो अहमद ! यदि तुम इस प्रकार मेरी उपेक्षा करोगे तो मैं संसार में तुम्हारा मूल्य घटा दूंगा। इसीलिये तो तुम्हें लोग पूछते हैं, तुम्हारा आदर करते हैं कि तुम भक्त हो और मैं भक्त के हृदय में निवास करता हूँ। किन्तु अब मैं कह दूंगा कि अहमद मेरी हंसी उड़ाता है, उसका आदर तुम लोग मत करना फिर संसार का कोई व्यक्ति तुम्हें नहीं पूछेगा।' अब तो अहमद भी बड़े तपाक से बोले–'अजी ! मुझे क्या डर दिखाते हो। तुम यदि मेरा मूल्य घटा दोगे तो तुम्हारा मूल्य भी मैं घटा दूंगा। मैं सबसे कह दूंगा कि भगवान् बहुत सस्ते मिल सकते हैं, वे सर्वत्र रहते हैं, सबके हृदय में निवास करते हैं। जो कोई उन्हें अपने हृदय में झांककर देखना चाहेगा, उसे वहीं मिल सकते हैं। कहीं जाने की जरूरत नहीं। फिर तुम्हारा आदर भी घट जायेगा।'

भगवान हंसे और बोले–'अच्छा, भैया ! न तुम चलाओ मेरी न मैं चलाऊँ तेरी।'

ये अहमद निरन्तर भगवान के ध्यान में तल्लीन रहा करते थे।

भगवान के नाम से तृप्ति

श्रीरामचन्द्र जी के राज्याभिषेक को बहुत समय हो चुका था। माता जानकी जी के मन में प्रभु भक्त हनुमान के प्रति वात्सल्य उमड़ा। एक दिन उन्होंने कहा: हनुमान ! कल मैं तुम्हें अपने हाथों से बनाकर भोजन कराऊँगी।

माँ सीता के ये वचन सुनकर हनुमान जी का हृदय आनन्द से भर गया। उनकी प्रसन्नता का क्या बयान किया जाय ! जगन्माता स्वयं भोजन बनाकर खिलाये, ऐसा सौभाग्य किसे मिलता है ? दूसरे दिन बड़े स्नेह और उल्लास से श्री जनकनन्दिनी ने नाना प्रकार के व्यंजन बनाये और हनुमान जी को आसन पर बैठाकर भोजन परोसने लगीं। माता स्नेह से परोसे तो पुत्र को क्षुधा न भी लगी हो तो लग जाय। हनुमान जी ने भावविभोर होकर भोजन प्रारम्भ किया। जो कुछ थाली में पड़ता, एक ही बार में मुख में चला जाता। थोड़ी ही देर में अयोध्या सम्राट के रसोई घर के व्यंजन समाप्त होने को आये परन्तु हनुमान का हाथ तो शिथिल हो ही नहीं रहा था। यह देख जानकी जी को चिन्ता होने लगी।

अन्त में सीता जी ने लक्ष्मण जी को बुलाया और अपनी कठिनाई बतायी। लक्ष्मण बोले: 'ये रूद्र के अंशावतार हैं। इनको भला इस प्रकार तृप्ति कौन दे सकता है।' लक्ष्मण जी ने एक तुलसीदल पर चन्दन से 'राम' लिखकर हनुमान जी के भोजन पात्र में डाल दिया। वह तुलसीदल (पत्र) मुख में जाते ही हनुमान जी को तृप्ति मिली तथा आनन्द में नृत्य करते हुए उनका मन राम–रस में रम गया।

गुरू कृपा, अमरापुर स्थान, जयपुर

यात्रा दर्शन

तीर्थ दर्शन

पूज्य सद्‌गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का देशाटन

आगरा, अलीगढ़, गांधीधाम, राजकोट, जामनगर में हुई विशाल सत्संग सभायें।

हरिद्वार गंगा दर्शन, द्वारिका में द्वारिकानाथ के दर्शनों से अभिभूत हुए सन्त व सद्‌गुरू महाराज

आगरा - श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की मनोहारी दिव्य झाँकी दर्शन के साथ 9 मार्च को प्रातः लगभग 10 बजे पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का भारी हर्षोत्साह के साथ आगरा पहुँचने पर स्वागत किया गया। नाचते गाते अपार प्रेमियों का प्यार देखते ही बनता था। भव्यतम जुलूस के साथ पूज्य स्वामी जी को प्रेम प्रकाश आश्रम केदार नगर लाया गया। शोभा यात्रा मार्ग में अनेक स्थानों पर सामाजिक–धार्मिक–व्यापारिक संस्थाओं के द्वारा पूज्य स्वामी जी के आगमन की खुशी में पुष्पवर्षा कर स्वागत किया जाकर, साथ ही परसाद–जल–ठण्डाई का वितरण भी किया जा रहा था। केदार नगर के बगीचे में सत्संग आयोजन में हजारों प्रेमियों ने भगवन्नाम का अमृत पीया। इसके अतिरिक्त श्री रामकृष्ण आडोटोरियम बलकेश्वर व नामनेर में सत्संग दर्शन से क्षेत्र पावन हो उठा। आगरा क्षेत्र का प्राचीन प्रेम प्रकाश आश्रम (काला महल) का पुर्ननिर्माण किया जाकर भव्यतम रूप दिया गया है, यहाँ के नवीनतम सत्संग सभागार में पूज्य स्वामी जी के अमृतमयी वचनों व दर्शनों का लाभ प्रेमियों को प्राप्त हुआ। आगरा के कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप दे रहे थे। केदार नगर आश्रम की संचालिका दीदी भगवन्ती देवी व काला महल आश्रम के संचालक सन्त भगत प्रकाश जी के संयोजन में प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के समस्त सक्रिय कार्यकर्ता।

आगरा के चार दिवसीय यात्रा के पश्चात् पूज्य स्वामी जी के नेतृत्व में सन्त मण्डली हुई रवाना अमरापुर वाहन से अगले पड़ाव की ओर...........।

अलीगढ़ - अलीगढ़ प्रवेश द्वार (नाके) पर प्रतीक्षित नगर का सिन्धी समाज प्रातः 10 बजे ज्योंही प्रेम प्रकाशी धर्म ध्वजा झुलाता हुआ अमरापुर वाहन दिखा, उपस्थिति प्रेमी जोश खरोश से सद्‌गुरू भगवान के जयकारे लगाने लगे, पूज्य गुरूदेव भगवान की अगवानी करने के लिये सिन्धी समाज व आश्रम के वरिष्ट प्रेमियों ने वाहन में अन्दर जाकर पूज्य गुरूदेव भगवान का अभिनन्दन किया और आपसे बाहर आकर एक अन्य सजे हुए वाहन में बैठने की प्रार्थना की। पूज्य स्वामी जी जैसे ही बाहर निकले युवा प्रेमियों का उत्साह हिलोरें मारने लगा, यहाँ से पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली को नई बस्ती स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में बैण्ड बाजों के साथ एक शोभा यात्रा के रूप में लाया गया। दो दिवसीय सत्संग कार्यक्रम में अलीगढ़ व निकटस्थ क्षेत्रों के हजारों प्रेमियों ने सन्त दर्शन – सत्संग सेवा की त्रिवेणी का अमृत पीया।

अलीगढ़ के प्रेमियों से विदा होकर पूज्य गुरूदेव भगवान मण्डली सहित मात गंगे के दर्शन–स्नान के लिये प्रेम प्रकाश आश्रम भोपत वाला **हरिद्वार** पहुँचे। 15 से 18 मार्च तक हरिद्वार यात्रा के पश्चात् पूज्य महाराज श्री 18 मार्च रात्रि मलिकागंज, **दिल्ली** स्थित प्रेम प्रकाश धाम पधारे। यहाँ से पूज्य श्री 19 मार्च को प्रातः 11 बजे बरेली एक्स. से गाँधीधाम (सौराष्ट्र) के लिये रवाना हुए। 20 मार्च को दोपहर 12 बजे **गाँधीधाम** पहुँचने पर सैकड़ों की संख्या में उपस्थित प्रेमियों ने सद्‌गुरू भगवान के जयघोष से स्टेशन क्षेत्र गुंजायमान कर दिया। नाचते गाते जयघोष करते, हरिनाम संकीर्तन करते शोभा यात्रा के रूप में स्वामी जी को श्री भगवानदास के निवास पर लाया गया। यहीं पर स्वामी जी ने गाँधीधाम यात्रा के

अन्तर्गत प्रवास किया। सत्संग का आयोजन प्रेम प्रकाश मन्दिर **आदीपुर** में हुआ। लगभग पाँच वर्षों के अन्तराल के बाद सद्गुरू महाराज के आगमन से प्रेमियों में नवीन स्फूर्ति का संचार हो गया। प्रेमियों के खिले हुए मुख गुरूदेव के दर्शनों से उनके उत्साह का बयां कर रहे थे। 21 मार्च को भाई प्रताप नगर स्थित झूलेलाल मन्दिर में 22 मार्च को स्वामी लीलाशाह दरबार में भी सत्संग कार्यक्रम में सीमाप्रान्त गाँधीधाम वासियों ने भरपूर अमृत लाभ लिया। शिव सिनेमा के पास झूलेलाल मन्दिर के सत्संग सभागार में तो जैसे पूरा क्षेत्र उमड़ आया हो सन्त दर्शन–सत्संग के लिये। गाँधीधाम यात्रा में गाँधीधाम के वरिष्ठ समाजसेवी बाबा भाई मूलचंद भाटिया, कन्हैयालाल मेघवानी, वेरोमल टेकवानी, नन्दलाल खेमचन्दानी, पमनदास खेसवानी के नेतृत्व में पूज्य सिंधी पंचायत गाँधीधाम व स्वामी लीलाशाह ट्रस्ट द्वारा पूज्य स्वामी जी का अभिनन्दन किया गया।

गाँधीधाम यात्रा में प्रेमियों को भगवन्नाम के प्रेमामृत में मस्त करते हुए पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली सहित 23 मार्च को प्रातः 10 बजे **राजकोट** अमरापुर वाहन द्वारा पहुँचे। पूज्य स्वामी जी की अगवानी व स्वागत सत्कार के पश्चात् उत्साहित प्रेमियों ने गाड़ियों के काफिले के साथ पूज्य स्वामी जी को प्रवास स्थल डॉ. जीवतराम मूलचन्दानीके निवास पर लाया गया। 149, शास्त्री नगर में स्थित स्वामी टेऊँराम आश्रम पर सत्संग समागम के विशाल आयोजन में भगवद् प्रेमी सज्जनों ने पूज्य स्वामी जी व सन्तों के मुखारविन्द से निःसृत ज्ञान गंगा का पान श्रद्धापूर्वक किया।

23–24 मार्च राजकोट यात्रा के पश्चात् पूज्य गुरूदेव भगवान का मण्डली सहित **जामनगर** अमरापुर वाहन में प्रातः 11 बजे पदार्पण हुआ। सैकड़ों प्रेमियों की अधीरता देखते ही बन रही थी। कि पहिले मैं पूज्य श्री की चरणवन्दना करूं–पुष्पमाला पहनाऊं **वाह-वाह सद्गुरू टेऊँराम तेरी देखी मेने महान शक्ति।** बैण्ड बाजों के साथ शोभायात्रा के रूप में पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ प्रेम प्रकाश आश्रम पधारे। श्री गुरुनानक सिन्धी गुरूद्वारा में सत्संगामृत का रसास्वादन प्रेमियों ने प्रेम पूर्वक किया। सिन्धू सेवा ट्रस्ट के द्वारा संचालित सिन्धी स्कूल व अस्पताल में पूज्य स्वामी जी का अभिनन्दन किया गया। स्कूल में छोटे–छोटे बच्चों द्वारा 2 घण्टे तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देशभक्ति से ओतप्रोत रही। जामनगर में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम माता धनी द्वारा पूज्य गुरूदेव भगवान की आज्ञा से स्थापित है। माता धनी के अमरापुर धाम सिधारने के पश्चात् उनके सुपुत्र श्री गुरूमुखदास जी आश्रम की सेवा–सत्संग का कार्य सुचारू रूप से कर रहे हैं। आश्रम छोटा होने के कारण पूज्य स्वामी जी का प्रवास सत्यपाल सुन्दरदास के यहाँ पर हुआ।

दो दिवसीय यात्रा के बाद 27 मार्च को श्री गुरू महाराज जी अमरापुर वाहन व तीन कारों द्वारा सन्त मण्डल प्रेमीयों के साथ 152 किलो मीटर चलकर भगवान दोपहर 12 बजे **श्रीद्वारकानाथ** का दर्शन किया। जहाँ पर स्वामी दतात्रिय महालक्ष्मी सत्यभामा व अम्बा जी का दर्शन वशिष्ठ व गोमती का दर्शन भी किया। तत्पश्चात् 30 किलो मीटर दूर **बेट द्वारका** पहुँचे। जहाँ नाव द्वारा चलकर **द्वारकाधीश** भगवान का शाम 4 बजे दर्शन किया। जो भगवान की राजधानी है। जहाँ से सुधामा भक्त मिलने आए थे जहाँ चावल का दान अन्न का शक्कर का दान किया जाता है। तुलादान का बड़ा महात्मय बताया गया है। तुलादान से अन्न तौलकर दान दिया जाता है। तत्पश्चात् 50 किलोमीटर दूर चलकर **नागेश्वर** शंकर भगवान के दर्शन कर **भाटिया शहर** में प्रेमी हरीश के बहिन के घर पर निवास कर प्रातःकाल **वीरावल** जहाँ पूर्व में श्री गुरू महाराज के कई प्रेमी रहते हैं। दर्शन देते सत्संग का अमृत पिलाते **सोमनाथ भगवान** का दर्शन करने के उपरान्त **भालका आश्रम** जहाँ भगवान श्री कृष्ण जी को व्याध द्वारा चरणों में तीर मारा गया था। वृक्ष के नीचे दर्शन कर तोलाराम अर्जनदास रेमण्ड वालो के दुकान पर चरण पखारते हुए आशीर्वाद करते हुए 28 मार्च रात्रि काल में सत्संग **जैतपुर** में किया जहाँ पर श्री गुरुनानक गुरुद्वारा में पूज्य पंचायत द्वारा फूलमालाओं से स्वागत किया गया। दर्शन सत्संग का लाभ पाकर प्रेमी बड़े आनन्दित हुए दूसरे दिवस पर 29

मार्च को श्री गुरू महाराज जी सन्त मण्डल व प्रेमी गण जो कि लगभग **50** प्रेमी सज्जनों के साथ **भावनगर** प्रेमीयों को दर्शन देने हेतु प्रेम प्रकाश आश्रम पर पधारे जो कि पूज्य स्वामी रामदास जी महाराज द्वारा निर्मित है। वहाँ सायंकाल सत्संग पंडाल सिंधी धर्मशाला के बाजू में किया। सैकड़ों भक्त प्रेमी दर्शन सत्संग का लाभ पाकर आनन्दित हुए। पूज्य स्वामी जी से अधिक समय देने हेतु प्रार्थना की गई। **30** मार्च को अमरापुर वाहन व कारों द्वारा **अहमदाबाद** दोपहर **12** बजे पधारे। प्रवास श्री जवाहरलाल के निवास पर किया। जहाँ प्रेम प्रकाश मण्डली के सैकड़ों प्रेमी स्वामी जी का स्वागत फूलमालाओं व फूलों की वर्षा करते हुए नाचते गाते हुए आये व सायंकाल सत्संग प्रेम प्रकाश आश्रम अम्बावाड़ी में हुआ। द्वितीय दिवस पर सत्संग श्री जवाहरलाल भक्त के निवास पर विशाल पंडाल में किया। सायंकाल सत्संग गुडलक हाउस गुडलक सिन्धी धर्मशाला मणीनगर में किया गया, जहाँ पूर्वज सत्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज व सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जी ने किया था। अपार जनसमूह भगवत् नाम के अमृत से सराबोर होकर आनन्दित हो नाचने झूमने लगा।

पूज्य स्वामी जी के साथ सन्त जयदेव जी, सन्त दयाप्रकाश जी, सन्त हरीओमलाल जी, सन्त हरीशकुमार, सन्त परसराम, सन्त श्री मुक्त कलाकार वीरभान, भगत मूलचन्द हांगकांग से आये प्रेमी भागचन्द, श्यामलाल के अतिरिक्त आगरा, अहमदाबाद इत्यादि के प्रेमी भी यात्रा में सम्मिलित थे।

सन्त हरिओम प्रकाश (यात्रा से), कार्यालय डेस्क

ग्रीष्मकालीन श्री अमरापुर धाम जयपुर की दैनिक समय सारणी

खुलने का समय	: प्रातः 6 से 12 बजे तक सांय 3 से 9 बजे तक
सत्संग का समय	: प्रातः 7 से 8:20 बजे तक सायं 5 से 6:30 बजे तक
आरती	: सांय 6:30 बजे
प्रत्येक रविवार सत्संग	: प्रातः 7 से 9:30 बजे तक सांय 5 से 7 बजे तक

__विशेष__ :– प्रत्येक गुरुवार व शनिवार को सांयकाल 5 से 9 बजे तक "__समाधि स्थल__" पर पुष्पों की झाँकी का दर्शन करें।

नोट :– दोपहर 12 से 3 व रात्रि 9 से प्रातः 6 तक श्री मन्दिर व मुख्य द्वार बन्द रहेगा।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की कैसेट सूची

।। नवीन वीडियो सीडी कैसेट जारी।।

1.	श्री प्रेम प्रकाश मण्डल समाचार दर्शन	50 रु.
2.	सद्गुरु टेऊँराम जीवन दिग्दर्शन	50 रु.
3.	संत समागम (मुम्बई मेला) (3 कैसेट सेट)	100 रु.
4.	अमरापुर दर्शन	50 रु.
5.	हरिद्वार मेला (तीन कैसेट सेट)	100 रु.
6.	चैत्र मेला (तीन कैसेट सेट)	100 रु.
7.	महा आरती	50 रु.

।। ऑडियो सीडी कैसेट।।

1.	सांई टेऊँराम अमृतवाणी (T-Series)	50 रु.
2.	अमरापुर वाणी (भजन कैसेट) i	50 रु.
3.	अमरापुर वाणी (भजन कैसेट) ii	50 रु.
4.	अमरापुर वाणी (भजन कैसेट) iii	50 रु.
5.	सबसे ऊँची प्रेम सगाई (सद्गुरू सर्वानन्द प्रवचन)	30 रु.

।। ऑडियो भजन कैसेट।।

1.	भजन सुधा	20 रु.
2.	नमः नमः गुरुदेव नमः	20 रु.
3.	सत्नाम साक्षी बोल	20 रु.
4.	सत्नाम साक्षी सर्व आधार	20 रु.
5.	अमरापुर वाणी i	20 रु.
6.	अमरापुर वाणी ii	20 रु.
7.	अमरापुर वाणी iii	20 रु.
8.	सांई टेऊँराम अमृतवाणी (दोहा–T-Series)	20 रु.
9.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी (2 कैसेट सेट)	50 रु.
10.	गुरु वन्दना	20 रु.
11.	भजन सरिता	20 रु.
12.	ब्रह्म दर्शनी (5 कैसेट सेट)	100 रु.
13.	शान्ति के दोहे आरती	20 रु.

अमरापुर समाचार दर्शन

होली महोत्सव

रंग में रंगे गुरू भक्तों का सैलाब उमड़ा

गुरू महाराज की प्रतिमाओं को कुकुम केसर तिलक लगाकर पूजा वन्दना की गई।

रंग–रंगोली होली, चारों और हुड़दग बच्चों का शोर शराबा, चंग मृदंग ढोल नगाड़े की गूंज। चारों और रंग ही रंग लाल पीले हरे रंग की रंगोली उड़ती हुई दिख रही थी।

ऐसे ही रंग रंगोली होली महोत्सव को मनाया गया श्री दरबार में महान आनन्द के साथ। 18 मार्च मंगलवार को पावन श्री अमरापुर धाम पर भी इस रंगों के त्यौहार को सन्तों व प्रेमियों के सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

श्री दरबार आज भास्कर भगवान के उदय के साथ ही पीताम्बरी लग रहा था। जैसे ही सूर्य भगवान की किरणें श्री दरबार में प्रवेश कर रही थी वैसे ही भक्तों का काफिला भी श्री दरबार में प्रवेश करने लगा।

आइये हम भी लेखनी के माध्यम से इस रंग रंगीले महोत्सव में शामिल हों। श्री दरबार में सभी भक्तगण हाथ में रंग–बिरंगे रंग लिये गुरुमुखद्वार की सीढ़ियों को चढ़ते जैसे ही सत्संग हाल में प्रवेश कर रहे थे तो सामने का नजारा देखकर उनका मन प्रफुल्लित हो उठा। सामने सत्संग मंच के मध्य में पंचकोण प्रकोष्ठ जिसमें शोभा पा रहे थे। हमारे प्यारे इष्टदेव भगवान लक्ष्मीनारायण जी, आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सदगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज और भगवान नृसिंह व प्रहलाद की प्रतिमा।

वहीं ऊपर श्री मन्दिर व लक्ष्मी नारायण मन्दिर की भी आभा आज अन्य दिनों की अपेक्षा तीव्र थी। गुरु महाराज की प्रतिमा के पीछे रंग–बिरंगी रंगोली का पर्दा लगाया गया था। वहीं नीचे समाधि स्थल पर प्रवेश करते ही पुष्पों की भीनी–भीनी सुगन्ध चित्त को मोहित कर उठी। विभिन्न प्रकार के पुष्पों से समाधि स्थल सुशोभित लग रहा था। जिसकी सजावट देखकर प्रेमियों का ह्रदय अधीर होकर छटपटाने लगा।

प्रातःकालीन प्रार्थना के स्वर के साथ आरम्भ हुआ रंग–रंगीला होली महोत्सव। सर्वप्रथम पुजारी प्रताप राय, संत हीरानन्द जी, संत दया प्रकाश जी, संत कबीर पंथ के महात्मा व सन्त मोनूराम जी ने अपने प्रवचनों में होली की महिमा का गुणानुवाद करते हुये बताया।

भजन :–

सन्तों के संग होली खेलो, पीवो प्रेम प्याला रे।
जाके पीवत होये-होये बहारी,
दिन-दिन बढ़ती जाये खुमारी,
होय मन मतिवाला रे।।

सन्त श्री ने बताया कि होली कैसे खेंले ? प्रेम व नाम रूपी रंगों से न कि इन गुलाल से। हम प्रेम व नाम रूपी रंग में ऐसे रंग जायें कि दूसरे किसी भी रंग की आवश्यकता न पड़े। जिसमें गुरु महाराज रंगे हैं। हमें भी प्रार्थना करनी चाहिये।

भजन :

ओ श्याम प्यारे चोला मेरा रंग दे, चोला मेरा रंग दे, चुनर मेरी रंग दे।
जिस रंग से श्री राधा जी रंगी हैं, राधी जी रंगी है, तेरे रंग में रंगी हैं।।
ओ श्याम...............

भजन : श्याम पिया मोहे रंग दे चुनरिया रंग दे चुनरिया...

लगभग एक घण्टे के अमृत प्रवचन के पश्चात् सदगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की प्रवचन कैसेट चलाई गई। स्वामी जी के प्रवचन श्रवण के पश्चात् सभी सन्त व प्रेमीगण गुरू महाराज की प्रतिमा के पास एकत्रित हुए। और महाराज श्री की प्रतिमाओं को गुलाल कुकुम केसर का तिलक लगाने लगे। अहो ! कितना अदभुत दृश्य था आज सम्पूर्ण श्री दरबार रंग–बिरंगे रंगों से रंगीन हो गया था। ऐसे लग रहा था। मानो बृज में सभी ग्वाल–बाल कृष्ण जी के साथ होली खेल रहे हैं।

लगभग आधे घण्टे के पश्चात् आरती हुई। और प्रसादी वितरित की गई। होली महोत्सव प्रातः 7 से 10 बजे तक रंग रंगीले वातावरण में सम्पन्न हुआ।

–**गुड़िया भरत जेठवानी**, जयपुर

प्रेम प्रकाश मण्डल समाचार दर्शन

संत शिरोमणी स्वामी ब्रह्मानन्द जी शास्त्री का सूर्यनगरी जोधपुर में भव्य स्वागत

प्रेमप्रकाश मण्डल के सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री जी ने बुधवार **5** मार्च को यहाँ चौपासनी हाउसिंग बोर्ड के **16** सेक्टर दशहरा मैदान में प्रवचनों की गंगा बहाई। स्वामी जी ने अपनी अमृतरूपी वाणी में बतलाया कि भगवान उसी से प्रसन्न होते हैं जो तन–मन से सेवा करते हैं। सेवा का सौभाग्य भक्तों को ही मिलता है। उन्होंने यह भी कहा कि सत्संग से ही शान्ति सभंव है। स्वामी जी के साथ संत राजूराम जी ने भी भजन व प्रवचनों द्वारा संगत को अमृत पिलाया। शिव भजन मण्डली ने गुरू महिमा के भजन प्रस्तुत किये। इससे पूर्व हा. बोर्ड सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल खटवानी ने जोधपुरी साफा पहनाकर सन्तों का स्वागत किया। श्री नारायणदास सावलानी व अन्य वरिष्ठ जनों ने माला पहनाकर स्वागत किया।

इससे पूर्व दि. **4** मार्च मंगलवार को पूज्य स्वामी जी ने तीसरा पुलिया हा. बोर्ड स्थित प्रेम प्रकाश मन्दिर में प्रवचनों के माध्यम से प्रेमियों को अमृत पिलाया।

–ताराचन्द (अशोक), जोधपुर से

ब्यावर में सत्संग ज्ञान वरखा

ब्यावर :- सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज एवं स्वामी हरिदासराम जी महाराज के सानिध्य में स्थापित प्रेम प्रकाश आश्रम (महिला मण्डली) दादी सती की दरबार का **5** दिवसीय वार्षिकोत्सव दि. **20** मार्च **2003** से **24** मार्च **2003** तक अमरापुर जयपुर से पधारे संत नवीन प्रेम प्रकाशी, संत शंकर प्रेम प्रकाशी, संत महेश प्रेम प्रकाशी, सेवाधारी श्री लखमीचन्द समस्त संतमण्डली का दादी सती, श्री सुन्दरदास डेटानी, नानकराम एवं प्रेमियों ने स्वागत किया।

संत नवीन प्रेम प्रकाशी एवं संत मण्डली ने सद्‌गुरु महाराज की महिमा को भजन एवं सत्संग द्वारा अपनी अमृतरूपी वाणी से उपस्थित प्रेमियों को बताया। दिनांक **24** मार्च **2003** दोपहर को ग्रन्थ साहब के पाठों का भोग लगाकर पल्लव पाकर वार्षिकोत्सव का समापन हुआ।

–मोहन शिवनानी, अजमेर से

टौंक में मासिक सत्संग की धूम

टौंक में हर महीने के अन्तिम शनिवार को रात्रि **7** से **10** बजे तक प्रेम प्रकाशी भक्तों के घरों पर भजन संध्या आयोजित की जाती है, जिसमें काफी संख्या में प्रेमी श्रद्धालु माताएं बहनें भाग लेती हैं। प्रेम प्रकाश मण्डली टौंक के अध्यक्ष डॉ. कैलाश बदलानी के सयोजकत्व में होने वाली इस भजन संध्या में प्रेमियों द्वारा सत्गुरु महाराज जी के भजन और जीवनी पर प्रकाश डाला जाता है एवं सत्गुरु टेऊँराम चालीसा गुरू प्रार्थनाष्टक और सोलह शिक्षाओं का पाठ व सत्‌नाम साक्षी का संकीर्तन किया जाता है। **22** फरवरी **2003** के दिन अहमदाबाद से पधारे श्री टीकमदास जी वेदान्ती का सत्संग हुआ। जिसका टौंक के समाचार पत्रों ने फोटो सहित विवरण दिया। प्रेम प्रकाश मण्डली द्वारा आयोजित इस मासिक सत्संग में श्रद्धालु प्रेमी भाग लेते हैं और आगे से आगे होने वाले सत्संग की मांग होने लगी है। हर कोई प्रेमी अपने घर पर जल्दी से जल्दी सत्संग करवा कर लाभान्वित होना चाहता है ये है हमारे आचार्य, सत्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज की महिमा का प्रताप।

चित्रकूट में भयी सन्तन की भीड़

चित्रकूट धाम :- श्री प्रेम प्रकाश मण्डली, प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर की चित्रकूट वानर भोज इकाई के संयोजन में **21–22** मार्च **2003** को पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज, सन्त राजूराम जी, सन्त किशोर प्रकाश जी, सन्त चरणदास जी, सन्त प्रतापराय जी, सन्त दिलीप प्रेम प्रकाशी, सन्त मोहन प्रेम प्रकाशी व दादी चेताबाई, लाजवन्ती, साध्वी ममता जी के सानिध्य में गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान के विभिन्न नगरों से आये **400** प्रेमियों ने चित्रकूट धाम में भगवान कामतानाथ की परिक्रमा, चारोंधाम, हनुमान धारा, रामदर्शनम्, वनवासी राम इत्यादि तीर्थों का दर्शन कर व रामघाट मन्दाकिनी गंगा माता के स्नान दर्शन के अतिरिक्त सन्त दर्शन सेवा सत्संग का परमानन्द प्राप्त किया।

श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल जयपुर का पुनर्गठन

जयपुर :– श्री अमरापुर धाम व सिन्धी समाज के सर्वहारा वर्ग की सेवा में सदैव तत्पर श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल जिसकी स्थापना पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के कर कमलों से हुई थी। वर्ष **2003** के लिये परम पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के संरक्षण में अमरापुर नवयुवक मण्डल की नवीन कार्यकारणी इस प्रकार घोषित की गयी है।

श्री तुलसीदास मनवानी (परामर्श दाता), श्री कुमार चन्दनानी (अध्यक्ष), श्री दीनदयाल वाधवानी (उपाध्यक्ष), श्री बी.डी. टेकवानी (सहसचिव), श्री खुशालदास व श्री धर्मदास मंघनानी (दोनों महासचिव), श्री ताराचन्द मानवानी (कोषाध्यक्ष), श्री वासदेव कलवानी (सह कोषाध्यक्ष), श्री मुरलीधर पारवानी व श्री हीरालाल चंचलानी (दोनों कार्यालय सचिव), श्री इन्द्रकुमार थावानी (संयोजक–शिक्षा समिति), श्री परमानन्द शेवानी (सह संयोजक–शिक्षा समिति), श्री लीलाराम ज्ञानानी व श्री देवानन्द चन्दनानी (दोनों भण्डारा सचिव), श्री दीनदयाल वासवानी, श्री किशन कुमार सतवानी (दोनों सांस्कृतिक सचिव), श्री मोहनदास आसवानी (प्रचार सचिव), इसके अतिरिक्त श्री भगवानदास चैनमल, श्री मनोहरलाल भागवानी, श्री सुन्दरदास कृपलानी, श्री किशनचन्द चन्दानी, श्री सुखदेव रामचन्दानी, श्री नारायण किशनानी, श्री लीलाराम रामनानी, श्री चद्रकुमार चन्दानी, श्री महादेवमल, श्री परसराम नमरानी, श्री अशोक कुमार रामनानी, श्री परमानन्द ईसरानी, श्री सुरेशकुमार राजवानी, श्री लालचन्द जी को कार्यकारिणी सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है।

अमरावती में प्रेम प्रकाश मण्डली की स्थापना

अमरावती 18 फरवरी **2003**। श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरु श्री स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन उपस्थिति में महाराज श्री की आज्ञा से प्रेम प्रकाश मण्डली अमरावती की स्थापना की गयी। प्रेमियों के अपार उत्साह के मध्य (अध्यक्ष) श्री नारायणदास तेजूराम हेमराजानी, (उपाध्यक्ष) श्री सुन्दरदास वसूमल भाराणी, (सचिव) श्री करतारलाल लक्ष्मणदास नवलाणी, (सहसचिव) श्री सर्वानन्द नचणमल पारवाणी, (कोषाध्यक्ष) श्री अमरलाल ठारूमल छाबड़ा के अतिरिक्त श्री वीरभान तलरेजा, श्री गोरधनदास गंगलाणी, श्री राजूराम छाबड़ा, श्री रामदेव गनेशाणी, श्री अनिल कुमार वसूमल भाराणी, श्री राजकुमार (शशी) रतनाणी, श्री दीवानचन्द विशनदास मंधान, श्री ओमप्रकाश (सिन्धू) पुन्शी को कार्यकारणी के लिये मनोनीत किया गया है।

ऐसे मनी काशी में महाशिवरात्रि

भूतभावन भोले बाबा की नगरी **काशी** के प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धू नगर सिगरा वाराणसी में **1** मार्च को शिवरात्री महोत्सव बड़ी ही धूमधाम से मनाई गई। उस दिन सुबह प्रातःकाल **6** बजे से प्रार्थना भजन व सत्संग की वर्षा हो रही थी। फिर सांयकाल का तो मैं वर्णन ही नहीं कर सकती हूँ। जैसे सिन्धू नगर ही अमरापुर धाम बन गया था। हमारे सिन्धू नगर के छोटे–छोटे व प्यारे बच्चे स्वामी टेऊँराम महाराज, स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज एवं स्वामी हरिदासराम महाराज जी बनकर पधारे थे। कुछ छोटे बच्चे शिव–पार्वती, शिव–लिंग व माता गंगा, लक्ष्मी जी बनकर आये थे। उसके बाद सिन्धू नगर में शिव बारात निकाली गयी। ऐसा प्रतीत हो रहा था। मानों स्वयं सद्गुरु टेऊँराम व शिव पार्वती पधारे हों। उस दिन बहुत ही आनन्द छाया हुआ था। सबकी आँखों में एक अलग ही चमक दिख रही थी। उसके साथ–साथ हमारे प्रिय महादेव दादा ने अपने भजनों से पूरे सत्संग हाल को अमरापुर धाम बना दिया। बहुत ही आनन्द आया। नाच गाना हुआ। ऐसा मनाया गया काशी में महाशिवरात्री उत्सव।

–निशा प्रेम प्रकाशी, काशी से

सीकर में स्वामी रविप्रकाश जन्मोत्सव

सीकर (राज.) स्वामी टेऊँराम आश्रम ट्रस्ट, पोलो ग्राउण्ड(प्रस्तावित आश्रम भूमि), सीकर में **27** फरवरी को परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रिय शिष्य पूज्य स्वामी रवि प्रकाश जी महाराज का जन्मोत्सव मनाया गया। पूज्य सिन्धी पंचायत सीकर के मुखी श्री किशनलाल जी के मुख्यातिथ्य में भगत तुलसीदास जी ने गुरु महिमा के संगीतमय भजनों से संगत को आनन्दित किया। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम नवयुवक मण्डली द्वारा सारी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से सम्पादित किया गया।

–महेन्द्र प्रेम प्रकाशी, सीकर से

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान द्वारा आयोजित सभी भक्तजनों के लिए

दोहा स्मरण प्रतियोगिता

नियम

- इस प्रतियोगिता में किसी भी शहर, जाति वर्ग अथवा आयु वर्ग के भक्तजन भाग ले सकते है।
- प्रतियोगिता में ''सांई टेऊँराम अमृतवाणी'' (T-Series) कैसेट अथवा दोहावली से 70 दोहे 22 जून 2003 (रविवार) तक याद करके श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त साथ लिखे प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी सुना सकते है।
- दोहे याद करने के लिये सांई टेऊँराम अमृतवाणी (T-Series) कैसेट अथवा प्रेम प्रकाश सन्देश के अप्रैल अंक में प्रकाशित के माध्यम से याद करें।
- याद करके दोहे सुनाने वाले प्रतियोगी अपना पूर्ण नाम, आयु, पता व फोन नम्बर लिखवायें।
- प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सभी को सांत्वना पुरस्कार 5 जुलाई 2003 जन्मोत्सव पर दिये जायेंगे।

सुनाने की अंतिम तिथि
22 जून, 2003 (रविवार)

परिणाम
29 जून, 2003 (रविवार)

सुनाने के स्थान

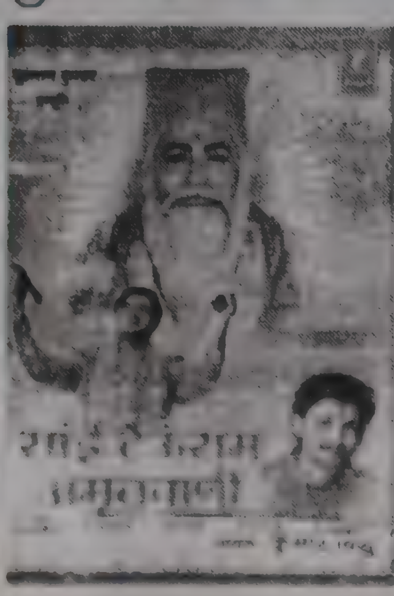
1. संत नन्दलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार
2. संत लालूराम, प्रेम प्रकाश धाम, दिल्ली
3. संत श्यामलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, कोटा
4. संत शम्भूलाल, प्रेमप्रकाश आश्रम, इन्दौर
5. संत संजय, मीरा मन्दिर, बड़ौदा
6. रमेश राजपाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, सूरत
7. मोहन शिवनानी, प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर, अजमेर
8. महेन्द्र प्रेम प्रकाशी, सीकर
9. डॉ. कैलाश बदलानी, टोंक
10. भगवन्ती दीदी, प्रेम प्रकाश आश्रम, केदार नगर, आगरा
11. सांवल प्रेमप्रकाशी, प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना
12. मीनू प्रेमप्रकाशी, प्रेम प्रकाश मन्दिर, हथीन

पुरस्कार वितरण : ५ जुलाई, २००३ (शनिवार), सद्गुरू टेऊँराम अवतरण दिवस पर

गुलशन कुमार प्रस्तुति

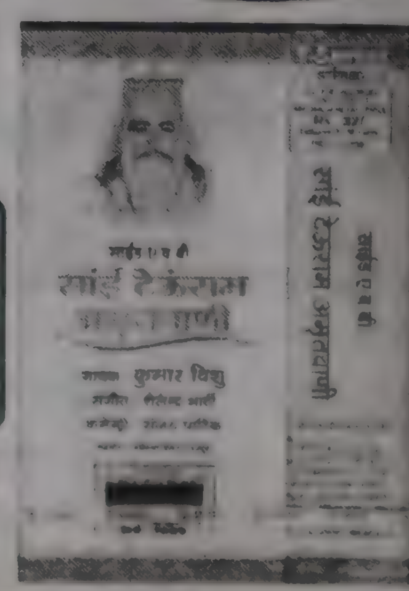
T-Series

सांई टेऊँराम अमृतवाणी कैसेट



दोहा कैसेट

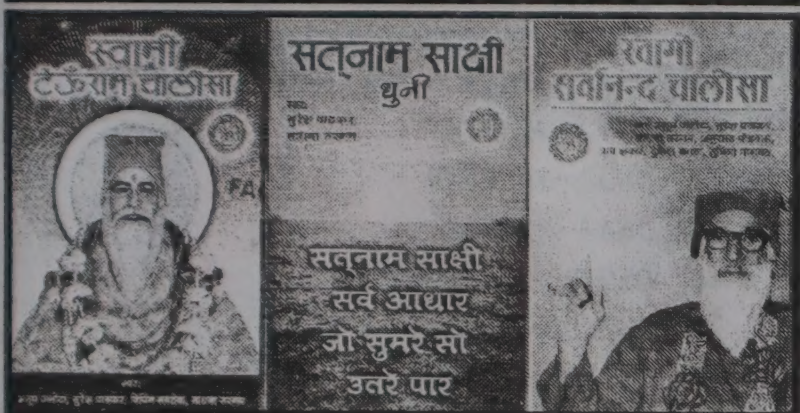
ऑडियो कैसेट	सीडी कैसेट
20/-	50/-

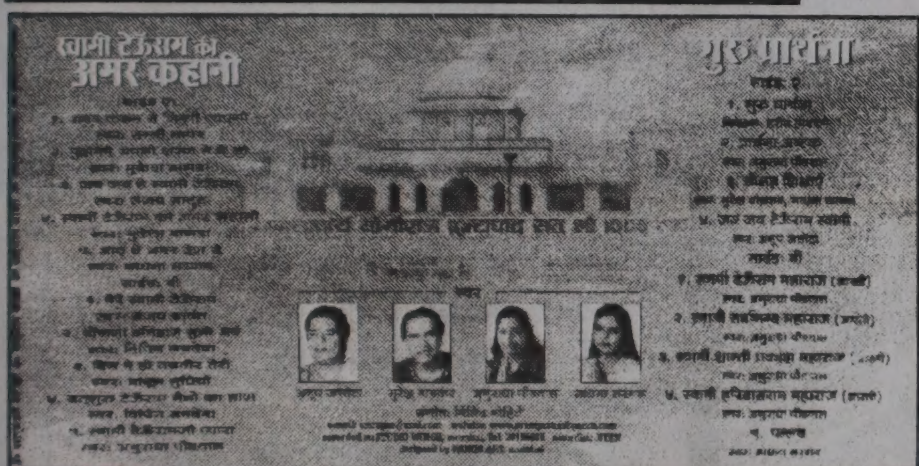


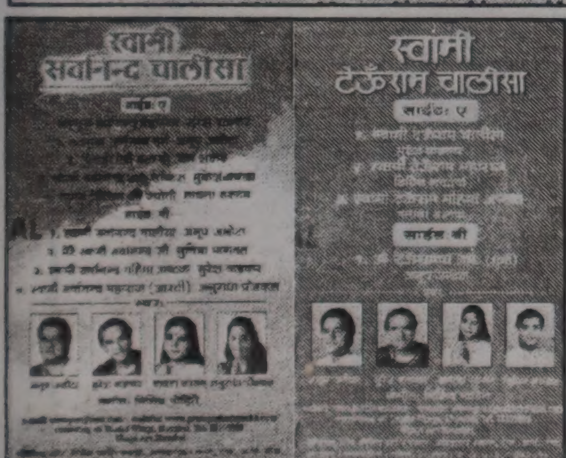
भारत वर्ष के सभी T-Series कैसेट स्टालों पर एवं प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है।

समीक्षा









अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातित गायकों के स्वर में

प्रेम प्रकाश मण्डल की 5 नई ऑडियो केसेट्स व सीडी

स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी, स्वामी टेऊँराम चालीसा, गुरु प्रार्थना, सत्नाम साक्षी धुनी व स्वामी सर्वानन्द चालीसा के शीर्षक क़ी इन केसेट्स के भजनों को संगीत से संवारा है जानेमाने संगीतकार मिलिंद मोहिने ने। **स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी** शीर्षक केसेट्स में **10** भजनों का संग्रह है जिसे स्वर से संजोया है **अनुराधा पौड़वाल, विपिन सचदेवा, साधना सरगम व बाबुल सुप्रिया** ने, **स्वामी टेऊँराम चालीसा** शीर्षक केसेट् में **4** संग्रह हैं। जिसे स्वर दिया है– **सुरेश वाडकर, विपिन सचदेवा, साधना सरगम व अनूप जलोटा** ने।

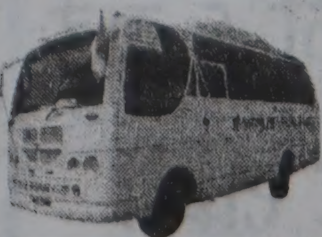
''गुरु-प्रार्थना'' शीर्षक केसेट में गुरु प्रार्थना, प्रार्थना अष्टक, सोलह शिक्षायें, स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व स्वामी हरिदासराम जी महाराज की आरतियों को बेहद सुन्दर रूप में स्वर दिया है– **अनुराधा पोड़वाल** ने तो पल्लव को संवारा है **साधना सरगम** ने। केसेट **सत्नाम साक्षी धुनी** शीर्षक में ''सत्नाम साक्षी सर्व आधार जो सुमरे सो उतरे पार'' को सुन्दर स्वर दिया है **सुदेश वाडकर व साधना सरगम** ने।

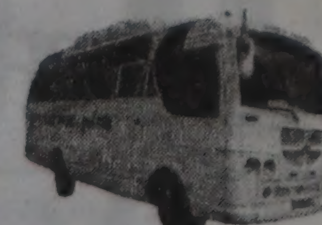
स्वामी सर्वानन्द चालीसा में कुल नौ रचनाओं का संकलन है जिन्हें स्वर से संवारा है **अनूप जलोटा, सुरेश वाडकर, अनुराधा पौड़वाल, साधना सरगम, राम शंकर, मुकेश बांगडा व सुचित्रा भगवत** ने।

पाँचों ही केसेट्स में जो विशेष बात है कि इनकी रिकॉर्डिंग मुम्बई के विख्यात स्टूडियो में की गई हैं वहीं इन्हें स्वर देने वाले गायक अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं। पाँचों केसेट्स में संग्रहित भजनों के बोल स्वर व संगीत सुनने वालों को निश्चित रूप से कर्ण प्रिय लगेगें।

विमोचन के पश्चात् आडियो केसेट्स सी.डी. प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान क अतिरिक्त सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में उपलब्ध रहेगी।

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित **82** वें चैत्र मेले के पावन पर्व पर पाँच नई केसेट्स का विमोचन श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सदगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के कर कमलों से होगा।





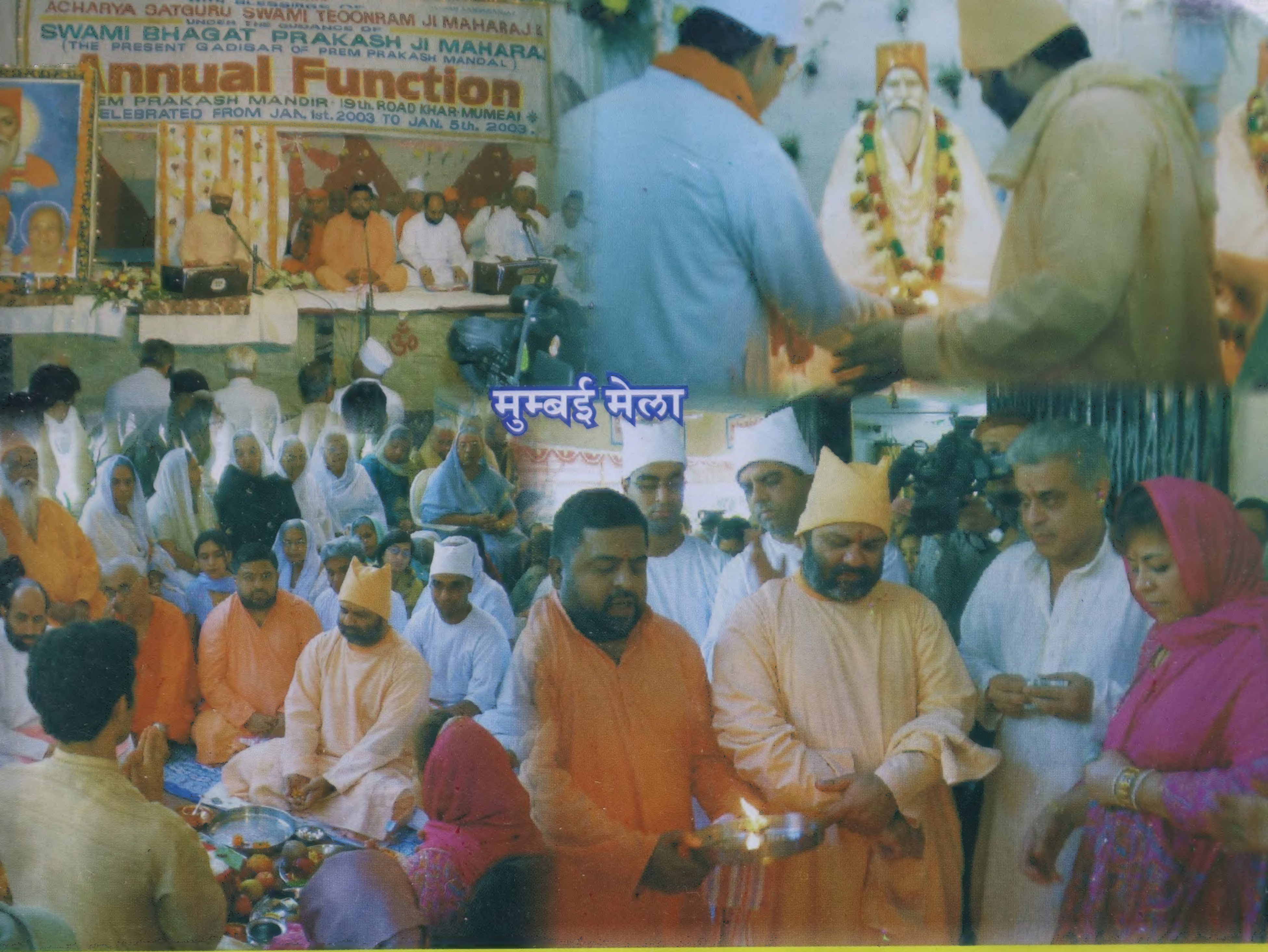
श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

7 अप्रेल से 22 अप्रेल	2003	तक	जयपुर (चैत्र मेला)	☎ 0141–2372423, 2372424
23 अप्रेल	2003		देवास	☎ 098290–14850
24 अप्रेल से 29 अप्रेल	2003	तक	इन्दौर (स्वामी मुरलीधर वर्सी)	☎ 0731–2468140, 2300140
30 अप्रेल से 1 मई	2003	तक	रतलाम	☎ 07412–240229
2 मई से 8 मई	2003	तक	दिल्ली	☎ 011-23969774, 23942126
9 मई से 10 मई	2003	तक	लखनऊ	☎ 0522–2211901, 2213819
11 मई से 16 मई	2003	तक	कानपुर (सद्‌गुरु हरिदासराम जयन्ती)	☎ 0512–2215747
17 मई से 19 मई	2003	तक	इलाहाबाद	☎ 0532–2655214
19 मई से 21 मई	2003	तक	वाराणसी, बनारस	☎ 0542–225585
22 मई से 23 मई	2003	तक	फैजाबाद	☎ 05278–246159
24 मई	2003	तक	बस्ती (उ.प्र.)	☎ 098290–14850
25 मई से 26 मई	2003	तक	गोरखपुर	☎ 098290–14850
27 मई	2003	तक	बहराईच	☎ 098290–14850
28 मई	2003	तक	यात्रा कानपुर से हा. जोध. एक्स. में	☎ 098290–14850
29 मई से 1 जून	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
2 जून से 5 जून	2003	तक	आदर्श नगर, अजमेर	☎ 0145–2441850, 098290–14850
6 जून	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
7 जून से 11 जून	2003	तक	खैरथल	☎ 01460–2441850, 098290–14850
12 जून से 14 जून	2003	तक	सीकर	☎ 098290–14850
15 जून से 19 जून	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
20 जून	2003	तक	यात्रा	☎ 098290–14850
21 जून से 24 जून	2003	तक	मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579

तीज त्यौहार

15	अप्रैल	2003	मंगलवार	चैत्र मेला आरम्भ जयपुर में
16	अप्रैल	2003	बुधवार	पूर्णिमा-सत्यनारायण व्रत, श्री हनुमान जयंती
19	अप्रैल	2003	शनिवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चैत्र मेला समापन
27	अप्रैल	2003	रविवार	वरुथिनी एकादशी व्रत
1	मई	2003	गुरूवार	अमावस्या
3	मई	2003	शनिवार	चन्द्रदर्शन
4	मई	2003	रविवार	अक्षय तृतीया (अखण ट्रीज)
7	मई	2003	बुधवार	चौथ, सद्‌गुरू टेऊँराम जन्मदिन (मासिक)
12	मई	2003	सोमवार	श्री मोहिनी एकादशी व्रत, सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जन्मोत्सव शुरू
15	मई	2003	गुरूवार	वृष संक्रान्ति, श्री सत्यनारायण-पूर्णिमा व्रत
16	मई	2003	शुक्रवार	श्री सत्यनारायण-पूर्णिमा (स्नान दान की), सद्‌गुरु हरिदासराम प्राकट्य दिवस, जन्मोत्सव समारोह समापन
19	मई	2003	सोमवार	श्री गणेश चौथ व्रत
26	मई	2003	सोमवार	श्री अचला एकादशी व्रत



मुम्बई मेला



यात्रा दर्शन

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2003-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा. शा. रजि. - 29/18/81



सूचन

समस्त सम्मानीय ... सूचनार्थ उनके प्रेषण ... सदस्यता क्रमांक रसी... लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर ... सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पह... अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को ... लेना चाहिए।

व्यवस्था...

सदस्यता क्रं. 2-15060-7/2004

श्री किशनचंद बूटानी

ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,

अजमेर, राजस्थान





श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया । सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 23274... श्रीचंद पंजवानी, फोन : 2454183 आवरण साज-सज्जा एवं मुद्रण : गणपति, जयपुर फोन नं. : 0141-2207612, मो. 9414072251